रियाकारी की तबाहकारियों और इलाज का बयान

रियाकारी

Riyakari (Hindi)

- रियाकारों का अन्जाम
- रियाकारी का इल्म सीखना फ़र्ज़ है ?
- रियाकारी की 22 तबाहकारियां
- किसी को रियाकार कहना कैसा ?
- रियाकारी कैसे होती है ?
- अपनी नेकियों का इज़्हार करना कैसा ?
- अपनी ता'रीफ़ पर ख़ुश होना कैसा ?
- रियाकारी के ख़ौफ़ से इबादत छोड़ना कैसा ?
- रियाकारी की अ़लामतें
- रियाकारी के 10 इ़लाज
- अच्छी निय्यत के 7 फ़ज़ाइल
- 21 हिकायात

मक-त-बतुल मदीना®
मक्तबतुल मदीना
मिल्लेक्ट्रेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा अहमदआबाद-1. गुजरात, इन्डिया
Ph:91-79-25391168 E-mail:maktabahind@gmail.com,
www.dawateislami.net

المدينة العلمية

रियाकारी की तबाह कारियों और इलाज का बयान

रियाकारी

: पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (शो'बए इस्लाही कुतुब)
(दा'वते इस्लामी)

: नाशिर :
मक-त-बतुल मदीना अहमद आबाद

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم

नाम किताब : **रियाकारी**

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (शो'बए इस्लाही़ कुतुब)

सिने त़बाअ़त : सफ़रुल मुज़फ़्फ़र सि.1431 हि.

नाशिर : **मक-त-बतुल मदीना अह़मद आबाद**

तस्दीक़ नामा

तारीख़ : 2 जु़ल हि़ज्जतुल ह़राम 1429 हि. ह़वाला :. 161

الحمد للّٰہ رب العلمین والصلوٰۃ والسلام علٰی سید المرسلین وعلی الہ واصحا بہ اجمعین

तस्दीक़ की जाती है कि किताब

"रियाकारी"

(मत़्बूआ़ मक-त-बतुल मदीना) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़रे सानी की कोशिश की गई है। मजलिस ने इसे अ़क़ाइद, कुफ़्रिया इ़बारात, अख़्लाक़ियात, फ़िक़्ही मसाइल और अ़-रबी इ़बारात वग़ैरह के ह़वाले से मक़्दूर भर मुला-ह़ज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़-लत़ियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं।

मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल (दा'वते इस्लामी)

1-12-2008

E-mail : ilmiya26@yahoo.com

maktabahind@gmail.com

www.dawateislami.net

म-दनी इल्तिजा: किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ، وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِالْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ، بِسْمِ اللّٰهِالرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم

''इख़्लास की ब-र-कतें'' के 13 हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की ''13 निय्यतें''

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** ''نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِنْ عَمَلِهٖ'' मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।''

(अल मो'जमुल कबीर लित्त़-बरानी, अल ह़दीस : 5942, जि. 6, स. 185)

दो म-दनी फूल : (1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़-मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादह, उतना सवाब भी ज़ियादह।

(1) हर बार ह़म्दो (2) सलात और (3) तअ़व्वुज़ो (4) तस्मिय्या से आग़ाज़ करूंगा। (इसी सफ़ह़े पर ऊपर दी हुई दो अ़-रबी इबारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा)। (5) ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और (6) क़िब्ला रू मुत़ा-लआ़ करूंगा। (7) क़ुर्आनी आयात और (8) अह़ादीसे मुबा-रका की ज़ियारत करूंगा (9) जहां जहां ''अल्लाह'' का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और (10) जहां जहां ''सरकार'' का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा। (11) शर-ई मसाइल सीखूंगा। (12) अगर कोई बात समझ में न आई तो उ़-लमा से पूछ लूंगा (13) किताबत वग़ैरह में शर-ई ग़-लत़ी मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्त़लअ़ करूंगा। (मुसन्निफ़ या नाशिरीन वग़ैरह को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ط وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِالْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

अज़ : बानिये दा'वते इस्लामी, आ़शिक़े आ'ला ह़ज़रत, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

الحمد لله على اِحْسَانِهٖ وَ بِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صلى الله تعالٰى عليه وسلم

तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "**दा'वते इस्लामी**" नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्ने ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मु-तअ़द्दद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में एक मजलिस "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" भी है जो दा'वते इस्लामी के उ़-लमा व मुफ़्तियाने किराम كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تعالٰى पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल छ शो'बे हैं :

(1) शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه (2) शो'बए दर्सी कुतुब

(3) शो'बए इस्लाह़ी कुतुब (4) शो'बए तराजिमे कुतुब

(5) शो'बए तफ़्तीशे कुतुब (6) शो'बए तख़्रीज

"**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये

बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो ब-र-कत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी अश्शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़स्रे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सह्ल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती म-दनी काम में हर मुम्किन तआ़वुन फ़रमाएं और मजलिस की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ा-लआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **''दा'वते इस्लामी''** की तमाम मजालिस ब शुमूल **''अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या''** को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़-मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुंबदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में जगह नसीब फ़रमाए।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الاٰمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

र-मज़ानुल मुबारक 1425 हि.

दिल की इस्लाह़ की ज़रूरत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़–ज़मत निशान है : ‘‘आगाह रहो कि जिस्म में एक लोथड़ा गोश्त का है जब वोह **संवरे** तो पूरा जिस्म **संवर** जाता है, अगर वोह **बिगड़े** तो पूरा जिस्म **बिगड़** जाता है, सुनो ! वोह दिल है ।’’ (सहीहुल बुख़ारी, किताबुल ईमान, باب من استبراء لدينه, अल ह़दीस : 52, जि. 1, स. 33)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : या’नी दिल बादशाह है जिस्म इस की रिआ़या, जैसे बादशाह के दुरुस्त हो जाने से तमाम मुल्क ठीक हो जाता है, ऐसे ही दिल संभल जाने से तमाम जिस्म ठीक हो जाता है, दिल इरादा करता है जिस्म उस पर अ़मल की कोशिश, इस लिये सूफ़ियाए किराम दिल की इस्लाह़ पर बहुत ज़ोर देते हैं ।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 4, स. 231)

ह़ुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی लिखते हैं : तुम पर दिल की ह़िफ़ाज़त, इस की इस्लाह़ और इसे दुरुस्त रखने की कोशिश करना भी ज़रूरी है क्यूं कि दिल का मुआ़–मला बाक़ी आ’ज़ा से ज़ियादा ख़त़रनाक है, और इस का असर बाक़ी आ’ज़ा से ज़ियादा है । (मज़ीद लिखते हैं) ज़ाहिरी आ’माल का बात़िनी औसाफ़ के साथ एक ख़ास तअ़ल्लुक़ है । अगर बात़िन ख़राब हो तो ज़ाहिरी आ’माल भी ख़राब होंगे और अगर बात़िन ह़सद, रिया और तकब्बुर वग़ैरा उ़यूब से पाक हो तो ज़ाहिरी आ’माल भी दुरुस्त होते हैं । इसी त़रह़ अगर कोई अपने आ’माले सालिह़ा को रब तआ़ला का फ़ज़्लो करम समझे तो ठीक है और अगर उन्हें अपना ज़ाती कमाल तसव्वुर करे तो ख़ुद सिताई के बाइ़स वोह आ’माल बरबाद हो जाते हैं, इस लिये जब तक बात़िनी उमूर का ज़ाहिरी आ’माल से तअ़ल्लुक़, बात़िनी औसाफ़ की ज़ाहिरी आ’माल में तासीर और औसाफ़े बात़िनी के ज़रीए ज़ाहिरी आ’माल की ह़िफ़ाज़त की कैफ़िय्यत वग़ैरा का पता न चले, ज़ाहिरी आ’माल भी

दुरुस्त नहीं हो सकते। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 13,67)

बातिनी गुनाहों में से एक गुनाह **रियाकारी** भी है। येह किताब इसी मौज़ूअ़ पर है। **''रियाकारी''** को मुरत्तब करने के लिये एह़याउल उ़लूम, ह़दीक़ए नदिय्या, ज़वाजिर, फ़तावा र-ज़विय्या, बहारे शरीअ़त और फ़ैज़ाने सुन्नत वग़ैरहा से मदद ली गई है। इस किताब में रियाकारी की मा'लूमात को क़दरे आसान अन्दाज़ में उ़न्वानात के तह़्त ह़वाला जात के साथ पेश करने की कोशिश की गई है ताकि कम इ़ल्म भी इस से फ़ाएदा ह़ासिल कर सकें। फिर भी इ़ल्म बहुत मुश्किल चीज़ है येह मुम्किन नहीं कि इ़ल्मी दुश्वारियां बिल्कुल जाती रहें, लिहाज़ा जो बात समझ में न आए, समझने के लिये उ़-लमाए किराम دامت فیوضھم से रुजूअ़ कीजिये। रियाकारी से नजात का जज़्बा पाने के लिये शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के केसेट बयानात म-सलन ''नेकियां छुपाओ, इख़्लास, क़बूलिय्यत की चाबी'', शहज़ादए अमीरे अहले सुन्नत अलह़ाज मौलाना अबू उसैद अह़मद उ़बैद रज़ा अल अ़त्तारिय्युल म-दनी مدظلہ العالی का बयान ''इख़्लास कैसे अपनाएं ?'' और निगराने शूरा (दा'वते इस्लामी) ह़ाजी मुह़म्मद इमरान अ़त्तारी مدظلہ العالی का VCD बयान ''रियाकारी और उस का इ़लाज'' सुनना भी बेह़द मुफ़ीद है।

इस अहम्म किताब को न सिर्फ़ ख़ुद पढ़िये बल्कि दूसरे मुसल्मानों को भी पढ़ने की तरग़ीब दे कर नेकी की दा'वत को आ़म करने का सवाब कमाइये। अल्लाह तआ़ला से दुआ़ है कि हमें **''अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश''** करने के लिये म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल और म-दनी क़ाफ़िलों का मुसाफ़िर बनते रहने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

शो'बए इस्लाही कुतुब (मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या)
(दा'वते इस्लामी)

कुर्बे मुस्त़फ़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

फ़ेहरिस

उ़न्वान	सफ़हा नम्बर	उ़न्वान	सफ़हा नम्बर
रियाकारों का अन्जाम	1	जन्नत की ख़ुश्बू भी नहीं पाएगा	18
इख़्लास की भीक मांग लीजिये	1	अपने रब की तौहीन करने वाला मुजरिम	19
ऐ इख़्लास तू कहां है?	3	ज़मीनो आस्मान में मल्ऊ़न	19
ह़क़ीक़ी कामयाबी	4	रियाकारों का ठिकाना	20
रियाकारी का इ़ल्म सीखना फ़र्ज़ है	6	अल्लाह तआ़ला के ज़िम्मए करम से बरी	20
रियाकारी किसे कहते हैं?	6	हो जाने वाला	20
रियाकारी के द-रजात	7	अपने रब عزوجل को नाराज़ करने वाला	
रियाकारी से बचो	7	हुसूले माल केलिये इ़ल्म सीखने वाले का अन्जाम	21
रियाकारी शिर्के अस्ग़र है	7	बरोज़े क़ियामत नदामत का सामना	21
म-दनी फूल	8	आ'माल रद हो जाएंगे	21
रियाकार की नादानी	11	रियाकार क़ारी का अन्जाम	21
रियाकारी की 22 तबाह कारियां	12	अपना अज्र उसी से मांग जिस के लिये	22
अ़मल ज़ाएअ़ हो जाता है	12	अ़मल किया था	
शैत़ान के दोस्त	12	रियाकार का आख़िरत में कोई ह़िस्सा नहीं	23
जहन्नम की वादी रियाकारों का ठिकाना होगी	13	हमारा क्या बनेगा?	24
आ'माल बरबाद हो जाएंगे	13	जहन्नम का हलका तरीन अ़ज़ाब	24
रियाकारों की ह़सरत	14	हमारा नाज़ुक वुजूद	25
अ़मल क़बूल नहीं होता	14	किसी को रियाकार कहना कैसा?	25
रियाकार के चार नाम	15	रियाकारी के 3 शर-ई अह़काम	26
जहन्नम भी पनाह मांगता है	16	एक साल तक रोने से महरूम रहे	27
रुस्वाई का अ़ज़ाब	17	तजस्सुस न कीजिये	28
रियाकार पर जन्नत ह़राम है	17	अय रियाकार!	28

उ़न्वान	सफ़हा नम्बर	उ़न्वान	सफ़हा नम्बर
ऐ रियाकार !	29	अच्छों की नक़्ल भी अच्छी होती है	57
रियाकारी कैसे होती है ?	29	दौराने इ़बादत दिल में रियाकारी आए तो ?	58
कलाम के ज़रीए रियाकारी की 15 सूरतें	30	अपनी नेकियों का इ़ज़्हार करना कैसा ?	61
फ़े'ल के ज़रीए रियाकारी की 15 सूरतें	33	बतौ़रे तरग़ीब नेकी ज़ाहिर करने की 2 शराइ़त	62
दूसरों की मौजूदगी में कम खाने का त़रीक़ा	35	मुख़्लिसीन का हिस्सा	63
दो शे'र हुसूले ब-र-क़त के लिये	37	नफ़्सो शैत़ान के धोके को पहचानने का त़रीक़ा	64
रियाकारी किन चीज़ों में होती है ?	39	नेकियां छुपाइये	65
ईमान में रिया	40	रियाकारी से बचना अ़मल करने से ज़ियादा मुश्किल है	65
दुन्यवी मुआ़-मलात में रिया	41	तह़दीसे ने'मत किसे कहते हैं ?	66
सरकारे मदीना ﷺ ने गेसूए मुबारक संवारे	42	101 बार दिल पर ग़ौर कर लीजिये	67
इ़बादात में रियाकारी	44	चूंटी की चाल से भी पोशीदा रिया	68
अदाएगी में रियाकारी	44	रियाए ख़फ़ी की 4 अक़्साम	69
औसाफ़ में रियाकारी	46	क्या तुम्हारी ह़ाजतें पूरी नहीं की जाती थीं ?	71
शर-ई ह़ुक्म	47	कहीं नुक़्सान न हो जाए	72
रियाए ख़ालिस और मख़्लूत़	47	अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुख़्लिस बन्दे	74
ख़िदमते दीन पर उजरत लेना कैसा ?	49	अपनी ता'रीफ़ पर ख़ुश होना कैसा ?	75
क्या उजरत लेने वाले को सवाब मिलेगा ?	49	ख़ौफ़े ख़ुदा से लरज़ जाइये !	79
उजरत लेने वाले के लिये सवाब की सूरत	50	रियाकारी की तरबिय्यत गाह	80
सवाब ह़ासिल करने का आसान त़रीक़ा	51	गुनाहों से बचने में भी रियाकारी	81
दीन को दुन्या कमाने का ज़रीआ़ न बनाइये	53	इ़ख़्लास की पहचान	82
दीन के ज़रीए दुन्या के त़लबगार का अन्जाम	54	रियाकारी के ख़ौफ़ से इ़बादत छोड़ना कैसा ?	83
इ़बादत से पहले निय्यत दुरुस्त कर लीजिये	54	रियाकारी का वस्वसा आना गुनाह नहीं है	83
निय्यत दुरुस्त होने का इन्तिज़ार	55	शैत़ान को नाकाम व ना मुराद कर दीजिये	84
एक वस्वसा और उस का जवाब	56	क्या नेकियां छोड़ कर शैत़ान से बच जाएंगे ?	86

उ़न्वान	सफ़ह़ा नम्बर	उ़न्वान	सफ़ह़ा नम्बर
रिया के ख़ौफ़ से नेक अ़मल छोड़ देने		दुन्या की मह़ब्बत से पीछा छुड़ा लीजिये	99
वाले की मिसाल	87	(चौथा इ़लाज) इख़्लास अपना लीजिये	100
लोग क्या कहेंगे ?	87	इख़्लास के 6 फ़ज़ाइल	101
रियाकार की अ़लामतें	88	मुख़्लिस मोमिन की मिसाल	105
कहीं हम रियाकार तो नहीं ?	89	मुख़्लिस कौन ?	106
रिया से तौबा कर लीजिये	89	अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा सब ने'मतों से	
रियाकारी से तौबा की ब-र-क्त	89	बढ़ कर है	107
मरज़े रिया का इ़लाज कीजिये	90	(पांचवां इ़लाज) निय्यत की हिफ़्ज़त कीजिये	108
मायूस न हों	90	निय्यत किसे कहते हैं ?	109
मुश्किल से न घबराइये	91	जितनी निय्यतें ज़ियादा उतना सवाब भी ज़ियादा	109
रियाकारी के 10 इ़लाज	92	सदक़ा देने से पहले निय्यत पर ग़ौर	110
(पहला इ़लाज) अल्लाह तआ़ला से		हर काम से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लीजिये	110
मदद त़लब कीजिये	92	अच्छी निय्यत के 7 फ़ज़ाइल	111
(दूसरा इ़लाज) रियाकारी के नुक़्सानात		जैसी निय्यत वैसा सिला	112
पेशे नज़र रखिये	92	मार खाना निय्यते सालिह़ा से ज़ियादा आसान है	113
दिखावे के लिये अ़मल करने वाले की मिसाल	94	जिहाद का सवाब	113
(तीसरा इ़लाज) अस्बाब का ख़ातिमा कीजिये	94	खुलूसे निय्यत	114
ता'रीफ़ की ख़्वाहिश पर कैसे क़ाबू पाएं ?	95	नेक आ'माल की निय्यत कर लिया करो	116
हुब्बे जाह के नुक़्सानात पर मुश्तमिल		(छटा इ़लाज) दौराने इ़बादत शैत़ानी	
5 रिवायात	95	वस्वसों से बचिये	116
यूं फ़िक्रे मदीना कीजिये	96	(सातवां इ़लाज) तन्हाई हो या हुजूम	
झूटी ता'रीफ़ को पसन्द करना ह़राम है	97	यक्सां अ़मल कीजिये	119
ता'रीफ़ को पसन्द करना कब मुस्तह़ब है ?	97	(आठवां इ़लाज) नेकियां छुपाइये	120
लोगों की मज़म्मत का ख़ौफ़ किस त़रह़ दूर करें ?	98	सब से मह़फ़ूज़ मख़्लूक़	121
मालो दौलत की ह़िर्स से नजात	99	पोशीदा अ़मल अफ़्ज़ल है	122

उ़न्वान	सफ़हा नम्बर	उ़न्वान	सफ़हा नम्बर
ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा का इर्शाद	122	मुबल्लिग़ को बरबाद करने वाले चन्द	
अस्लाफ़ के अक़्वाल	123	शैत़ानी वार	147
ह़िक़ायत	124	दुखती रग पर हाथ पड़ गया	148
रोज़े के बारे में न पूछो	124	दिल का चोर पकड़ा गया	149
पूछने पर रोज़ेदार अपने रोज़े के		सरापा आ़जिज़ी का नुमूना बन जाएं	150
बारे में बता दे	124	कोई बुलाता तो बुज़ुर्गाने दीन बिला	
बद तरीन रियाकार	125	तकल्लुफ़ बयान के लिये पहुंच जाते	150
(नवां इ़लाज) अच्छी सोह़बत इख़्तियार कीजिये	126	कपड़ा ख़ुदा के عَزَّوَجَلَّ के लिये पहना है	151
दा'वते इस्लामी का म-दनी माह़ौल	127	नेकी का बदला	151
اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं बदल गया	128	सवाब ही काफ़ी है	152
म-दनी इन्आ़मात	130	गुनाहों की नुहूसत	153
आ़मिलीने म-दनी इन्आ़मात के लिये बिशारते उ़ज़्मा	131	अच्छी निय्यत का फल और बुरी निय्यत का वबाल	156
(दसवां इ़लाज) अवरादो वज़ाइफ़ का		गुफ़्त-गू का जाएज़ा	158
मा'मूल बना लीजिये	131	मेरा क़र्ज़ किस ने अदा किया ?	158
इ़लाज के बा वुजूद इफ़ाक़ा न हो तो ?	133	मेरा नाम ज़ाहिर न फ़रमाएं	160
ख़ुलासए कलाम	133	बा'दे विसाल सख़ावत का पता चला	161
21 ह़िक़ायात	136	मैं किस के लिये दिखावा करूंगा ?	161
इख़्लास का इन्आ़म	136	यहां ता'वीज़ नहीं बिकता	162
मैं अपनी निय्यत को ह़ाज़िर नहीं पाता	138	मैं इ़ल्म नहीं बेचता	163
मुसल्सल चालीस साल तक रोज़े	140	अ़क़ीदत नहीं बेच सकता	164
नेकियां छुपाने वाला ग़ुलाम	140	दुआ़	164
अल्लाह तआ़ला के लिये मुआ़फ़ किया	142	मआख़ज़े मराजेअ़	165
मां का ह़ुक्म नफ़्स पर क्यूं गिरां गुज़रा ?	142		
पहली सफ़ छूट जाने पर परेशानी क्यूं ?	143		
इख़्लास फ़रोश	144		

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ؕ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ؕ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

कुर्बे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने तक़र्रुब निशान है : ''اَوْلَی النَّاسِ بِی یَوْمَ الْقِیَامَۃِ اَکْثَرُھُمْ عَلَیَّ صَلَاۃً या'नी ब रोज़े क़ियामत लोगों में मेरे क़रीब तर वोह होगा, जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे।''

(जामेइ़त्तिरमिज़ी, أبواب الوتر،باب ماجاء في فضل الصلاۃالنبی صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَسَلَّم अल ह़दीस:484, जि.2, स.27)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

रियाकारों का अन्जाम

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **नबिय्ये मुकर्रम,** नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''क़ियामत के दिन सब से पहले एक शहीद का फ़ैसला होगा[1] जब उसे लाया जाएगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे अपनी ने'मतें याद दिलाएगा तो वोह इन ने'मतों का इक़रार करेगा फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा: ''तू ने इन ने'मतों के बदले में क्या अ़मल किया ?'' वोह अ़र्ज़ करेगा: ''मैं ने तेरी राह में जिहाद किया यहां तक कि शहीद हो गया।'' **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा: ''तू झूटा

1. : या'नी रियाकारों में से पहले रियाकार शहीद का फ़ैसला होगा लिहाज़ा येह ह़दीस इस के ख़िलाफ़ नहीं कि पहले ह़िसाब नमाज़ का होगा या पहले ज़ुल्मन क़त्ल का ह़िसाब होगा। इ़बादात में नमाज़ का, मुआ़मलात में क़त्ल का, रिया में ऐसे शहीद का फ़ैसला पहले है। (मिर्आतुल मनाजीह़, जि.1, स.191)

है तू ने जिहाद इस लिये किया था कि तुझे बहादुर कहा जाए और वोह तुझे केह लिया गया[1], फिर इस के बारे में जहन्नम में जाने का हुक्म देगा तो उसे मुंह के बल घसीट कर जहन्नम में डाल दिया जाएगा।[2]

फिर उस शख़्स को लाया जाएगा जिस ने इल्म सीखा, सिखाया और कुरआने करीम पढ़ा, वोह आएगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे भी अपनी ने'मतें याद दिलाएगा तो वोह भी उन ने'मतों का इक़रार करेगा, फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से दरयाफ़्त फ़रमाएगा: "तू ने इन ने'मतों के बदले में क्या किया ?" वोह अ़र्ज़ करेगा कि "मैं ने इल्म सीखा और सिखाया और तेरे लिये कुरआने करीम पढ़ा।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा: "तू झूटा है तू ने इल्म इस लिये सीखा कि तुझे आ़लिम कहा जाए और कुरआने करीम इस लिये पढ़ा कि तुझे क़ारी कहा जाए और वोह तुझे कह लिया गया।"[3] फिर उसे भी जहन्नम में डालने का हुक्म होगा तो उसे मुंह के बल घसीट कर जहन्नम में डाल दिया जाएगा, फिर एक मालदार शख़्स को लाया जाएगा जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने कसरत से माल अ़ता फ़रमाया था, उसे ला कर ने'मतें याद दिलाई जाएंगी वोह भी इन ने'मतों का इक़रार करेगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा: "तू ने इन ने'मतों के बदले क्या किया ?"

1.: या'नी तेरे जिहाद और शहादत का इ़वज़ येह हो गया कि लोगों ने तेरी वाह वाह कर दी क्यूंकि तू ने इसी निय्यत से जिहाद किया था न कि ख़िदमते इस्लाम के लिये (मिर्आतुल मनाजीह, जि.1, स.191) 2.: या'नी निहायत ज़िल्लत के साथ मरे हुए कुत्ते की त़रह़ टांग से घसीट कर कनारए जहन्नम से नीचे फेंका जाएगा। जहन्नम की गहराई आस्मानो ज़मीन के फ़ासिले से करोड़ों गुना ज़ियादा है। **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की पनाह ! (मिर्आतुल मनाजीह, जि.1, स.191) 3.: तेरी येह सारी मेह़नत ख़िदमते दीन के लिये न थी बल्कि इल्म के ज़रीए इ़ज़्ज़त और माल कमाने की थी वोह तुझे ह़ासिल हो गए (अब) हम से क्या चाहता है ? इसी ह़दीस को देखते हुए बा'ज़ उ़-लमा ने अपनी किताबों में अपना **नाम** भी न लिखा और जिन्हों ने लिखा है वोह नामवरी के लिये नहीं बल्कि लोगों की दुआ़ ह़ासिल करने के लिये लिखा है। (मिर्आतुल मनाजीह, जि.1, स.191)

वोह अ़र्ज़ करेगा: "मैं ने तेरी राह में जहां ज़रूरत पड़ी वहां **ख़र्च** किया।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा: "तू झूटा है तू ने ऐसा इस लिये किया था ताकि तुझे **सख़ी** कहा जाए और वोह कह लिया गया।" फिर उस के बारे में जहन्नम का हुक्म होगा, चुनान्चे उसे भी मुंह के बल घसीट कर **जहन्नम** में डाल दिया जाएगा।" (अल अमान वल ह़फ़ीज़) (सह़ीह़ मुस्लिम, كتاب الامارة، باب من قاتل للرياء.....الخ अल ह़दीस:195, स.1055)

ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीस के तह़त लिखते हैं: मा'लूम हुवा कि जैसे **इख़्लास** वाली नेकी **जन्नत** मिलने का ज़रीआ़ है ऐसी ही रिया वाली नेकी **जहन्नम** और ज़िल्लत ह़ासिल होने का सबब। यहां रियाकार शहीद, आ़लिम और सख़ी ही का ज़िक्र हुवा, इस लिये कि उन्हों ने **बेहतरीन अ़मल** किये थे जब येह अ़मल रिया से **बरबाद** हो गए तो दीगर आ'माल का क्या पूछना! **रिया के ह़ज्जो ज़कात और नमाज़ का भी येही ह़ाल है।**

(मिर्आतुल मनाजीह़, जि.7, स.193)

इख़्लास की भीक मांग लीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! देखा आप ने **रियाकारी** की बात़िनी बीमारी ने इन बद नसीबों को कहीं का न छोड़ा! ग़ौर तो कीजिये कि **जिहाद** जैसा अ़मले ख़ैर, **शहादत** जैसी जलीलुल क़द्र ने'मत, **ता'लीमो तअ़ल्लुम** जैसा पाकीज़ा मश्ग़ला, **स-दक़ा व ख़ैरात** जैसा नफ़ीस काम मिट्टी हो गया क्यूंकि करने वाले की निय्यत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुश्नूदी के बजाए दुन्या की नामवरी और शोहरत का ह़ुसूल था।

अपने अहलो इ़याल को रोता छोड़ कर मैदाने जंग में अपनी जान क़ुरबान कर देने वाला भी जन्नत की **ने'मतों** को न पा सका क्यूंकि उस के दिल में बहादुर कहलवाने का शौक़ था, मालदार अपनी महबूब शय या'नी **माल** ख़र्च कर के भी ख़सारे में रहा क्यूंकि उसे सख़ी पुकारे जाने की तमन्ना थी, और रात दिन एक कर के **इल्मो क़िराअत** सीखने वाले आ़लिमो क़ारी के हाथ भी कुछ न आया, क्यूंकि उसे शोहरत की त़लब थी । अफ़्सोस ! इन की कोशिशें बेकार गईं और अपनी **वाह वाह** करवाने की **फ़ासिद निय्यत** ने इन्हें जन्नती अ़मल करने के बा वुजूद जहन्नम की आग में जला दिया । **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बे नियाज़ी से ल-रज़ जाइये और उस के हुज़ूर गिड़गिड़ा कर **इख़्लास** की भीक मांग लीजिये।

मेरा हर अ़मल बस तेरे वासित़े हो
कर इख़्लास ऐसा अ़त़ा या इलाही عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ऐ इख़्लास तू कहां है ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अव्वल तो नफ़्सो **शैत़ान** हमें नेकियां करने नहीं देते और अगर हम ख़ूब कोशिश कर के नेक अ़मल करने में काम्याब हो भी जाएं तो **नफ़्सो शैत़ान** हमारी इ़बादत को मक़्बूल होने से रोकने के लिये अपना पूरा ज़ोर लगा देते हैं, इस के लिये हमारी इ़बादत में कोई ऐसी ग़-लत़ी करवा देते हैं जो इसे ज़ाएअ़ कर देती है या फिर इ़बादत के बा'द हमारे दिल में **नामो नुमूद** की ख़्वाहिश घर कर लेती है, कोई हमारी **नेकियों का चर्चा** करे न करे हम ख़ुद बिला ज़रूरते शर-ई अपनी

नेकियों का इज़हार कर के ''अपने मुंह मियां मिठ्ठू'' बनने से बाज़ नहीं आते और यूं नफ़्सो शैत़ान के फैलाए हुए जाल या'नी **रियाकारी** में जा फंसते हैं। म-सलन कोई कहता है : मैं हर साल रजब, शा'बान और र-मज़ान के रोज़े रखता हूं (ह़ालांकि माहे र-मज़ानुल मुबारक के रोज़े तो फ़र्ज़ हैं फिर भी वोह रियाकार जो कि दो माह के नफ़्ली रोज़े रखता है अपनी रियाकारी का वज़्न बढ़ाने के लिये कहता है मैं हर साल तीन माह या'नी र-जब, शा'बान और र-मज़ान के रोज़े रखता हूं। وَلَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰہ ,कोई बोलता है : मैं इतने साल से हर माह अय्यामे बीज़ (या'नी चांद की 13,14,15 तारीख़) के **रोज़े** रख रहा हूं, कोई अपने **ह़ज** की ता'दाद का तो कोई **उ़मरे** की गिनती का ए'लान करता है। कोई केहता है : मैं रोज़ाना इतने **दुरूद शरीफ़** पढ़ता हूं, इतने अ़रसे से दलाइलुल ख़ैरात शरीफ़ का विर्द कर रहा हूं। इतनी **तिलावत** करता हूं, हर माह फ़ुलां मद्रसे को इतना **चन्दा** पेश करता हूं। **अल ग़-रज़** ख़्वाह मख़्वाह अपने नवाफ़िल, तहज्जुद, नफ़्ली रोज़ों और इबादतों का ख़ूब **चर्चा** किया जाता है। आह ! **ऐ इख़्लास** तू कहां है ?

(इफ़ादात : अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه)

नफ़्से बदकार ने दिल पे येह क़ियामत तोड़ी
अ़मले नेक किया भी तो छुपाने न दिया

(सामाने बख़्शिश)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़क़ीक़ी काम्याबी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन नेकियों की तौफ़ीक़ मिल जाना बहुत बड़ी **सआ़दत** है मगर बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में इन का मक़्बूल हो जाना ही ह़क़ीक़ी **काम्याबी** है। कहीं ऐसा न हो कि हम **मशक़्क़तें** बरदाश्त कर के इ़बादतें करें, म-सलन शदीद सर्दी या गरमी में भी मस्जिद जा कर बा जमाअ़त **नमाज़** पढ़ें, रातों की नींद क़ुरबान कर के **नवाफ़िल** अदा करें, भूक प्यास बरदाश्त कर के **रोज़े** रखें, ख़ूब **स-दक़ा** करें, ख़ुद तक्लीफ़ उठा कर दूसरों के लिये **ईसार** का मुज़ाहरा करें मगर **रियाकारी** की वजह से हमारी **नेकियां** ज़ाएअ़ हो रही हों और हमें ख़बर तक न हो इस लिये हमें चाहिये कि अपनी नेकियों को **ज़ाएअ़** होने से बचाने के लिये सीखें कि **रिया** किसे कहते हैं ? इस की **पेहचान** कैसे होगी ? हम किस किस त़रह़ रियाकारी में **मुब्तला** हो सक्ते हैं ? क्या हम किसी को रियाकार **कह** सकते हैं या नहीं ? रियाकारी की कितनी **अक़्साम** हैं और इन का शर-ई **ह़ुक्म** क्या है ? म-रज़े रिया का **इ़लाज** क्या है ? वग़ैरहा

रियाकारी का इ़ल्म सीखना फ़र्ज़ है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रियाकारी का इ़ल्म और उस का इ़लाज सीखना फ़र्ज़ उ़लूम में से है। चुनान्चे **आ'ला ह़ज़रत,** इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मौलाना **शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن **फ़तावा र-ज़विय्या** जिल्द 23 सफ़्ह़ा 624 पर लिखते हैं : "**मुह़र्रमाते बात़िना** (या'नी बात़िनी मम्नूआ़त म-सलन) तकब्बुरो रिया व उ़ज्बो ह़सद वग़ैरहा और उन के **मुआ़लजात** (या'नी इ़लाज) कि इन का इ़ल्म भी हर मुसल्मान पर अहम्म फ़राइज़ से है।"

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

रियाकारी किसे कहते हैं ?

''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के इलावा किसी और निय्यत या इरादे से इबादत करना रियाकारी है ।'' म-सलन लोगों पर अपनी इबादत गुज़ारी की **धाक** बिठाना मक़्सूद हो कि लोग उस की **ता'रीफ़** करें, उसे **इज़्ज़त** दें और उस की ख़िदमत में **माल** पेश करें ।

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा 16, स.233, अज़्वाजिर, जि.1, स.69)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

रियाकारी के दरजात

हकीमुल उम्मत हज़रते मौलाना मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी عليه رَحمَةُ اللهِ القَوى लिखते हैं : ''रिया के बहुत द-रजे हैं, हर द-रजे का इल्म अलाहिदा है बा'ज़ रिया **शिर्के अस्ग़र** हैं, बा'ज़ रिया **हराम**, बा'ज़ रिया **मकरूह**, बा'ज़ **सवाब** । मगर जब रिया मुत्लक़न बोली जाती है तो इस से **मम्नूअ़ रिया** मुराद होती है । (मिर्आतुल मनाजीह, जि.7, स.127)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

रियाकारी से बचो

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रिया से बचने का हुक्म ख़ुद हमारा मा'बूद या'नी रब عَزَّوَجَلَّ दे रहा है चुनान्चे पारह 16 सूरतुल कह्फ़ में इर्शाद हुवा :

فَمَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَّ لَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖۤ اَحَدًا ﴿۱۱۰﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो जिसे अपने रब से मिलने की उम्मीद हो, उसे चाहिये कि नेक काम करे और अपने रब की बन्दगी में किसी को शरीक न करे ।

(पा.16, अल कह्फ़:110)

इस की तफ़्सीर में मुफ़स्सिरीन ने लिखा है या'नी रिया न करे कि वोह एक क़िस्म का शिर्क है। (तफ़्सीरे नईमी, जि.16, स.103)

''तम्बीह'' के पांच हुरूफ़ की मुनासिबत से रियाकारी के शिर्के अस्ग़र होने के बारे में 5 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم

(1) हज़रते सय्यिदुना महमूद बिन लुबैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूर पुरनूर शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''जिस चीज़ का तुम पर ज़ियादा ख़ौफ़ है, वोह शिर्के अस्ग़र है।'' लोगों ने अ़र्ज़ की : ''**शिर्के अस्ग़र** क्या चीज़ है ? इर्शाद फ़रमाया : ''**रिया** ।'' (अल मुस्नदो लिल इमाम अह़मद बिन ह़म्बल, ह़दीस महमूद बिन लुबैद, अल ह़दीस: 23692, जि.9, स.160)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह पहली ह़दीस है जिस में रिया को **शिर्के अस्ग़र** फ़रमाया गया है। मुश्रिक अपनी इबादात से अपने **झूटे मा'बूदों** को राज़ी करने की निय्यत करता है, (और) रियाकार (मुसल्मान) अपनी इबादात से अपने **झूटे मक्सूदों** या'नी लोगों को राज़ी करने की निय्यत करता है। इस लिये **रियाकार** छोटे द-रजे का मुश्रिक है और उस का येह अ़मल छोटे द-रजे का शिर्क है। चूंकि रियाकार का **अ़क़ीदा** ख़राब नहीं होता **अ़मल व इरादा** ख़राब होता है और खुले मुश्रिक का (अ़मलो इरादे के साथ साथ) **अ़क़ीदा** भी ख़राब होता है, इस लिये रिया को **छोटा शिर्क** फ़रमाया। (मिर्आतुल मनाजीह़, जि.7, स.144)

(2) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं हम लोग मसीह़ दज्जाल[1] का ज़िक्र कर रहे थे कि रसूलुल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए और फ़रमाया : मैं तुम्हें ऐसी चीज़ की ख़बर न दूं जिस का

1. : दज्जाल का ज़ाहिर होना क़ियामत की निशानियों में से एक निशानी है। तफ़्सीली मा'लूमात के लिये बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल, ह़िस्सा अव्वल, स.120 (मत्बूआ़ मक-त-बतुल मदीना) का मुत़ालआ़ कर लीजिये।

मसीह़ दज्जाल से भी ज़ियादा मेरे नज़्दीक तुम पर **ख़ौफ़** है ?[1] हम ने अ़र्ज़ की : "हां, या रसूलल्लाह ! (عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم)।" इर्शाद फ़रमाया : "वोह शिर्के ख़फ़ी है, आदमी नमाज़ पढ़ने खड़ा होता है और इस वजह से **त़वील** करता है कि दूसरा शख़्स उसे नमाज़ पढ़ते **देख** रहा है।"

(सुनने इब्ने माजा, أبواب الزهد، باب الرياء والسمعة अल ह़दीस:4204, जि.4, स.470)

या'नी अगर अकेले में नमाज़ पढ़े तो थोड़ी और हल्की पढ़े मगर जब उसे कोई देख रहा है तो नवाफ़िल बहुत ता'दाद में पढ़े और ख़ूब लम्बे दराज़ पढ़े। (मिर्आतुल मनाजीह़, जि.7, स.143)

(3) ह़ज़रते सय्यिदुना शद्दाद बिन औस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने सरकारे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, "जिस ने **दिखावे** के लिये **रोज़ा** रखा तो उस ने शिर्क किया, जिस ने **दिखावे** के लिये **नमाज़** पढ़ी तो उस ने शिर्क किया और जिस ने **रियाकारी** करते हुए **स-दक़ा** दिया तो उस ने **शिर्क** किया।"

(शुअ़बुल ईमान, باب فی الاخلاص العمل للهو ترك الرياء, रक़म:6844, जि.5, स.337)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शिर्क की दो क़िस्में हैं : (1) शिर्के जली, और (2) शिर्के ख़फ़ी, **शिर्के जली** तो खुल्लम खुला मुशिरक व बुत परस्त करता है और **शिर्के ख़फ़ी** से मुराद **रियाकारी** है। बल्कि यूं कहिये कि **शिर्के ए'तेक़ादी** तो खुला हुवा शिर्क है और **शिर्के अ़मली** रियाकारी है। इसी ह़दीस से मा'लूम हुवा कि रोज़े में भी **रियाकारी** हो

1.: या'नी दज्जाल को तो कोई शख़्स ही पाएगा वोह भी क़ियामत के क़रीब, फिर इन्सान उस से बच भी सकेगा कि न उस के पास जाए न उस के फन्दे में फंसे ! मगर रियाकारी की मुसीबत हर शख़्स को हर वक़्त दरपेश है, इस लिये येह आफ़त दज्जाल से ज़ियादा ख़त़रनाक है।

(मिर्आतुल मनाजीह़, जि.7 स.143)

सकती है। बा'ज़ लोग **रोज़ा** रख कर दूसरों के सामने बहुत कुल्लियां करते, सर पर पानी डालते रहते हैं और केहते फिरते हैं : "हाए रोज़ा बहुत लगा है, बड़ी प्यास लगी है वग़ैरा वग़ैरा" येह भी **रोज़े की रिया** है और इस ह़दीस में दाख़िल है। (मिर्आतुल मनाजीह़, जि.7, स.141, मुलख़्ख़सन)

सद्रुश्शरीअ़ह, बद्रुत्तरीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عليه رَحمَةُ اللهِ القَوى मक–त–बतुल मदीना की मत़्बूआ़ **बहारे शरीअ़त** हिस्सा 16 **सफ़्ह़ा** 240 पर फ़रमाते है : "फ़र्ज़ अगर **रिया** के त़ौर पर अदा किया जब भी उस के ज़िम्मे से साक़ित़ हो जाएगा, अगर्चे **इख़्लास** न होने की वजह से सवाब न मिले।", **रोज़े** के मुतअ़ल्लिक़ बा'ज़ उ़–लमा का येह क़ौल है कि उस में **रिया** नहीं होता इस का ग़ालिबन येह मत़लब होगा कि रोज़ा चन्द चीज़ों से बाज़ रहने का नाम है इस में कोई काम नहीं करना होता जिस की निस्बत कहा जाए कि रिया से किया, वरना येह हो सकता है कि लोगों को जताने के लिये येह कहता फिरता है कि मैं रोज़े से हूं या लोगों के सामने मुंह बनाए रहता है ताकि लोग समझें कि इस का भी रोज़ा है इस त़ौर पर रोज़े में भी रिया की मुदाख़लत हो सकती है।

(4) एक और मक़ाम पर फ़रमाया : "शिर्के ख़फ़ी से बचते रहो जो येह है कि बन्दा लोगों की निगाहों की वजह से नमाज़ के रुकूअ़ व सुजूद कामिल त़रीक़े से अदा करे।"

(शुअ़बुल ईमान, باب فی الصلوات باب فی الصلوات अल ह़दीस:3141, जि.3, स.144)

(5) ह़ज़रते सय्यिदुना शद्दाद बिन औ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को

रोता देख कर किसी ने पूछा : ''क्यूं रो रहे हैं ?'' फ़रमाया: मैं ने रसूलुल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से एक बात सुनी थी, वोह याद आ गई और मुझे रुला दिया, (फिर फ़रमाया) हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) को मैं ने येह फ़रमाते सुना कि ''मैं अपनी उम्मत पर ख़ुफ़िया **शिर्क** और **पोशीदा शह्वत** का अन्देशा करता हूं। मैं ने अ़र्ज़ की : ''या रसूलल्लाह ! (عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) क्या आप की उम्मत आप के बा'द **शिर्क** करेगी ? फ़रमाया : हां ! मगर वोह लोग चांद, सूरज, पत्थरों और बुतों को नहीं पूजेंगे, बल्कि अपने आ'माल में रिया करेंगे और शह्वते ख़ुफ़िया येह कि सुब्ह़ को रोज़ा रखेगा फिर ख़्वाहिश से रोज़ा तोड़ देगा।'' (अल मुस्नदो लिल इमाम अह़मद बिन ह़म्बल, ह़दीस शद्दाद बिन औ़स, अल ह़दीस:17120, जि.6, स.77)

ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان लिखते हैं : ''(सुब्ह़ को रोज़ा रखेगा फिर किसी ख़्वाहिश से रोज़ा तोड़ देगा) या'नी इस त़रह़ कि उस ने रोज़ा रख लिया होगा कोई अच्छे खाने की दा'वत आ गई या किसी ने शरबत सोड़ा पेश किया तो उस खाने (या) शरबत की वजह से रोज़ा तोड़ दिया रोज़े की निय्यत थी कि आज रोज़ा रखूंगा मगर येह चीज़ें देखीं (तो) इरादा बदल दिया (कि) मह्ज़ नफ़्सानी लज़्ज़तो ख़्वाहिश के लिये कि ऐसा मज़ेदार खाना कौन छोड़े ?''

(मिर्आतुल मनाजीह़, जि.7, स.142)

म-दनी फूल: (1) नफ़्ल रोज़ा क़स्दन शुरूअ़ करने से पूरा करना वाजिब हो जाता है अगर तोड़ेगा तो क़ज़ा वाजिब होगी। (दुर्रे मुख़्तार, जि. 3, स. 411) (2) नफ़्ल रोज़ा बिला उ़ज़्र तोड़ना ना जाइज़ है। मेहमान के साथ अगर मेज़बान न खाएगा तो उसे या'नी मेहमान को ना गवार गुज़रेगा। या **मेहमान** अगर खाना न खाए तो **मेज़बान** को अज़िय्यत होगी तो नफ़्ल रोज़ा तोड़ने

के लिये येह उ़ज़्र है ब शर्ते कि येह भरोसा हो कि इस की क़ज़ा रख लेगा और येह भी शर्त है कि ज़हूवए कुब्रा से पहले तोड़े, बा'द को नहीं।

(दुर्रे मुख़्तार, रद्दुल मुहूतार, जि.3, स.413)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

रियाकार की नादानी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रियाकारी ऐसा मोहलिक **बातिनी म-रज़** है जो इन्सान की अ़क़्ल पर पर्दा डाल देता है। कितना नादान है वोह शख़्स जो रियाकाराना इबादत के ज़रीए लोगों से **इ़ज़्ज़त, माल और क़द्रो मन्ज़िलत** का त़लबगार हो, क्यूंकि उस ने **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिज़ा, **जन्नत** की आ'ला ने'मतों और अ-बदी राह़तों पर इन आ़रिज़ी चीज़ों को तरजीह़ दी जो ख़त्म होने वाली हैं, गोया येह शख़्स **सवाब** बेच कर **अ़ज़ाब** ख़रीद रहा है और उस **मख़्लूक़** को राज़ी करने के लिये मशक़्क़तें बरदाश्त कर रहा है जो उसे इन नेकियों का कुछ **बदला** नहीं दे सकते, जन्नत की ने'मतें न अ़ज़ाबे जहन्नम से रिहाई ! बल्कि दुन्या ही में लोगों को उस की निय्यत का पता चल जाए तो वोह उस से **नफ़रत** करने लगें।

''*सुन लो ! रियाकारी बाइ़से हलाकत है*'' के बाईस हुरूफ़ की मुनासिबत से रियाकारी की 22 तबाहकारियां

(1) अ़मल ज़ाएअ़ हो जाता है

दिखावे के लिये इ़बादत करने वाले का अ़मल ज़ाएअ़ हो जाता है। क़ुरआने मजीद में इर्शाद हुवा :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُبْطِلُوْا صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْاَذٰى ۙ كَالَّذِيْ يُنْفِقُ مَالَهٗ رِئَآءَ النَّاسِ

तर्जमए कन्जुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! अपने स-दक़े बातिल न कर दो एह़सान रख कर और ईज़ा दे कर, उस की त़रह़ जो अपने माल लोगों के दिखावे के लिये ख़र्च करे ।

(पा.3, अल बक़रह:264)

(2) शैत़ान के दोस्त

लोगों पर अपनी धाक बिठाने के लिये माल ख़र्च करने वाले रियाकारों को शैत़ान के **दोस्त** क़रार दिया गया है । चुनान्चे पारह 5 सूरतुन्निसाअ में इर्शाद हुवा :

وَالَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ رِئَآءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ وَمَنْ يَّكُنِ الشَّيْطٰنُ لَهٗ قَرِيْنًا فَسَآءَ قَرِيْنًا ﴿۳۸﴾

तर्जमए कन्जुल ईमान : और वोह जो अपने माल लोगों के दिखावे को ख़र्च करते हैं और ईमान नहीं लाते **अल्लाह** और न क़ियामत पर, और जिस का मुसाह़िब शैत़ान हुवा, तो कितना बुरा मुसाह़िब है ।

(पा.5, अन्निसा:38)

(3) जहन्नम की वादी रियाकारों का ठिकाना होगी

दिखावे की नमाज़ें पढ़ने वाले बद नसीबों का ठिकाना जहन्नम होगा । चुनान्चे इर्शाद होता है :

فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ ۙ﴿۴﴾ الَّذِيْنَ هُمْ
عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ ۙ﴿۵﴾ الَّذِيْنَ
هُمْ يُرَآءُوْنَ ۙ﴿۶﴾ وَيَمْنَعُوْنَ
الْمَاعُوْنَ ﴿۷﴾

तर्जमए कन्जुल ईमान : तो उन नमाज़ियों की ख़राबी है जो अपनी नमाज़ से भूले बैठे हैं, वोह जो दिखावा करते हैं और बरतने की चीज़ मांगे नहीं देते।

(पा.30, अल माऊन:4,7)

(4) आ'माल बरबाद हो जाएंगे

दुन्या को आख़िरत पर तरजीह़ देने वाले नादानों के अ़मल बरबाद हो जाएंगे। चुनान्चे इर्शाद होता है:

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا
وَزِيْنَتَهَا نُوَفِّ اِلَيْهِمْ اَعْمَالَهُمْ
فِيْهَا وَهُمْ فِيْهَا لَا يُبْخَسُوْنَ ﴿۱۵﴾
اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَيْسَ لَهُمْ فِي
الْاٰخِرَةِ اِلَّا النَّارُ ۖ وَحَبِطَ مَا
صَنَعُوْا فِيْهَا وَبٰطِلٌ مَّا كَانُوْا
يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۶﴾

तर्जमए कन्जुल ईमान: जो दुन्या की ज़िन्दगी और आराइश चाहता हो हम उस में उन का पूरा फल दे देंगे और उस में कमी न देंगे, येह हैं वोह जिन के लिये आख़िरत में कुछ नहीं मगर आग और अकारत गया जो कुछ वहां करते थे और नाबूद हुए जो उन के अ़मल थे।

(पा.12, हूद:15,16)

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि येह आयत **रियाकारों** के ह़क़ में नाज़िल हुई।

(रूहुल बयान, हूद, तह़्तुल आयत:15, जि.4, स.108)

(5) रियाकारों की ह़सरत

शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''क़ियामत के दिन कुछ लोगों को जन्नत में ले जाने

का हुक्म होगा, यहां तक कि जब वोह **जन्नत** के क़रीब पहुंच कर उस की **ख़ुश्बू** सूंघेंगे और उस के **महल्लात** और अहले जन्नत के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तैयार कर्दा **ने'मतें** देख लेंगे, तो निदा दी जाएगी : ''इन्हें लौटा दो क्यूंकि इन का जन्नत में कोई हिस्सा नहीं।'' तो वोह ऐसी **हसरत** ले कर लौटेंगे जैसी अव्वलीन व आख़िरीन ने न पाई होगी, फिर वोह अ़र्ज़ करेंगे : ''या रब عَزَّوَجَلَّ ! अगर तू वोह ने'मतें दिखाने से पहले ही हमें **जहन्नम** में दाख़िल कर देता तो येह हम पर ज़ियादा **आसान** होता।'' तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : ''बद बख़्तो ! मैं ने इरादतन तुम्हारे साथ ऐसा किया है जब तुम **तन्हाई** में होते तो मेरे साथ **ए'लाने जंग** करते और जब लोगों के सामने होते तो मेरी बारगाह में दोग़ले पन से हाज़िर होते, नीज़ लोगों के **दिखलावे** के लिये अ़मल करते जब कि तुम्हारे दिलों में मेरी ख़ातिर उस के बिल्कुल बर अ़क्स सूरत होती, लोगों से महब्बत करते और मुझ से महब्बत न करते, लोगों की इ़ज़्ज़त करते और मेरी इ़ज़्ज़त न करते, लोगों के लिये **अ़मल** छोड़ देते मगर मेरे लिये **बुराई** न छोड़ते थे, आज मैं तुम्हें अपने **सवाब** से महरूम करने के साथ साथ अपने **अ़ज़ाब** का मज़ा भी चखाऊंगा।''

(अल मो'जमुल अवसत़, अल ह़दीस:5478, जि.4, स.135, मुलख़्ख़सन)

अल्लाह के सामने वोह गुन थे
यारों में कैसे मुत्तक़ी से

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

(6) अ़मल क़बूल नहीं होता

लोगों को ख़ुश करने के लिये मशक़्क़तें बर्दाश्त करने वाला रियाकार क़ियामत के दिन अपने परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में **ख़ाली**

हाथ पेश होगा चुनान्चे साहि़बे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी त़ालिबे शोहरत, रियाकार, और **लह्वो लइ़ब** में पड़े रहने वाले का कोई अ़मल **क़बूल** नहीं फ़रमाता।"

(हि़ल्यतुल औलिया, अर्रबीअ़ बिन ह़सीम, अल ह़दीस:1732, जि.2, स.139)

ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़ज़मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानिय्यत عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस अ़मल को क़बूल नहीं करता जिस में राई के दाने के बराबर भी रिया हो।"

(अत्तरग़ीब वत्तरहीब, किताबुल इख़्लास, अल ह़दीस:54, जि.1, स.470)

(7) रियाकार के चार नाम

एक शख़्स ने दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़्रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ की : "कल बरोज़े क़ियामत कौन सी चीज़ **नजात** दिलाएगी ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ बद दियानती न करना।" तो उस ने फिर अ़र्ज़ की : "बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ बद दियानती कैसे कर सकता है ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "इस त़रह़ कि तुम कोई ऐसा काम करो जिस का हुक्म तुम्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दिया हो लेकिन तुम्हारा मक़्सूद ग़ैरुल्लाह की रिज़ा का हुसूल हो, लिहाज़ा **रियाकारी** से बचते रहो क्यूंकि येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ **शिर्क** है और क़ियामत के दिन रियाकार को लोगों के सामने **चार नामों** से पुकारा जाएगा या'नी "**ऐ बदकार ! ऐ धोकेबाज़ ! ऐ काफ़िर ! ऐ ख़सारा**

पाने वाले ! तेरा अ़मल ख़राब हुवा और तेरा अज्र बरबाद हुवा, लिहाज़ा आज तेरे लिये कोई हि़स्सा नहीं, ऐ धोका देने की कोशिश करने वाले ! अब तू अपना सवाब उस के पास जा कर **तलाश** कर जिस के लिये तू **अ़मल** किया करता था।'' (अज़्ज़वाजिर अ़न इक़्तिराफ़िल कबाइर, अल कबीरतुस्सानियह, الشرك الاصغر.....الخ، जि.1, स.68)

(8) जहन्नम भी पनाह मांगता है

नबिय्ये मुक़र्रम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''बेशक **जहन्नम** में एक वादी है जिस से जहन्नम रोज़ाना चार सो400 मरतबा **पनाह** मांगता है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने येह वादी उम्मते मुह़म्मदिया عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُوَالسَّلَام के उन **रियाकारों** के लिये तैयार की है जो क़ुरआने पाक के **ह़ाफ़िज़**, ग़ैरुल्लाह के लिये **स-दक़ा** करने वाले, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के घर के **ह़ाजी** और राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में **निकलने** वाले होंगे।''

(अल मो'जमुल कबीर, अल ह़दीस:12803, जि.12, स.136)

(9) रुस्वाई का अ़ज़ाब

आज दुन्या में लोगों पर अपनी इबादतों का इज़हार कर के **नेकनामी** चाहने वाला क़ियामत के दिन **ज़लीलो ख़्वार** हो जाएगा। जैसा कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जो **शोहरत** के लिये अ़मल करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे **रुस्वा** करेगा, जो **दिखावे** के लिये अ़मल करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे **अ़ज़ाब** देगा।''

(जामेउल अह़ादीस, क़िस्म अल अक़्वाल, अल ह़दीस:2074, जि.7, स.44)

ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मौलाना मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी علیہ رَحمَۃُ اللہِ القَوی इस ह़दीस के तह़त लिखते हैं ''या'नी जो कोई **इबादात** लोगों के **दिखलावे** (और) **सुनाने** के लिये करेगा तो **अल्लाह** तआ़ला दुन्या में या आख़िरत में उस के अ़मल लोगों में **मश्हूर** कर देगा मगर इ़ज़्ज़त के साथ नहीं बल्कि **ज़िल्लत** के साथ कि लोग उस के अ़मल सुन कर उस पर फिटकार करेंगे। (मिर्आतुल मनाजीह, जि.7, स.129)

आज बनता हूं मुअ़ज़्ज़ज़ जो खुले ह़श्र में ऐ़ब
हाए रुस्वाई की आफ़त में फसूंगा या रब

(10) रियाकार पर जन्नत ह़राम है

शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने **रियाकार** पर जन्नत को ह़राम कर दिया है।'' (जामेउ़ल अह़ादीस, अल ह़दीस:6725, स.476)

ह़ज़रते अ़ल्लामा मुह़म्मद अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी علیہ رحمۃ اللہ الھادی इस ह़दीस के तह़त **फ़ैज़ुल क़दीर शरहु जामेइ़स्सग़ीर** में फ़रमाते हैं : ''या'नी **रियाकार** पहले पहल जन्नत में दाख़िल होने वाले ख़ुश नसीबों के साथ दुख़ूले **जन्नत** का श-रफ़ नहीं पा सकता क्यूंकि उस ने ऐसे शख़्स की रिआ़यत में अपने आप को मश्ग़ूल कर के कि जो ह़क़ीक़तन उस के किसी नफ़्अ़ व नुक़्सान का मालिक ही नहीं, अपना अ़मल **ज़ाएअ़** कर दिया और अपने दीन को नुक़्सान पहुंचाया। पस हमेशा **रियाकार** इस (रियाकारी की) गन्दगी के सबब लतपत रहते हैं तो उन को भट्टी में डाल दिया जाएगा

यहां तक कि उन की गन्दगियां और नापाकियां **मिटा दी जाएंगी** । इसी लिये हमारे अस्लाफ़ नेक आ'माल करते थे और रद किये जाने के ख़ौफ़ से अपनी निय्यतों के **इख़्लास** की हमेशगी की हिफ़ाज़त करते रहते थे ।

(फ़ैज़ुल क़दीर, तह़तुल ह़दीस:1725, जि.2, स.286)

(11) जन्नत की ख़ुश्बू भी नहीं पाएगा

जब रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये अ़मल करने वाले मुसल्मान ख़ुशी ख़ुशी **जन्नत** की त़रफ़ बढ़ रहे होंगे तो अपने आ'माल **रियाकारी** की नज़्र करने वाला बद नसीब जन्नत की **ख़ुश्बू** भी न सूंघ पाएगा । जैसा कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "**जन्नत** की ख़ुश्बू पांच सो[500] बरस की मुसाफ़त से सूंघी जा सकती है मगर आख़िरत के **अ़मल** से दुन्या त़लब करने वाला उसे न पा सकेगा ।"(कन्ज़ुल उ़म्माल, किताबुल अख़्लाक़, क़िस्म अल अक़्वाल, बाबुर्रिया, अल ह़दीस:7479, जि.3, स.190)

(12) अपने रब की तौहीन करने वाला मुजरिम

शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने लोगों के सामने **अच्छे त़रीक़े** से और तन्हाई में **बुरे त़रीक़े** से नमाज़ अदा की, बेशक उस ने अपने **रब** عَزَّوَجَلَّ की **तौहीन** की ।"(मुस्नद अबी या'ला अल मूसली, मुस्नदो अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द, अल ह़दीस:5095, जि.4, स.380)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِيْ इस की मिसाल हमें यूं समझाते हैं : कोई शख़्स सारा दिन बादशाह के सामने खड़ा

रहे जिस त़रह़ ख़ुद्दाम की आ़दत होती है लेकिन उस का **मक़्सूद** बादशाह का क़ुर्ब ह़ासिल करना न हो बल्कि उस की किसी कनीज़ को देखना हो तो येह बादशाह के साथ मज़ाक़ है तो इस से ज़ियादा ह़क़ारत क्या होगी कि कोई शख़्स **अल्लाह** तआ़ला की इबादत उस के ज़ईफ़ बन्दे को दिखाने के लिये करे जो उस को बिज़्ज़ात न नफ़्अ़ पहुंचा सकता है न नुक़्सान।

(एह़्याउल उ़लूम, كتاب ذم الجاه والرياء،فصل الثانی जि.3, स.369, मुलख़्ख़सन)

(13) ज़मीनो आस्मान में मल्ऊ़न

मह़बूबे रब्बुल आ़लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने आख़िरत के अ़मल से ज़ीनत पाई ह़ालांकि आख़िरत उस की मुराद थी न त़लब तो वोह ज़मीनो आस्मान में मल्ऊ़न है।"

(मज्मउ़ज़्ज़वाइद, كتاب الزهد،باب ماجاء فی الريا अल ह़दीस:17948, जि.10, स.377)

(14) रियाकारों का ठिकाना

ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जब कोई क़ौम आख़िरत (के आ'माल) से आरास्ता हो कर (हुसूले) दुन्या के लिये हुस्नो जमाल का पैकर बने तो उस का ठिकाना जहन्नम है।"

(जामेउ़ल अह़ादीस, अल ह़दीस:1169, जि.1, स.183)

(15) अल्लाह तआ़ला के ज़िम्मए करम से बरी हो जाने वाला

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ ग़ैरे ख़ुदा के लिये दिखलावा किया तह़क़ीक़ वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम से बरी हो गया।"

(अल मो'जमुल कबीर, अल ह़दीस:805, जि.22, स.302)

(16) अपने रब عَزَّوَجَلَّ को नाराज़ करने वाला

सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो दिखावे और शोहरत के **मक़ाम** पर खड़ा हो तो जब तक बैठ न जाए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की **नाराज़ी** में है।"

(मज्मउ़ज़्ज़वाइद, كتاب الزهد،باب ماجاء فی الريا, अल ह़दीस:17664, जि.10, स.383)

गर तू नाराज़ हुवा मेरी हलाकत होगी
हाए मैं नारे जहन्नम में जलूंगा या रब

(17) हुसूले माल के लिये इ़ल्म सीखने वाले का अन्जाम

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये ह़ासिल किया जाने वाला **इ़ल्म,** दुन्या का **माल** पाने के लिये ह़ासिल किया तो क़ियामत के दिन वोह जन्नत की ख़ुश्बू तक न पा सकेगा।" (सुनने अबी दावूद, किताबुल इ़ल्म, باب فی طلب العلم لغير الله अल ह़दीस:3664, जि.3, स.451)

(18) ब रोज़े क़ियामत नदामत का सामना

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जब लोग अपने आ'माल ले कर आएंगे तो **रियाकारों** से कहा जाएगा : "उन के पास जाओ जिन के लिये तुम रियाकारी किया करते थे और उन के पास अपना अज्र तलाश करो।"

(अल मो'जमुल कबीर, अल ह़दीस:4301, जि.4, स.253)

(19) आ'माल रद हो जाएंगे

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने हिदायत निशान है : "मैं शरीक

से बे नियाज़ हूं जिस ने किसी अ़मल में किसी को मेरे साथ शरीक किया मैं उसे और उस के शिर्क को छोड़ दूंगा ।'' और जब क़ियामत का दिन आएगा तो एक मोहर बन्द सह़ीफ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में नस्ब किया जाएगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने मलाइका से इर्शाद फ़रमाएगा : ''इन्हें क़बूल कर लो और उन्हें छोड़ दो ।'' फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करेंगे : ''या रब عَزَّوَجَلَّ ! तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम ! हम इन में ख़ैर के इ़लावा कुछ नहीं पाते ।'' तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : ''तुम दुरुस्त कहते हो मगर येह मेरे **ग़ैर** के लिये हैं और आज मैं सिर्फ़ वोही **आ'माल** क़बूल करूंगा जो **मेरी रिज़ा** के लिये किये गए थे ।'' (कन्ज़ुल उ़म्माल, अल ह़दीस:7471,7472, जि.3, स.189) کتاب الاخلاق،قسم الاقوال ،حرف الراء، باب الریاء

(20) रियाकार क़ारी का अन्जाम

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''जुब्बुल ह़ुज़्न'' से **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की पनाह मांगो ! सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! ''जुब्बुल ह़ुज़्न'' क्या है ? फ़रमाया : येह जहन्नम में एक वादी है कि जहन्नम भी हर रोज़ **सो**[100] मरतबा इस से **पनाह** मांगता है, इस में वोह **क़ारी** दाख़िल होंगे जो अपने आ'माल में **रिया** करते हैं ।''

(''जामेउ़त्तिरमिज़ी'' अल ह़दीस: 2390, जि.4, स.170) کتاب الزھد،باب ماجاء فی الریاوالسمعۃ

यहां **क़ारी** से मुराद वोह **बे दीन उ़-लमा** हैं जो अच्छे आ'माल के लिबास में लोगों के सामने आएं और लोगों को गुमराह और बे दीन बनाएं ताकि उन से दौलत ले कर उन की बदकारियों को जाइज़ साबित करें और जुल्म में उन के मददगार हों बल्कि **चापलूस आ़लिम** भी ख़त़रनाक है जो हर जगह पहुंच कर वहां जैसा बन जाए। हमारा **अल्लाह**, नबी, कुरआन व का'बा एक, दीन भी एक होना चाहिये।

(मिर्आतुल मनाजीह़, जि.1, स.229)

(21) अपना अज्र उसी से मांग जिस के लिये अ़मल किया था

रियाकार के लिये एक बड़ा नुक़्सान व ख़सारा येह है कि जब लोगों को उन के आ'माल का **सवाब** मिलेगा और उन पर इन्आ़मात की बारिश होगी तो रियाकार की तमाम लोगों के सामने **बे इ़ज़्ज़ती** होगी। उस से कहा जाएगा, तू ने अपने अ़मल के ज़रीए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की **रिज़ा** नहीं चाही बल्कि तेरा मक़्सूद येह था कि लोग तेरी ता'रीफ़ करें तो तू उन के पास जा और उन ही से अपना **इन्आ़म** वुसूल कर और वोह लोग क्यूं कर कुछ दे सकेंगे क्यूंकि वोह तो ख़ुद एक एक नेकी के मोह़ताज होंगे। चुनान्चें ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहते हैं कि मैं ने **अल्लाह** के ह़बीब عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना : ''जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तमाम अगलों और पिछलों को क़ियामत के दिन जम्अ़ फ़रमाएगा तो एक मुनादी येह निदा करेगा कि जिस ने किसी अ़मल में किसी को शरीक किया (या'नी रियाकारी की) तो उसे चाहिये कि वोह अपना सवाब उस ही से ले क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ शिर्क से बे परवाह है।'' (जामेउत्तिरमिज़ी, किताबुत्तफ़्सीर, باب ومن سورة الكهف अल ह़दीस:3165, जि.5, स.105)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ الۡحَنَّان इस ह़दीस के तह़्त लिखते हैं : या'नी जो काम रिज़ाए इलाही के लिये किये जाते हैं उन में किसी **बन्दे की रिज़ा** की निय्यत करे । बन्दे से मुराद दुन्यादार बन्दा है और ज़ाहिर करना भी अपनी **नामवरी** के लिये होना मुराद है लिहाज़ा जो शख़्स अपनी इबादत में **हु़ज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा की भी निय्यत करे या जो कोई मुसल्मानों को **सिखाने** की निय्यत से लोगों को अपने आ'माल दिखाए वोह इस वई़द में **दाख़िल** नहीं । (मिर्आतुल मनाजीह़, जि.7, स.130)

(22) रियाकार का आख़िरत में कोई ह़िस्सा नहीं

ह़ज़रते सय्यिदुना **उबै बिन कअ़ब** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ से रिवायत है कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, "इस उम्मत को रौशनी व बुलन्दी और ज़मीन में इख़्तियारात की ख़ुशख़बरी सुनाओ और जिस ने आख़िरत का अ़मल (या'नी नेकी) दुन्या के लिये किया उस का आख़िरत में कोई ह़िस्सा नहीं ।" (मज्मउ़ज़्ज़वाइद, کتاب الزهد، با ماجاء فی الریاء अल ह़दीस:17646, जि.10, स.376)

صَلُّوا عَلَى الۡحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हमारा क्या बनेगा ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सख़्त तश्वीश का मक़ाम है कि अगर इख़्लास न होने की वजह से हमें भी रियाकारों की सफ़ में खड़ा कर दिया गया तो हमारा क्या बनेगा ? **रब** عَزَّوَجَلَّ की **नाराज़ी,** दूध व शहद की बेहती हुई नहरें, जन्नत की हूरें, आ़लीशान मह़ल्लात और जन्नत के दीगर इन्आ़मात से **मह़रूमी** और मैदाने मह़शर में सब के सामने रुस्वाई का

सदमा हम कैसे सहेंगे ? हमारा नाज़ुक वुजूद जो गरमी या सरदी की ज़रा सी शिद्दत से परेशान हो जाता है जहन्नम के हौलनाक **अ़ज़ाबात** क्यूंकर बर्दाश्त कर पाएगा ।

हाए ! मा'मूली सी गरमी भी सही जाती नहीं
गरमिये ह़श्र मैं फिर कैसे सहूंगा या रब

जहन्नम का हल्का तरीन अ़ज़ाब

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا रिवायत करते हैं कि रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "दोज़ख़ियों में सब से हल्का अ़ज़ाब जिस को होगा उसे आग के जूते पहनाए जाएंगे जिन से उस का दिमाग़ खौलने लगेगा ।"

(सह़ीहुल बुख़ारी, باب صفة الجنة و النار अल ह़दीस:6561, जि.4, स.262)

हमारा नाज़ुक वुजूद

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़रा तसव्वुर तो कीजिये कि अगर हमें **रियाकारी** की सज़ा के तौर पर **जहन्नम** का सिर्फ़ येही अ़ज़ाब दिया जाए तो भी हम से **बरदाश्त** न हो सकेगा क्यूंकि हमारे पाउं इतने **नाज़ुक** हैं कि किसी गर्म अंगारे पर जा पड़ें तो पूरे वुजूद को उछाल कर रख दें, मा'मूली सा सर दर्द हमारे **होश गुम** कर देता है तो फिर वोह **अ़ज़ाब** जिस से दिमाग़ खौलने लगे, बरदाश्त करने की किस में **हिम्मत** है ? मगर आह ! **रियाकारों** को तो जहन्नम की उस वादी में डाला जाएगा जिस से जहन्नम भी **पनाह** मांगता है । (अल अमान वल ह़फ़ीज़) इस्लामी भाइयो ! क्या अब भी हम **रियाकारी** से बाज़ नहीं आएंगे, क्या

अब भी **इख़्लास** नहीं अपनाएंगे ? कब तक यूंही **ग़ाफ़िल** रहेंगे ? आह ! अगर रह़मते ख़ुदावन्दी शामिले ह़ाल न हुई तो **हमारा क्या** बनेगा ?

कब गुनाहों से कनारा मैं करूंगा या रब
नेक कब ऐ मेरे अल्लाह ! बनूंगा या रब

दर्दे सर हो या बुख़ार आए मैं तड़प जाता हूं
मैं जहन्नम की सज़ा कैसे सहूंगा या रब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस से पहले कि **मौत** हमें उ़म्दा बिछौने से उठा कर क़ब्र में फ़र्शे ख़ाक पर सुला दे, हमें चाहिये कि **रियाकारी** की तारीकी से नजात पाने के लिये अपने सीने को **नूरे इख़्लास** से मुनव्वर कर लें।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

किसी को रियाकार कहना कैसा ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रियाकारी की मा'लूमात ह़ासिल करने में अपनी **इस्लाह़** मक़्सूद होनी चाहिये। कहीं ऐसा न हो कि हम शैत़ान के बिछाए हुए **रियाकारी** के जाल से बचते बचते **बद गुमानी** के चुंगल में जा फंसें, लिहाज़ा किसी भी **मुसल्मान** को हरगिज़ रियाकार क़रार न दीजिये क्यूंकि किसी के **रियाकार** या मुख़्लिस होने का इन्ह़िसार उस की **निय्यत** पर है। शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **''आ'माल का दारो मदार निय्यतों पर है।''** (सह़ीहुल बुख़ारी, अल ह़दीस:1, जि.1, स.1) और निय्यत का तअ़ल्लुक़ दिल से है, हमारे पास कोई ऐसा आला या ज़रीआ़ मौजूद नहीं कि किसी के बताए बिग़ैर उस के **दिल की बात**

यक़ीनी तौ़र पर जान सकें। लिहाज़ा हमारी **आख़िरत** की बेहतरी इसी में है कि किसी को भी रियाकार **गुमान** न करें कि येह बद **गुमानी**[1] है और बद गुमानी ह़राम और **जहन्नम** में ले जाने वाला काम है।

''नियत'' के तीन ह़ुरूफ़ की निस्बत से 3 शर-ई अह़काम

(1) आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 16 सफ़ह़ा 500 पर लिखते हैं : ''बिला वज्हे शर-ई मुसल्मान पर क़स्दे **रिया** की बद गुमानी भी ह़राम (है)।''

(2) किसी ने **आ'ला ह़ज़रत** علیہ رحمۃُ ربِّ العزّت से **पूछा** कि एक साह़िब ने चन्दा (दे कर) मस्जिद बनवाने की कोशिश की, इसी वजह से अपना नाम भी पत्थर में कन्दह कराना चाहते हैं आया **नाम** का कन्दह कराना शर-अ़न दुरुस्त है या नहीं ? इस का **जवाब** देते हुए इर्शाद फ़रमाया : ''नाम कन्दह कराने का हुक्म इख़्तिलाफ़े निय्यत से मुख़्तलिफ़ होता है अगर निय्यत **रिया व नुमूद** है **ह़राम व मर्दूद** है और अगर निय्यत येह है कि ता बक़ाए नाम (या'नी जब तक नाम लिखा रहे) मुसल्मान **दुआ़** से याद करें तो ह़-रज नहीं, और ह़त्तल इम्कान मुसल्मान का काम मह़मले नेक ही पर मह़मूल किया जाएगा।''

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि.23, स.389)

(3) किसी ने कुछ इस त़रह़ का सुवाल किया कि अगर कोई इमाम आगे पीछे तो मग़रिब की अज़ान ताख़ीर से दिलवाता हो मगर अपने पीर की मौजूदगी में उसे दिखाने के लिये जल्द अज़ान दिलवाए और जमाअ़त करवाते वक़्त सज्दा व रुकूअ़ में आ़म मा'मूल से हट कर ज़ियादा देर लगाए तो क्या येह उस के **रियाकार** व मक्कार होने की अ़लामत है ? **आ'ला** ह़ज़रत علیہ رحمۃُ ربِّ العزّت

1.: बद गुमानी की तफ़्सीली मा'लूमात के लिये मक-त-बतुल मदीना का शाएअ कर्दा रिसाला ''बद गुमानी'' हदिय्यतन त़लब कीजिये।

ने इस का जवाब येह दिया : अज़ाने मग़रिब में बिला वज्हे शर-ई ताख़ीर ख़िलाफ़े सुन्नत है, पीर के सामने जल्द दिलवाना **रिया** पर क्यूं महमूल किया जाए बल्कि पीर के **ख़ौफ़** या लिहाज़ से उस ख़िलाफ़े सुन्नत (फ़े'ल) का तर्क (क्यूं न समझा जाए ?), पीर के सामने रुकूअ़ व सुजूद में देर भी ख़्वाह नख़्वाह **रिया** और **मक्कारी** पर **दलील** नहीं बल्कि उस के मौजूद होने से तअस्सुर (या'नी असर होना) भी मुम्किन और मुसल्मानों का फे'ल ह़त्तल इम्कान महमले ह़सन (या'नी अच्छाई) पर महमूल (गुमान) करना **वाजिब** और **बद गुमानी** रिया से **कुछ कम ह़राम नहीं,** हां अगर रुकूअ़ व सुजूद में इतनी **देर** लगाता हो कि सुन्नत से ज़ाइद और मुक़्तिदियों पर गिरां हो तो ज़रूर गुनाहगार है। وَاللّٰہ تَعَالٰی اَعْلَمُ

(फ़तावा र-ज़विय्या, जिल्द:5, स.324)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

एक साल तक रोने से महरूम रहे

ह़ज़रते सय्यिदुना मक्हूल दिमिश्क़ी علیہ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं, "जब तुम किसी को रोते देखो तो उस के साथ रोने लग जाओ येह **बद गुमानी** न करो कि वोह लोगों को दिखाने के लिये ऐसा कर रहा है। मैं ने एक बार एक शख़्स को रोता देख कर **बद गुमानी** की थी कि येह **रियाकारी** कर रहा है तो इस की सज़ा में एक साल तक (ख़ौफ़े ख़ुदा और इश्क़े मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में) रोने से **महरूम** रहा।"

(तम्बीहुल मुग़तर्रीन, स.107)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

तजस्सुस न कीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! किसी के बारे में तजस्सुस करना और उस में रियाकारी की अ़लामात तलाश करना ताकि उस को बद नाम

किया जाए येह सब भी ह़राम है। (एह़्याउल उ़लूमिद्दीन, किताबुल ह़लाल वल ह़राम, الباب الثالث الحالة الاولى जि.2, स.150 كتاب الامر بالمعروف......الخ, जि.2, स.399, मुलख़्ख़सन) बहर ह़ाल हमें चाहिये कि दूसरों में **ऐ़ब** तलाश करने के बजाए **रियाकारी** की बयान कर्दा सूरतों को अपने अन्दर तलाश करने के बा'द **इ़लाज** की तदबीर करें।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ऐ रियाकार !

एक औ़रत ने ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْغَفَّار को इन अल्फ़ाज़ से पुकारा ! "**ऐ रियाकार !**" आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने आ़जिज़ी से कहा : "ऐ ख़ातून ! बसरा के लोग मेरा नाम भूल गए थे, तू ने उस नाम को तलाश कर लिया।" (तज़्किरतुल औलिया, स.53)

سُبْحٰنَ الله ! سُبْحٰنَ الله हमारे अस्लाफ़ सरापा **इख़्लास** होने के साथ साथ निहायत ही बुर्दबार और ख़ुश अख़्लाक़ हुवा करते थे। कोई कितना ही तंग करे मगर उन को अपने नफ़्स की ख़ातिर ग़ुस्सा नहीं आता था, अगर कभी आ भी जाता था दामने सब्र हाथों से हरगिज़ न जाता। अगर हमें भी कोई रियाकार कह दे तो आपे से बाहर होने के बजाए सब्र कर के अज्र कमाना चाहिये।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

रियाकारी कैसे होती है ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रियाकारी से बचने के लिये येह जानना बहुत ज़रूरी है कि हम किस त़रह़ रियाकारी में मुब्तला हो सकते हैं। चुनान्चे रियाकारी कभी तो **ज़बान** के ज़रीए़ होती है और कभी **फ़े'ल** के ज़रीए़, उस की ज़रूरी तफ़्सील मुला-ह़ज़ा हो :

“*ज़बान की बे एह़तियाती*” के पन्दरह ह़ुरूफ़ की मुनासिबत से कलाम के ज़रीए रियाकारी की 15 सूरतें

(1) नपे तुले अल्फ़ाज़ में इस निय्यत से दीनी बातें करना कि लोगों पर उस की वसीअ़ **दीनी मा'लूमात** और फ़साह़त व बलाग़त का सिक्का बैठ जाए कि मैं ऐसा क़ादिरुल कलाम हूं कि कोई मुझ से बढ़ कर अच्छे त़रीके़ से अपना मुद्दआ़ बयान कर ही नहीं सकता। ऐसे लोग अपने अन्दाज़े गुफ़्त–गू के ज़रीए **नुमायां** मक़ाम ह़ासिल करने के ख़्वाहां होते हैं।

(2) मुसन्निफ़ का किताब के मुक़द्दमे (या'नी शुरूअ़) मैं इस क़िस्म के **अल्फ़ाज़** लिखना कि “मैं ने इतनी बड़ी म–सलन 1000 स–फ़ह़ात की किताब मह़्ज़ 10 दिन में लिखी है।” ताकि पढ़ने वालों पर उस के हमा वक़्त **दीनी कामों** में मस्रूफ़ रहने की धाक बैठ जाए।

(3) बयान करने वाले का बयान के आग़ाज़ में इस त़रह़ के कलिमात कहना कि सुनने वाले उसे **राहे ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ में **क़ुरबानियां** देने वाले तसव्वुर करते हुए ख़ुद को उस का एह़सानमन्द समझें। म–सलन मैं 6 दिन से मुसल्सल सफ़र पर हूं, 13 घन्टे का सफ़र कर के यहां पहुंचा हूं, बहुत थका हुवा हूं, अभी खाना भी नहीं खाया था मगर बयान करने पहुंच गया हूं वग़ैरहा।

(4) **दौराने** गुफ़्तु–गू बात बात पर अपने दीनी कारनामे बयान करना ताकि सुनने वाले उसे दीन का बहुत बड़ा **ख़ादिम** तसव्वुर करें और उस की **अ़ज़्मतों** के क़ाइल हो जाएं। म–सलन मुझे 15 साल हो गए नेकी की दा'वत आ़म करते हुए, मैं इतने अ़रसे तक फ़ुलां फ़ुलां **ज़िम्मादारी**

पर फ़ाइज़ रहा, मैं ने इतने अ़लाक़ों बल्कि मुल्कों में जा कर **म-दनी काम** किया, मैं ने सेंकड़ों अफ़राद को गुनाहों से तौबा करवाई, म-दनी काम करने पर आमादा किया, उन की **तरबिय्यत** की, वग़ैरहा। किसी मज़हबी तन्ज़ीम या तह़रीक से वाबस्ता अफ़राद **रियाकारी** की इस सूरत का ब आसानी शिकार हो सकते हैं।

(5) किसी शर-ई मस्अले का ज़बानी या तह़रीरी जवाब देते वक़्त इस **निय्यत** से अ़-रबी इबारात पढ़ना या लिखना और बिला ज़रूरत एक से ज़ाइद कुतुब का ह़वाला देना कि साइल व सामेईन पर उस के **कसरते मुत़ालआ़** का राज़ खुल जाए और वोह उसे बहुत बड़ा आ़लिम या मुफ़्ती तसव्वुर करें।

(6) **दीनी** ह़वाले से शोहरत रखने वाले या किसी मुअ़ज़्ज़म शख़्स का नए मुलाक़ाती को अपना **तआ़रुफ़** इस निय्यत से करवाना कि येह मेरे मक़ाम व मरतबे से आगाह हो कर मुझे **इ़ज़्ज़त** दे या कोई **दुन्यावी नफ़्अ़** पहुंचाए।

(7) **किसी** जामेआ़ या मद्रसे के उस्ताज़ का बिला ज़रूरत त़-लबा के सामने अपने **कारनामे** बयान करना ताकि त़-लबा उस के गिरवीदा हो जाएं कि हमें पढ़ने के लिये कितना अ़ज़ीम उस्ताज़ मिला है।

(8) **किसी** को अपने कसीर फ़ज़ाइल बता कर येह कहना कि "आप किसी और को मत बताना।" ताकि सामने वाला मु-तअस्सिर हो जाए कि बहुत मुख़्लिस शख़्स है कि किसी पर अपना नेक अ़मल ज़ाहिर नहीं करना चाहता।

(9) **किसी** को नेकी की दा'वत इस निय्यत से दी कि लोग उसे मुसल्मानों का अ़ज़ीम **ख़ैरख़्वाह** तसव्वुर करें या किसी को बुराई से इस लिये मन्अ़ किया कि लोग उस से **मु-तअस्सिर** हो जाएं कि "**बड़ा ग़ैरतमन्द**

शख़्स है जो बुराई देख कर ख़ामोश रह सक्ता।'' ह़ालांकि इस ने अपने घर में होने वाली बुराई देख कर कभी ऐसी ग़ैरत नहीं खाई।

(10) **ह़ाफ़िज़े** क़ुरआन या आ़लिमे दीन का बिला ज़रूरत अपना ह़ाफ़िज़ या आ़लिम होना इस निय्यत से ज़ाहिर करना कि लोग उस की **आवभगत** करें। उसे नुमायां जगह पर बिठाएं।

मदीना: बहारे शरीअ़त में है **:** आ़लिम अगर अपना आ़लिम होना लोगों पर ज़ाहिर करे तो उस में ह़-रज नहीं मगर येह ज़रूरी है कि तफ़ाख़ुर (फ़ख़्र जताने) के तौ़र पर येह इज़हार न हो कि तफ़ाख़ुर ह़राम है बल्कि मह़ज़ तह़दीसे ने'मते इलाही के लिये येह ज़ाहिर हुवा और येह मक़्सद हो कि जब लोगों को ऐसा मा'लूम होगा तो इस्तिफ़ादा करेंगे कोई दीन की बात पूछेगा और कोई पढ़ेगा। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 16, स.270)

(11) **ह़ज** करने वाले का बिला ज़रूरत अपना **ह़ाजी** होना इस निय्यत से ज़ाहिर करना कि लोग उस की ता'ज़ीम करें।

(12) **इज़हारे फ़ख़्र** के लिये मश्हूरो मा'रूफ़ मशाइख़ से मुलाक़ात या उन की सोह़बत में रहने या उन से रिश्तेदारी का दा'वा इस **निय्यत** से करना कि लोग उसे भी मुअ़ज़्ज़म समझें और उस की राह में आंखें बिछाएं।

(13) **आ़जिज़ी** या हमदर्दी के ऐसे अल्फ़ाज़ बोलना जिन की दिल **ताईद** न करता हो, म-सलन मैं तो बहुत **कमीना** हूं, मैं तो आप के दर का कुत्ता हूं (और जब कोई उसे इन अल्फ़ाज़ से मुख़ातिब करने की हिम्मत कर बैठे तो येह आपे से बाहर हो जाए)

(14) अपनी नेकियों का **बिला ज़रूरत** इज़हार इस निय्यत से करना ताकि लोगों के दिलों में उस की **इ़ज़्ज़त व मर्तबे** में

इज़ाफ़ा हो जाए।

(15) मुनाज़िराना अन्दाज़े गुफ़्त-गू इस निय्यत से इख़्तियार करना ताकि सुनने वाले उस की फ़क़ाहत और ज़हानत के क़ाइल हो जाएं।

ख़बरदार ! ख़बरदार ! ख़बरदार ! किसी भी मुसल्मान को (बिल्ख़ुसूस जिन का ज़िक्र हुवा) **रियाकार** गुमान न कीजिये, **आ'ला ह़ज़रत** इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : लाखों मसाइल व अह़काम, निय्यत के फर्क से तब्दील हो जाते हैं (फ़तावा र-ज़विय्या जि.-8,स.-98) बदगुमानी ह़राम है औ र नेक मुसल्मान से ह़ुस्ने ज़न रखना मुस्तह़ब है। हम में से हर एक को चाहिये कि कलाम के ज़रीए होने वाली रियाकारी की इन सूरतों को अपने आप में तलाश करे।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

''*अपनी नेकियां छुपाइये*'' के पन्दरह ह़रूफ़ की निस्बत से फ़े'ल (या 'नी अ़मल) के ज़रीए रियाकारी की 15 सूरतें

(1) **गुफ़्त-गू** या बयान करने या सुनने या ना'त शरीफ़ पढ़ने या सुनने के दौरान इस निय्यत से **आबदीदा** हो जाना कि देखने वाले उसे **ख़ौफ़े ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ रखने वाला, बहुत बड़ा **आ़शिक़े रसूल** समझें।

(2) **लोगों** की मौजूदगी में या किसी मह़फ़िल में मुसल्सल **होंट हिलाते** रहना ताकि लोग उसे कसरत से **ज़िक्रुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ करने वाला या दुरूदे पाक पढ़ने वाला समझें।

(3) फ़क़त **इस** लिये ज़बानी बयान करना कि लोग उसे बहुत बड़ा **आ़लिम** तसव्वुर करें या देख कर बयान करने से इस लिये कतराना कि सुनने वाले कहीं उसे **जाहिल** न समझें।

(4) **बाहर** अ़फ़्वो दर गुज़र और आ़जिज़ी का पैकर बने रहना और घर में ऐसा शेरे बबर कि नाक पर मख्खी न बैठने दे।

(5) **लोगों** के सामने **ख़ुश** अख़्लाक़ी का इश्तिहार हो और घर वाले उस की **बद अख़्लाक़ी** से बेज़ार हों।

(6) **लोगों** के सामने **ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़** से तमाम आदाब बजा लाते हुए नमाज़ पढ़े तन्हाई में ऐसी कि फ़राइज़ व वाजिबात पूरे होना मश्कूक हो जाए।

(7) **जल्वत** में (या'नी लोगों के सामने) तो खाने, पीने, बैठने और दीगर सुन्नतों पर खूब **अ़मल** करना, मगर ख़ल्वत (या'नी तन्हाई) में सुस्ती करना।

(8) **लोगों** के सामने **सख़ावत** का मौक़अ़ मिले तो किसी से पीछे न रहे मगर कोई अकेले में **मदद** के लिये दरख़्वास्त करे तो ह़ीले बहाने करे।

(90 **किसी** दा'वत में जाना पड़े तो इस लिये कम खाए कि शु-रका उसे मुत्तबेए़ सुन्नत (या'नी सुन्नत की पैरवी करने वाला) और क़लीलुल ग़िज़ा (या'नी कम खाने वाला) तसव्वुर करें मगर जब घर में या बे तकल्लुफ़ दोस्तों के दरमियान हो तो दूसरों का ह़िस्सा भी चट कर जाए।

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه हमें समझाते हुए फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द अव्वल सफ़्ह़ा 752 पर लिखते हैं : बेशक उ़म्र

भर डट कर खाए तब भी गुनहगार नहीं और अगर ज़िन्दगी में एक बार भी **रियाकार** बना तो गुनहगार और अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार है। इस्लामी भाइयों के सामने तो संभल कर थोड़ा सा खाए ताकि येह तअस्सुर क़ाइम हो कि वाह भई ! इस ने **पेट का क़ुफ़्ले मदीना** लगाया हुवा है और फिर ''खाऊं खाऊं'' करता हुवा घर पहुंचे और भूके शेर की त़रह़ ग़िज़ाओं पर टूट पड़े ऐसा शख़्स पक्का रियाकार और दोज़ख़ का ह़क़दार है। बेशक वोह इस्लामी भाई बहुत अ़क़्लमन्द है जो दूसरों के सामने इस त़रह़ खाए कि उस की **कमख़ोरी** का किसी को अन्दाज़ा न हो सके और घर वग़ैरा में ख़ूब अच्छी त़रह़ पेट का क़ुफ़्ले मदीना लगाए रखे। अ़मल सिर्फ़ व सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये होना चाहिये कि **इख़्लास क़बूलिय्यत की कुन्जी है।**

रियाकारियों से बचा या इलाही
कर इख़्लास मुझ को अ़त़ा या इलाही

दूसरों की मौजूदगी में कम खाने का त़रीक़ा

(अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मज़ीद लिखते हैं) दूसरों की मौजूदगी में रियाकारी या मेज़बान वग़ैरा के इसरार से बचने के लिये एक त़रीक़ा येह भी हो सकता है कि तीन उंगलियों से छोटे छोटे निवाले ले कर ख़ूब चबा कर खाइये और हमेशा इन सुन्नतों का ख़याल रखिये। बिल्ख़ुसूस दा'वतों में अक्सर लोग जल्द जल्द खाते हैं लिहाज़ा हो सकता है खाने की मश्ग़ूलिय्यत उन्हें आप से बे तवज्जोह रखे। अगर फिर भी आप ख़ुद को जल्द फ़ारिग़ होता महसूस फ़रमाएं तो इत्मीनान से हड्डियां चूसते रहिये। उम्मीद है इस त़रह़ आप सब के साथ फ़राग़त ह़ासिल करने में काम्याब हो

जाएंगे। सब के सामने जल्दी जल्दी हाथ खींच लेना अगर **रिया या'नी** दिखावे की ख़ातिर हो कि लोग समझें कि नेक आदमी है और तक़्वे की वजह से कम खाता है तो ऐसा करना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। **रियाकारी** से अपने आप को बचाना बहुत ज़रूरी है। सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस अ़मल को क़बूल नहीं फ़रमाता जिस में एक ज़र्रे के बराबर भी रिया (या'नी दिखावा) हो।

(अत्तरग़ीब वत्तरहीब, जि.1, स.87) (फ़ैज़ाने सुन्नत, जिल्द अव्वल, सफ़्ह़ा:752)

(10) **अगर** नफ़्ली रोज़ा रखे हुए हो तो लोगों के सामने होंटों पर ज़बान फेरे या ऐसी ह़-र-कतें करे जिस से लोग उस के **रोज़ादार** होने पर आगाह हो जाएं।

(11) **कसीर** मज्मअ़ के सामने ईको साउन्ड पर ना'त शरीफ़ पढ़ने का मौक़अ़ मिले तो ख़ूब **झूम झूम** कर पढ़े और ईको साउन्ड न हो या थोड़े लोग हों या तन्हाई में पढ़े तो थोड़ी ही देर में गला थक जाए।

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه हमें समझाते हुए अपने रिसाले "**शैत़ान के चार गधे**" के सफ़्ह़ा 39 पर लिखते हैं: **हुस्ने** क़िराअत या ना'तख़्वानी के मुक़ाबले में जो दुव्वुम आया वोह अव्वल आने वाले से, और जो सिव्वुम आया वोह दुव्वुम और अव्वल आने वाले से अगर ह़सद करता है या तो अपने ज़ो'म में येह समझता है कि मैं ने बेहतरीन आवाज़ में क़िराअत की या ना'ते पाक पढ़ी मगर फिर भी मैं सिव्वुम रहा और लोगों से कहता है, येह **मुन्सिफ़ीन** (जज साह़िबान) की ना इन्साफ़ी है। तो तोहमत और ग़ीबत वग़ैरा बद गुमानी की **आफ़त** में

फंसा । इस में **रियाकारी** के भी ख़त़रात हैं जब कि उस ने ना'ते पाक **अल्लाह** और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये नहीं सिर्फ़ **''तम्ग़ा''** ह़ासिल करने, ट्रॉफ़ी जीतने, इन्आ़म या रक़म ह़ासिल करने के लिये पढ़ी थी और इसी लिये कोशिश की थी कि मैं अव्वल आ जाऊं ताकि अख़्बारात में मेरी तस्वीर या नाम आ जाए और मेरी ख़ूब वाह ! वाह ! हो, सब मेरी आवाज़ की दाद देते हों, मुबारकबाद व तह़ाइफ़ पेश करते हों वग़ैरा । इस त़रह़ **सवाब** की कोई उम्मीद नहीं बल्कि **रियाकारी** की आफ़त में मुब्तला होने के सबब अ़ज़ाब का इस्तिह़क़ाक़ है । इस त़रह़ के ''मुक़ाबले'' शरअ़न दुरुस्त हैं मगर शिर्कत करने वाले को अपने दिल पर ग़ौर कर लेना चाहिये कि उस में कितना इख़्लास है ।

दो शे'र ब-र-कत के लिये पढ़ने दीजिये

कहीं कसीर इज्तिमाअ़ हो, ईको साउन्ड लगा हुवा हो तो अ़वाम का इज्दिह़ाम देख कर तक़रीबन हर एक को माइक पर आ कर बयान करने, क़िराअत करने या ना'त शरीफ़ पढ़ने को जी चाहता होगा, अगर ना'तें रेकॉर्डिंग की गई हों तो फिर केसिट में सिर्फ़ अपनी पढ़ी हुई ना'त शरीफ़ की तलाश होगी कि मेरी भी कहीं आवाज़ है या नहीं ! अगर केसिट में आवाज़ नहीं तो रन्जीदा होता होगा, इस त़रह़ येह ग़मगीन होना कैसा ? नीज़ ख़ुश इल्ह़ान क़ारी व ना'त ख़्वान की येह आरज़ू कि मेरी केसिट बाज़ार में आनी चाहिये, क्या इस आरज़ू में **इख़्लास** की भी कोई उम्मीद है ? अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये क़िराअत व ना'त थी या केसिट के लिये ? अगर कहीं बहुत बड़ा इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त हो रहा है ईको साउन्ड लगा हुवा है तो बा'ज़

कहेंगे, कि हुसूले ब–र–कत के लिये दो अश्आ़र मुझे भी पढ़ने दिये जाएं। बराए महरबानी अपने दिल के अन्दर झांक कर देखिये कि **ब–र–कत चाहिये या शोहरत !** अगर वाक़ेई आप को **ब–र–कत** ही की त़लब है तो मेरा म–दनी मश्वरा है कि घर का बन्द कमरा हो और तसव्वुरे गुम्बदे ख़ज़रा हो फिर ना'त शरीफ़ पढ़िये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ **रियाकारी** से भी बचत और ब–र–कत ही ब–र–कत बल्कि اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ब–र–कात की बरसात होगी और आप का नामए आ'माल ह़सनात के नूर से भरपूर हो जाएगा। اَلْعَاقِلُ تَكْفِيْهِ الْاِشَارَةُ या'नी अ़क़्लमन्द के लिये इशारा काफ़ी है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें इख़्लास अ़ता फ़रमाए।

दिल में हो याद तेरी गोशए तन्हाई हो
फिर तो ख़ल्वत में अ़जब अन्जुमन आराई हो

(ज़ौक़े ना'त)

(माख़ूज़ अज़ रिसाला ''शैत़ान के चार गधे'' स.39)

(12) **बयान** में अ़वाम की ता'दाद ज़ियादा तो **जोशे ख़ित़ाबत** का यादगार मुज़ाहरा और अगर किसी वजह से ता'दाद कम हो तो सारा **जोश ठंडा** पड़ जाए या बयान करने को ही जी न चाहे।

(13) **अगर** क़िस्मत से शब बेदारी करने या तहज्जुद पढ़ने का मौक़अ़ मिले तो दिन में लोगों के सामने आंखें मले या इस अन्दाज़ से अंगड़ाइयां वग़ैरा ले कि इस की **शब बेदारी** का सब को पता चल जाए।

(14) **लोगों** के सामने तो औ़रत को आता देख कर निगाहें **झुका** ले और अगर लोगों की निगाहों से ओझल हो तो टिकटिकी बांध कर बद निगाही करे।

(15) **गाने** बाजे की आवाज़ आने पर लोगों के सामने कानों में उंगलियां डाल ले ताकि लोग उसे **मुत्तबेए शरीअ़त** तसव्वुर करें और ह़ाल येह हो कि घर या मोबाइल वग़ैरा में म्यूज़ीकल ट्यून वाली घन्टी लगवाई हुई हो।

इसी त़रह़ ग़ौर करते चले जाएंगे तो हमें पता चलेगा कि लिबास, गुफ़्तार, किरदार में कैसे कैसे अन्दाज़ से **रियाकारी** हो सकती है। ऐ़न मुम्किन है कि किसी की दुखती **रग** पर हाथ पड़ गया हो, ऐसे इस्लामी भाइयों को भी चाहिये कि नाराज़ होने के बजाए बा'दे तौबा अपने इ़लाज की तरकीब बनाएं।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! याद रहे कि हमें किसी मुसल्मान के किसी फ़े'ल पर **बद गुमानी** नहीं करनी, क्यूंकि बद गुमानी ह़राम है और नेक मुसल्मान से हुस्ने ज़न रखना **मुस्तह़ब** है। बल्कि ऐसे अफ़्आ़ल करने वालों को चाहिये कि रियाकारी की इन सूरतों को अपने आप में तलाश करने के बा'द इ़लाज की तदबीर करें।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

रियाकारी किन चीज़ों में होती है ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रियाकारी मुम्किना त़ौर पर तीन चीज़ों में हो सकती है **:**

(1) **ईमान** में..... (2) **दुन्यवी** मुआ़मलात में.... (3) **इ़बादात** में।

इन की ज़रूरी **तफ़्सील** मुला-ह़ज़ा हो **:**

(1) ईमान में रिया

ज़ाहिरी तौ़र पर मुसल्मान होना और बाति़न में इस्लाम को झुटलाने वाला, इस रिया को **निफ़ाक़** भी कहते हैं या'नी ज़बान से इस्लाम का दा'वा करना और दिल में इस्लाम से इन्कार करना, येह भी **ख़ालिस कुफ़्र** है। ऐसा शख़्स मुनाफ़िक़ है और दा'वए ईमान में झूटा है।

اِذَا جَآءَكَ الْمُنٰفِقُوْنَ قَالُوْا نَشْهَدُ اِنَّكَ لَرَسُوْلُ اللّٰهِ ۘ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِنَّكَ لَرَسُوْلُهٗ ؕ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَكٰذِبُوْنَ ۚ﴿۱﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जब मुनाफ़िक़ तुम्हारे हु़ज़ूर ह़ाज़िर होते हैं कहते हैं कि हम गवाही देते हैं कि हु़ज़ूर बेशक यक़ीनन **अल्लाह** के रसूल हैं और **अल्लाह** जानता है कि तुम उस के रसूल हो, और **अल्लाह** गवाही देता है कि मुनाफ़िक़ ज़रूर झूटे हैं।

ऐसे लोगों के लिये जहन्नम का सब से निचला त़बक़ा है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने क़ुरआने मजीद में इस के बारे में फ़रमाया :

اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ فِي الدَّرْكِ الْاَسْفَلِ مِنَ النَّارِ ۚ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक मुनाफ़िक़ दोज़ख़ के सब से नीचे त़बक़े में हैं। (पा.5, अन्निसा:145)

सरवरे काएनात, शहन्शाहे मौजूदात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाहिरी ह़यात के ज़माने में इस सिफ़त के कुछ अफ़राद ब तौ़रे **मुनाफ़िक़ीन** मश्हूर हुए, उन के बाति़नी कुफ़्र को **क़ुरआने मजीद** में बयान किया गया है। नीज़ **सुल्ता़ने मदीना** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ब अ़त़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ **अपने वसीअ़ इ़ल्म** से एक एक को पहचाना और नाम बनाम फ़रमा दिया कि येह येह

मुनाफ़िक़ हैं। (अल मो'जमुल अवसत़, अल ह़दीस:792, जि.1, स.231) अब इस ज़माने में किसी मख़्सूस शख़्स की निस्बत यक़ीन से कहना कि वोह **मुनाफ़िक़** है मुम्किन नहीं कि हमारे सामने जो इस्लाम का दा'वा करे हम उसे **मुसल्मान** ही समझेंगे। (अल यवाक़िय्यत, जि.2, स.373) जब तक कि **ईमान** के मुनाफ़ी (या'नी ईमान के उलट) कोई क़ौल (बात) या फ़े'ल (काम) उस से सरज़द न हो। अलबत्ता **निफ़ाक़** या'नी मुनाफ़क़त की एक शाख़ इस ज़माने में भी पाई जाती है कि बहुत से **बद मज़हब** अपने आप को मुसल्मान कहते हैं और देखा जाए तो **इस्लाम** के दा'वे के साथ साथ बहुत से ज़रूरियाते दीन का इन्कार भी करते हैं।

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा अव्वल, स.96, मुलख़्ख़सन)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(2) दुन्यवी मुआ़मलात में रिया

कभी रियाकारी का इ़त्लाक़ उस पर भी होता है कि कोई शख़्स दुन्यावी अ़मल के ज़रीए़ लोगों में अपनी **इ़ज़्ज़त व मर्तबा** क़ाइम होने की ख़्वाहिश करे। म-सलन वोह इस लिये साफ़ सुथरा, ख़ुश्बू में बसा हुवा और अच्छा लिबास ज़ेबे तन करता है कि लोग उस की जानिब मुतवज्जेह हों और घर में उस की ह़ालत इस के बर ख़िलाफ़ होती है। लोगों के लिये की जाने वाली हर आराइशो ज़ैबाइश और इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई को इसी पर क़ियास कर लीजिये।

शर-ई हुक्म : ऐसी रियाकारी ह़राम नहीं क्यूंकि इस में दीनी मुआ़मलात की तल्बीस (या'नी मिलावट) और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस्तिहज़ा नहीं पाया जाता (अज़्वाजिर अ़न इक़्तिराफ़िल कबाइर, जि.1, स.78) **इमाम ग़ज़ाली** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى

फ़रमाते हैं : लोगों के दिलों में अपना मक़ाम बनाना अगर इ़बादात के इलावा दीगर उमूर से हो तो येह माल त़लब करने की त़रह़ है लिहाज़ा ह़राम नहीं है । (एह़याउल उ़लूम, كتاب ذم الجاه والرياء،فصل الثانى जि.3, स.368)

ह़दीक़तुन्नदिय्या में है : दुन्यावी काम अगर ह़क़ीक़त के छुपाने और झूट से ख़ाली हैं और वोह काम करने वाला उन की वजह से किसी मम्नूअ़, ह़राम या मकरूह में नहीं पड़ता तो इन में रियाकारी ह़राम नहीं । लेकिन ऐसी रियाकरी **मज़्मूम** है क्यूंकि येह दीन में रियाकारी की त़रफ़ ले जाती है ।

واللّٰهُ تَعَالٰی اَعْلَمُ (अल ह़दीक़तुन्नदिय्या, जि.1, स.478)

बहर ह़ाल मुबाह़ कामों में भी अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ करने पर सवाब भी कमाया जा सकता है । म-सलन ख़ुश्बू लगाने में इत्तिबाए़ सुन्नत, ता'ज़ीमे मस्जिद, फ़रह़ते दिमाग़ और अपने इस्लामी भाइयों से ना पसन्दीदा बू दूर करने की निय्यतें हों तो हर निय्यत का अलग **सवाब** होगा । (अशिअ़्अ़तुल्लम्आ़त, जि.1, स.37)

सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने गेसू मुबारक संवारे

सरकारे वाला तबार, बेकसों के मददगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जब अपने दौलत कदे से बाहर तशरीफ़ लाने का इरादा फ़रमाया तो अपने इमामा शरीफ़ और गेसूओं को **दुरुस्त** फ़रमाया और आईने में अपना मुबारक चेहरा मुला-ह़ज़ा फ़रमाया तो ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी ऐसा कर रहे हैं?" तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "हां ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बन्दे का बनना संवरना उस वक़्त पसन्द

फ़रमाता है जब वोह अपने भाइयों के पास जाने लगे ।”

(इत्तिहाफुस्सादतुलमुत्तक़ीन, كتاب ذم الجاه والرياء، باب بيان حقيقة الرياء जि.10, स.93,94)

इमाम गज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى इस ह़दीस के तह़त लिखते हैं : “शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये येह एक मुअक्कदा इ़बादत थी, क्यूंकि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मख़्लूक़ को दा'वत देने और ह़त्तल इम्कान उन के दिलों को दीने ह़क़ की त़रफ़ **माइल** करने पर मामूर हैं, क्यूंकि अगर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم लोगों की नज़रों में **मुअ़ज़्ज़ज़** न होते तो वोह आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मुंह फेर लेते लिहाज़ा आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर लोगों के सामने अपने उ़म्दा तरीन अह़वाल ज़ाहिर करना लाज़िम था ताकि लोग आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ना क़ाबिले ए'तिबार समझ कर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मुंह न फेरें क्यूंकि आ़म लोगों की निगाह ज़ाहिरी अह़वाल पर ही होती है मख़्फ़ी उमूर पर नहीं होती। नीज़ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह अ़मल भी नेकी ही था। येही हुक्म **उ़-लमाए किराम** رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى और उन जैसे दीनदार लोगों के लिये है जब कि वोह अपनी अच्छी हैअत से वोही **निय्यत** करें जो ऊपर बयान हुवा।”

(एह़्याउल उ़लूम, كتاب ذم الجاه والرياء، فصل الثانى जि.3, स.368)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(3) इबादात में रियाकारी

इबादात में दो तरह से **रियाकारी** हो सकती है ।

(i) अदाएगी में रियाकारी, और (ii) अवसाफ़ में रियाकारी

(1) अदाएगी में रियाकारी :

इस की सूरत येह है कि कोई शख़्स लोगों के सामने तो इबादत करे, अगर कोई देखने वाला न हो तो **न करे** । म-सलन लोगों के सामने हो तो नमाज़े पढ़े तन्हाई में न पढ़े, कोई देखने वाला हो तो रोज़ा रखे वरना नहीं । नमाज़े जुमुआ़ में लोगों की मज़म्मत के ख़ौफ़ से हाज़िर हो, लोगों के ख़ौफ़ की वजह से रिश्तेदारों से नेक सुलूक करे तो ऐसा शख़्स **रियाकार** है ।

शर-ई हुक्म : ऐसे शख़्स को इबादत का सवाब नहीं मिलेगा बल्कि येह सख़्त **गुनाहगार** और अ़ज़ाबे नार का **हक़दार** है, **अ़ल्लामा** अ़ब्दुल ग़नी नाब्लिसी علیہ رحمۃ اللہ الھادی हदीक़तुन्नदिय्या में नक़्ल करते हैं : "अगर किसी शख़्स ने लोगों को दिखाने के लिये नमाज़ पढ़ी तो उस के लिये कुछ **सवाब** नहीं उल्टा उस को गुनाह मिलेगा कि उस ने नेकी नहीं बल्कि गुनाह किया ।" (हदीक़तुन्नदिय्या, जि.1, स.478, मुलख़्ख़सन) लेकिन उस का फ़र्ज़ अदा हो जाएगा । **आ'ला** हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, अश्शाह मौलाना अहमद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن से किसी ने दरयाफ़्त किया कि अगर रिया के लिये नमाज़ रोज़ा रखा तो फ़र्ज़ अदा होगा या नहीं ? इर्शाद फ़रमाया : फिक़्ही नमाज़ रोज़ा हो जाएगा कि मुफ़्सिद (या'नी नमाज़ या रोज़ा तोड़ने वाला कोई काम) न पाया गया, **सवाब** न मिलेगा, बल्कि अ़ज़ाबे नार का मुस्तहिक़ होगा । रोज़े क़ियामत उसे कहा

जाएगा : ''ओ फ़ाजिर ! ओ ग़ादिर ! ओ ख़ासिर ! ओ काफ़िर ! तेरा अ़मल ह़बत़ (या'नी ज़ाएअ़) हुवा, अपना अज्र उस से मांग जिस के लिये करता था ।'' (मुल्तक़ितन, शुअ़बुल ईमान, باب فی اخلاص العمل .....الخ، الحدیث अल ह़दीस:6831, जि.5, स.333) येही एक बुराई रिया की मज़म्मत को काफ़ी है।

(मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, ह़िस्सा अव्वल, स.177, मत़्बूआ़ मक-त-बतुल मदीना)

सद्रुश्शरीआ़, बद्रुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अम्जद अ़ली आ'ज़मी علیہ رَحمَۃُ اللہِ القَوی मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ **बहारे शरीअ़त** ह़िस्सा 16 सफ़ह़ा 238 पर फ़रमाते हैं : ''इ़बादत कोई भी हो उस में **इख़्लास** निहायत ज़रूरी चीज़ है, या'नी मह्ज़ रिज़ाए इलाही के लिये अ़मल करना ज़रूरी है । **दिखावे के त़ौर पर अ़मल करना बिल इज्माअ़ ह़राम है ।**'' सफ़ह़ा 239 पर मज़ीद फ़रमाते हैं : ''लोगों के सामने नमाज़ पढ़ता है और कोई देखने वाला न होता तो पढ़ता ही नहीं, **येह रियाए कामिल** है कि ऐसी इ़बादत का बिल्कुल **सवाब** नहीं।''

ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الحَنَّان फ़रमाते हैं : ''**रिया वाली इबादत घुने हुए तुख़्म** (या'नी वोह बीज जिसे घुन(कीड़े) ने खा कर अन्दर से रेज़ा रेज़ा कर के बेकार कर दिया हो) **की त़रह़ है जिस से पैदावार नहीं होती ।**'' (मिर्आतुल मनाजीह़, जि.7, स.143)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर किसी को फ़र्ज़ अदा करने में रिया की मुदाख़लत का अन्देशा हो तो इस मुदाख़लत की वजह से फ़र्ज़ न छोड़े बल्कि फ़र्ज़ अदा करे और रिया को दूर और **इख़्लास** ह़ासिल करने की कोशिश करे।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(2) अवसाफ़ में रियाकारी:

इस से मुराद येह है कि कोई शख़्स लोगों को **दिखाने** के लिये बहुत **ख़ूबी के** साथ इबादत अदा करे। म-सलन लोगों की मौजूदगी में अरकाने नमाज़ बहुत **ज़्मदगी** और ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ से अदा करे और जब अकेला हो तो जल्दी जल्दी पढ़े। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "जो शख़्स येह काम करे वोह अपने रब عَزَّوَجَلَّ की तौहीन करता है।" या'नी उसे इस बात की परवाह नहीं कि **अल्लाह** तआ़ला उसे ख़ल्वत (या'नी तन्हाई) में भी देख रहा है और जब कोई आदमी देख रहा हो तो वोह अच्छी त़रह़ नमाज़ पढ़ता है। इमाम **ग़ज़ाली** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی हमें येह बात एक मिसाल के ज़रीए यूं समझाते हैं कि जो किसी शख़्स के सामने टेक लगा कर या चारज़ानू बैठा हो, फिर उस शख़्स का ग़ुलाम आ जाए तो वोह सीधा हो कर अच्छी त़रह़ बैठ जाए तो येह शख़्स उस ग़ुलाम को उस के मालिक पर फ़ौक़िय्यत देता है और येह यक़ीनन उस के मालिक की **तौहीन** है, रियाकार की ह़ालत भी येही है कि वोह मजलिस में अच्छी त़रह़ नमाज़ पढ़ता है तन्हाई में नहीं या'नी गोया बन्दों को उन के मालिक عَزَّوَجَلَّ पर **फ़ौक़िय्यत** देता है।

(एह्याउल उ़लूम, کتاب ذم الجاہ والریاء،فصل الثانی, जि.3, स.372)

आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत अश्शाह मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن से किसी ने दरयाफ़्त किया कि अगर कोई तन्हा ख़ुशूअ़ के लिये नमाज़ पढ़े और आ़दत डाले ताकि सब के सामने भी ख़ुशूअ़ हो तो येह रिया है या क्या ? इर्शाद फ़रमाया : येह भी रिया है कि दिल में निय्यते ग़ैरे ख़ुदा है। (मल्फ़ूज़ात, ह़िस्सा दुवुम, स.166)

शर-ई हुक्म : रियाकारी की येह क़िस्म पहली से कम द-रजा की है, ऐसे शख़्स को अस्ल इ़बादत का **सवाब** तो मिलेगा मगर **उ़म्दा** पढ़ने का सवाब न मिलेगा। **रियाकारी** का वबाल बहर ह़ाल उस की गरदन पर होगा। **बहारे शरीअ़त** ह़िस्सा 16 सफ़्ह़ा 239 में है : "(रियाकारी की) दूसरी सूरत येह है कि अस्ल इ़बादत में रिया नहीं, कोई होता या न होता बहर ह़ाल नमाज़ पढ़ता मगर वस्फ़ में **रिया** है कि कोई देखने वाला न होता जब भी पढ़ता मगर इस ख़ूबी के साथ न पढ़ता। येह दूसरी क़िस्म पहली से कम द-रजे की है उस में अस्ल नमाज़ का **सवाब** है और ख़ूबी के साथ अदा करने का जो सवाब है वोह यहां नहीं कि येह रिया से है **इख़्लास से नहीं।**"

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

रियाए ख़ालिस और मख़्लूत़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इ़बादात में पाया जाने वाला रिया कभी ख़ालिस होता है और कभी **मख़्लूत़** (या'नी मिलावट वाला) **:**

(**1**) अगर इ़बादत से मह़्ज़ मख़्लूक़ को राज़ी करना या दुन्यवी नफ़्अ़ ह़ासिल करना मक़्सूद हो तो उसे **रियाए ख़ालिस** कहते हैं। इस का शर-ई हुक्म येह है कि अगर **अस्ले इ़बादत** में रिया होगी तो सवाब से **मह़रूम** रहने के साथ साथ रियाकारी की सज़ा भी मिलेगी और अगर रियाकारी **वस्फ़े इ़बादत** में हो तो जो ख़ूबी इ़बादत में पैदा हुई उस का **सवाब** नहीं मिलेगा और ऐसे शख़्स पर **रियाकारी** का वबाल होगा।

और (2) अगर दुन्यवी नफ़्अ़ ह़ासिल करने के साथ साथ सवाबे आख़िरत भी पेशे नज़र हो तो उसे **रियाए मख़्लूत़** कहते हैं। इस की

चन्द सूरतें हैं :

(1) दुन्यवी नफ़्अ़ का इरादा, निय्यते सवाब पर ग़ालिब होगा तो सवाब **नहीं** मिलेगा ।

(2) दुन्यवी नफ़्अ़ का इरादा, निय्यते सवाब के बराबर होगा तो भी सवाब **नहीं** मिलेगा ।

(3) निय्यते सवाब दुन्यवी नफ़्अ़ के इरादे पर ग़ालिब होगी (या'नी दुन्यवी नफ़्अ़ का इरादा, निय्यते सवाब से मग़्लूब होगा) तो निय्यत के मुताबिक़ **सवाब** मिलेगा ।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی इर्शाद फ़रमाते हैं : ''अगर दुन्या की निय्यत ग़ालिब हो तो उसे कोई **सवाब** नहीं मिलेगा और अगर आख़िरत की निय्यत ग़ालिब हो तो उसे **सवाब** मिलेगा और अगर दोनों निय्यतें बराबर हों तब भी सवाब नहीं मिलेगा ।'' **मज़ीद** इर्शाद फ़रमाया : ''अगर किसी शख़्स की इ़बादत का लोगों पर ज़ाहिर होना उस के नशात़ में इज़ाफ़ा और क़ुव्वत पैदा करता है और अगर लोगों पर उस की इ़बादत ज़ाहिर न होती तब भी वोह इ़बादत न छोड़ता फिर अगर्चे उस की निय्यत रिया ही की हो तो हमारा गुमान है कि उस का अस्ल सवाब ज़ाएअ़ न होगा, रिया की मिक़्दार के मुताबिक़ उसे सज़ा मिलेगी जब कि सवाब की निय्यत जितना सवाब उसे मिलेगा ।'' (अज़्वाजिर अ़न इक़्तिराफ़िल कबाइर, जि.1, स.78)

बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 16 सफ़्ह़ा 240 में है : जो शख़्स ह़ज को गया और साथ में अम्वाले तिजारत भी ले गया, अगर तिजारत का ख़याल ग़ालिब है या'नी तिजारत करना मक़्सूद है और वहां पहुंच जाऊंगा ह़ज भी कर लूंगा पहलू बराबर हैं या'नी सफ़र ही दोनों मक़्सद से किया तो इन दोनों सूरतों में सवाब नहीं या'नी जाने का **सवाब** नहीं और अगर मक़्सूद

ह़ज करना है और येह कि मौक़अ़ मिल जाएगा तो माल भी बेच लूंगा तो ह़ज का **सवाब** है। इसी त़रह़ अगर जुमुआ़ पढ़ने गया और बाज़ार में दूसरे काम करने का भी ख़याल है, अगर अस्ली मक़्सूद जुमुआ़ ही को जाना है तो इस जाने का सवाब है और अगर काम का ख़याल **ग़ालिब** है या दोनों **बराबर** तो जाने का **सवाब** नहीं।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ख़िदमते दीन पर उजरत लेना कैसा ?

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن **फ़तावा र-ज़विय्या** (मुख़र्रजा) जिल्द 19 सफ़्ह़ा 494 पर फ़रमाते हैं : क़ुरआने अ़ज़ीम की ता'लीम, दिगर दीनी उ़लूम, अज़ान और इमामत पर उजरत लेना जाइज़ है, जैसा कि मुतअख़्ख़िरीन आइम्मा ने मौजूदा ज़माना में शआ़इरे दीनो ईमान की ह़िफ़ाज़त के पेशे नज़र फ़त्वा दिया है और बाक़ी त़आ़त म-सलन ज़ियारते क़ुबूर, अम्वात के लिये ख़त्मे क़ुरआन, क़िराअत, मीलादे पाके सय्यिदुल काएनात علیه وعلی آله افضل الصلوٰة والتحیات, पर अस्ल ज़ाबिते की बिना पर **मन्अ़** बाक़ी है। وَاللّٰهُ تَعَالٰى اَعْلَمُ

क्या उजरत लेने वाले को सवाब मिलेगा ?

किसी ने **आ'ला ह़ज़रत** इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن से पूछा कि इमामे जुमुआ़ और इमामे पन्ज वक़्ता का अक्सर जगहों पर तनख़्वाह कर के लेना जाइज़ या नहीं ? ता'लीमे क़ुरआन और ता'लीमे फ़िक़्ह़ व अह़ादीस की उजरत लेना जाइज़ है या नहीं ? तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इन सुवालात का बित्तरतीब जवाब देते हुए इर्शाद फ़रमाया : (1) जाइज़ है मगर इमामत का **सवाब** न पाएंगे कि **इमामत** बेच चुके,

(2) जाइज़ है और इन के लिये आख़िरत में इन पर **सवाब** कुछ नहीं, **واللّٰهُ تَعَالٰی اَعْلَمُ** । (फ़तावा र-ज़विय्या, जि.19, स.494)

लिहाज़ा अगर सख़्त मजबूरी न हो तो बिला उजरत इन ख़िदमात को अन्जाम दे कर आख़िरत के लिये सवाब का ख़ज़ाना इकठ्ठा कीजिये कि जिस का अ़मल हो बे ग़-रज़ उस की जज़ा कुछ और है । मगर बिला मुआ़वज़ा मज़्कूरा ख़िदमात अन्जाम देने में एक इम्तिहान सख़्त इम्तिहान येह है कि जो बिग़ैर उजरत लिये इमामत या तदरीस वग़ैरा करता है उस की काफ़ी वाह ! वाह ! होती है, ऐसी सूरत में वोह बेचारा अपने आप को न जाने किस त़रह़ रियाकारी से बचा पाता होगा ! ज़हे मुक़द्दर ! ऐसा जज़्बा नसीब हो जाए कि तनख़्वाह ले ले और चुपचाप ख़ैरात कर दे मगर अपने क़रीबी किसी एक इस्लामी भाई बल्कि घर के किसी फ़र्द को भी न बताए, वरना **रियाकारी** से बचना दुश्वार हो जाएगा । लुत़्फ़ तो इसी में है कि बन्दा जाने और उस का रब عَزَّوَجَلَّ जाने ।

मेरा हर अ़मल बस तेरे वासिते़ हो कर इख़्लास ऐसा अ़ता या इलाही

उजरत लेने वाले के लिये सवाब की एक सूरत

अगर अहलो इ़याल के अख़्राजात किसी के ज़िम्मे हों और वोह इस निय्यत से मज़्कूरा ख़िदमात की उजरत ले कि अगर मुझ पर अपने घर वालों की कफ़ालत की ज़िम्मादारी न होती तो मैं पढ़ाने की उजरत कभी न लेता तो **अल्लाह** तआ़ला की रह़मत से उम्मीद है कि इसे दुगना सवाब मिलेगा, जैसा कि अ़ल्लामा इब्ने आ़बिदीन शामी عليه رحمة الله الغنى **रद्दुल मुह़्तार** में उजरत लेने वाले मुअज़्ज़िन को अज़ान देने का सवाब मिलने

या न मिलने की बह़स में लिखते हैं : ''हां येह कहा जा सकता है कि अगर वोह (या'नी मुअज़्ज़िन) रिज़ाए इलाही का क़स्द करे लेकिन अवक़ात की पाबन्दी और इस काम में मस्रूफ़िय्यत की बिना पर अपने इ़याल के लिये क़-दरे किफ़ायत रोज़ी न कमा सके। चुनान्चे वोह इस लिये उजरत ले कि रोज़ी कमाने की मस्रूफ़िय्यत कहीं उसे इस सआ़दते उ़ज़्मा से महरूम न करवा दे और अगर उसे कोई मज़्कूरा मजबूरी न होती तो वोह उजरत न लेता तो ऐसा शख़्स भी मुअज़्ज़िन के लिये ज़िक्र कर्दा सवाब का मुस्तह़िक़ होगा बल्कि वोह दो इ़बादतों का जामेअ़ (या'नी जम्अ़ करने वाला) होगा, एक अज़ान देना और दूसरी इ़याल की किफ़ालत के लिये सअ़ूय करना, और **आ'माल का सवाब निय्यतों** के मुत़ाबिक़ होता है।''

(ردالمحتار, مطلب فی المؤذن اذا کان.....الخ, ج.2, ص.74)

सवाब ह़ासिल करने का आसान त़रीक़ा

बेहतर येह है कि इजारा काम के बजाए वक़्त पर करे, इस का फ़ाएदा येह होगा कि **सवाब** की निय्यत करने वाले को उजरत के साथ साथ اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ पढ़ाने का सवाब भी मिलता रहेगा। आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की बारगाह में उजरत दे कर मय्यित के ईसाले सवाब के लिये **ख़त्मे क़ुरआन** व ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ करवाने से **मुतअ़ल्लिक़** जब इस्तिफ़्ता पेश हुवा तो जवाबन इर्शाद फ़रमाया : ''**तिलावते क़ुरआन व ज़िक्रे इलाही عَزَّوَجَلَّ पर उजरत लेना देना दोनों ह़राम है।** लेने देने वाले दोनों गुनहगार होते हैं और जब येह फ़े'ले ह़राम के मुर्तकिब हैं तो सवाब किस चीज़ का

अम्वात (या'नी मरने वालों) को भेजेंगे ? गुनाह पर सवाब की उम्मीद और ज़ियादा सख़्त व अशद्द (या'नी शदीद तरीन जुर्म) है। अगर लोग चाहें कि ईसाले सवाब भी हो और त़रीक़ए जाइज़ा शर-इय्या भी ह़ासिल हो (या'नी शरअ़न जाइज़ भी रहे) तो उस की सूरत येह है कि पढ़ने वालों को घन्टे दो घन्टे के लिये नोकर रख लें और तनख़्वाह उतनी देर की हर शख़्स की **मुअ़य्यन** (मुक़र्रर) कर दें। म-सलन पढ़वाने वाला कहे, मैं ने तुझे आज फ़ुलां वक़्त से फ़ुलां वक़्त के लिये इस उजरत पर नौकर रखा (कि) जो काम चाहूंगा लूंगा। वोह कहे, मैं ने क़बूल किया। अब वोह उतनी देर के वासित़े अजीर (या'नी मुलाज़िम) हो गया। जो काम चाहे ले सकता है इस के बा'द उस से कहे फ़ुलां मय्यित के लिये इतना क़ुरआने अ़ज़ीम या इस क़-दर कलिमए त़य्यिबा या दुरूदे पाक पढ़ दो। येह सूरत जवाज़ (या'नी जाइज़ होने) की है। (क्यूंकि अब उन की ज़ात से मनाफ़ेअ़ पर इजारा है, त़ाआ़त व इबादात पर नहीं है)''

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि.10, स.193,194)

इस मुबारक फ़त्वा की रौशनी में इमामत, अज़ान और तदरीस करने वालों की भी तरकीब हो सकती है। मस्जिद या मद्रसे की इन्तिज़ामिया उजरत त़ै कर के मुअ़य्यन वक़्त म-सलन 5 घन्टे के लिये क़ारी साहिब को नौकरी की ऑफ़र करते हुए कहें कि हम जो काम देंगे वोह करना होगा, तनख़्वाह की रक़म भी बता दें। अगर क़ारी साहिब मन्ज़ूर फ़रमा लेंगे तो वोह मुलाज़िम हो गए। अब रोज़ाना उन की इन पांच घन्टों के अन्दर ड्यूटी लगा दें कि वोह बच्चों को क़ुरआन पढ़ा दिया करें। याद रखिये ! चाहे इमामत हो या ख़ित़ाबत, **मुअज़्ज़िनी** हो या किसी क़िस्म की मज़्दूरी जिस काम के लिये भी **इजारा** करते वक़्त येह मा'लूम हो कि यहां उजरत

या तनख़्वाह का लैन दैन यक़ीनी है तो पहले से रक़म **तै** करना वाजिब है, वरना देने वाला और लेने वाला दोनों गुनहगार होंगे।

दीन को दुन्या कमाने का ज़रीआ़ न बनाइये

इमामत, ख़ित़ाबत, मुअज़्ज़िनी, तदरीस यक़ीनन उ़म्दा इबादत है और इन पर उजरत लेना भी जाइज़ है मगर इन्हें दुन्या कमाने का ज़रीआ़ न बनाया जाए क्यूंकि दीन के बहाने **दुन्या** कमाने वालों के लिये अह़ादीसे मुबारका में सख़्त वईदें भी आई हैं। चुनान्चे **रसूले** अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया **:** आख़िर ज़माने में कुछ लोग ज़ाहिर होंगे जो **दीन** के बहाने से **दुन्या** कमाएंगे, लोगों के सामने भेड़ की ख़ाल पहनेंगे, उन की ज़बानें शकर से ज़ियादा मीठी होंगी और उन के दिल भेड़ियों के से होंगे। **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है कि क्या मुझे धोका देते हैं या मुझ पर जुर्अत करते हैं, मैं अपनी क़सम फ़रमाता हूं कि इन लोगों पर इन्ही में से ऐसा फ़ित्ना भेजूंगा जो बुर्दबार को ह़ैरान कर छोड़ेगा।

(जामेइ़त्तिरमिज़ी, کتاب الزھد،باب ماجاء فی ذھاب البصر अल ह़दीस:2412, जि.4, स.181)

ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मौलाना मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी علیہ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوی इस ह़दीस के तह़त लिखते हैं **:** यहां दोनों मा'ना बन सकते हैं या'नी दुन्या को दीन के ज़रीए़ **धोका** खावेंगे या दीन के बहाने **दुन्या** कमाएंगे लोग इस्लाम का नाम ले कर क़ुरआन की आड़ में जुब्बा व दस्तार से फ़रेब दे कर **दुन्या** कमाते हैं येह लोग बदतरीन ख़ल्क़ हैं।

(मिर्आतुल मनाजीह़, जि.7, स.133)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दीन के ज़रीए दुन्या के त़लबगार का अन्जाम

एक शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का ख़ादिम था, जब वोह बहुत ज़ियादा मालदार हो गया तो काफ़ी अ़रसा दिखाई न दिया। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने उस के मुतअ़ल्लिक़ लोगों से पूछा मगर उस का कोई पता न चला फिर एक दिन एक शख़्स आया जिस के हाथ में एक ख़िन्ज़ीर था जिस के गले में काली रस्सी थी। ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने उस से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "क्या तू फ़ुलां शख़्स को जानता है ?" उस ने कहा कि "जी हां ! येह ख़िन्ज़ीर ही शख़्स है।" तो ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने दुआ़ मांगी : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से इस बात का सुवाल करता हूं कि तू इस शख़्स को इस की पहली ह़ालत पर लौटा दे ताकि मैं इस से पूछ सकूं कि किस सबब से येह इस ह़ालत को पहुंचा है।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वह्य फ़रमाई : "अगर तुम मुझ से आदम عَلَيْهِ السَّلَام की त़रह़ या उस से भी ज़ियादा दुआ़ करोगे मैं इस के बारे में क़बूल न करूंगा मगर मैं तुम्हें येह बता देता हूं कि इस के साथ येह सब इस लिये हुवा कि **"येह दीन के ज़रीए दुन्या का त़लबगार था।"** (एह्याउल उ़लूमिद्दीन, किताबुल इ़ल्म, स.90)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इ़बादत से पहले निय्यत दुरुस्त कर लीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें चाहिये कि कोई भी नेक अ़मल शुरूअ़ करने से पहले अपने दिल पर ख़ूब ग़ौर कर लें कि मैं येह अ़मल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये कर रहा हूं या लोगों को दिखाने के

लिये, फिर अपनी निय्यत को दुरुस्त करते हुए सिर्फ़ और सिर्फ़ रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ पाने के लिये इस नेकी को करना चाहिये।

निय्यत दुरुस्त होने का इन्तिज़ार

याद रखिये ! **आ'माल** दो त़रह़ के होते हैं : (1) वोह जिन का **तअ़ल्लुक़ सिर्फ़ हमारी ज़ात से होता है** जैसे रोज़ा, नमाज़ और ह़ज वग़ैरा। अगर ऐसे अ़मल का मक़्सद सिर्फ़ लोगों को **दिखाना** हो तो येह ख़ालिस गुनाह है, लिहाज़ा जब तक निय्यत दुरुस्त न हो जाए इस अ़मल को न किया जाए। हां ! अगर निय्यत दुरुस्त होने के इन्तिज़ार में कोई फ़र्ज़ या वाजिब तर्क होता हो म-सलन जमाअ़त छूट जाए या नमाज़ ही क़ज़ा हो जाने का अन्देशा हो तो ताख़ीर की **इजाज़त** नहीं।

(2) वोह **आ'माल** जिन **का तअ़ल्लुक़ मख़्लूक़** से होता है म-सलन ख़िलाफ़त, क़ज़ा, वा'ज़ो नसीह़त, तदरीसो इफ़्ता वग़ैरा। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से एक शख़्स ने नमाज़े फ़ज्र से फ़राग़त के बा'द लोगों को नसीह़त करने की इजाज़त चाही तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उस को मन्अ़ फ़रमा दिया, तो उस ने अ़र्ज़ की : ''क्या आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मुझे लोगों को वा'ज़ करने से रोक रहे हैं ?'' तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इर्शाद फ़रमाया : ''मुझे **ख़ौफ़** है कि कहीं तुम फूल कर आस्मान तक न पहुंच जाओ।''

(एह्याउल उ़लूमिद्दीन, کتاب ذم الجاہ والریاء, जि.3, स.400)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی हमें समझाते हुए लिखते हैं : लिहाज़ा इन्सान को वा'ज़ो नसीह़त और **इल्म** के बारे में वारिद फ़ज़ाइल से **धोका** नहीं खाना चाहिये क्यूंकि उन के ख़त़रात

सब से ज़ियादा हैं । हम किसी को येह **आ'माल** छोड़ने का नहीं कह रहे क्यूंकि इन में फ़ी नफ़्सिही कोई आफ़त नहीं बल्कि आफ़त तो वा'ज़ो नसीहत, **दर्सो इफ़्ता** और रिवायते ह़दीस में **रियाकारी** में मुब्तला होने में है, लिहाज़ा जब तक आदमी के पेशे नज़र कोई दीनी मन्फ़अ़त हो तो उसे इन आ'माल को तर्क नहीं करना चाहिये, अगर्चे इस में **रियाकारी** की मिलावट भी हो जाए बल्कि हम तो उसे इन आ'माल के बजा लाने के साथ साथ नफ़्स से जिहाद करने, इख़्लास अपनाने और रिया के ख़त़रात बल्कि इस के शाइबे तक से भी **बचने** का कह रहे हैं ।

(एह्याउल उ़लूमिद्दीन, كتاب ذم الجاه والرياء, जि.3, स.399 ता 401 मुलख़्ख़सन)

एक वस्वसा और इस का जवाब

एक इस्लामी भाई आ़शिक़ाने रसूल के साथ दा'वते इस्लामी के म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करता है । जब जद्वल के मुत़ाबिक़ रात में वक़्ते मुनासिब पर राहे ख़ुदा (عَزَّوَجَلَّ) के मुसाफ़िर इस्लामी भाइयों ने बेदार हो कर तहज्जुद अदा की तो उन्हें देख कर इस इस्लामी भाई ने भी हिम्मत की और नमाज़े तहज्जुद पढ़ी ह़ालांकि वोह तहज्जुद अदा करने का आ़दी न था, उसे वस्वसा आया कि शायद येह **रियाकारी** है मगर दर ह़क़ीक़त ऐसा नहीं है बल्कि इस की चन्द **सूरतें** हैं :

(1) अगर मज़्कूरा इस्लामी भाई नमाज़े तहज्जुद और दीगर नेकियों में औरों की मुवाफ़क़त इस लिये करता है कि येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दीन से मुख़्लिस हैं और उन्हों ने तहज्जुद की सआ़दत पाने या सदाए मदीना लगाने के लिये नींद को क़ुरबान कर दिया है, मैं भी इन की सोह़बत

की ब–र–कतें पाते हुए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ रिज़ा के लिये तहज्जुद अदा कर रहा हूं तो येह रियाकारी नहीं है क्यूंकि अगर येही इस्लामी भाई अपने घर पर होता तो नींद के ग़–लबे के सबब रात की इबादत न कर सक्ता या इस में सुस्ती हो जाती या घर के दीगर मुआमलात में मश्गूल हो जाता। ऐसी सूरत में **शैतानी वस्वसों** की त़रफ़ तवज्जोह न दे क्यूंकि ऐसे मौक़अ़ पर इन्सान अक्सर शैतानी वस्वसे का शिकार हो जाता है यूं कि शैतान उस से कहता है कि ''जो काम तू घर पर नहीं करता अगर लोगों के सामने करेगा तो रियाकार बन जाएगा।'' और यूं इन्सान नेकियों से महरूम हो जाता है।

(2) और अगर वोह इस्लामी भाई दूसरों के साथ तहज्जुद इस लिये पढ़ता है कि लोग इस की **ता'रीफ़** करें या इस लिये कि तहज्जुद न पढ़ने पर कहीं कोई मुझे **सुस्त** और ग़ाफ़िल न समझे तो येह **रियाकारी** है क्यूंकि इस का लोगों से मद्ह़ो ता'रीफ़ की ख़्वाहिश रखना या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत खुद से मज़म्मत को दूर करने या अपने मरतबे में कमी के ख़ौफ़ की वजह से बजा लाना येह सब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की **ना फ़रमानी** है। (ऐसे इस्लामी भाई को चाहिये कि नेक अ़मल छोड़ने के बजाए अपनी निय्यत दुरुस्त कर ले।) (एह्याउलउ़लूमिद्दीन, كتاب ذم الجاه و الرياء، بيان مايصح من نشاط......الخ जि.3, स.404 मुलख़्ख़सन)

अच्छों की नक़्ल भी अच्छी होती है

नबिय्ये करीम रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया **:** जो किसी क़ौम से **तशब्बोह** (या'नी मुशाबहत) करेगा तो वोह उन्ही में से होगा।

(अबू दावूद किताबुल्लिबास, अल ह़दीस**:**4031, जि.6, स.26)

ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان इस ह़दीस के तह़त लिखते हैं : या'नी जो शख़्स दुन्या में कुफ़्फ़ार, फ़ासिक़ो बदकार के से लिबास पहने, उन की सी शक्ल बनाए , कल क़ियामत मे उन के साथ उठेगा और जो **मुत्तकी मुस्लामानो** कीसी शक्ल बनाए उन का लिबास पहने वोह कल क़ियामत में اِنْ شَآءَ الله (عَزَّوَجَلَّ) मुत्तक़ियों के ज़ुमरे में उठेगा, ख़याल रहे कि किसी की सी सूरत बनाना **तशब्बोह** है और किसी की सी सीरत इख़्तियार करना **तख़ल्लुक़** है ,यहां तशब्बोह फ़रमाया गया है। **ह़िकायत :** ग़रके फ़िरऔ़न के दिन सारे फ़िरऔ़नी डूब गए मगर फ़िरऔ़नियों का बहरूपिया बच गया। मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ की : "मौला येह क्यूं बच गया ?" फ़रमाया : "इस ने तुम्हारा रूप भरा हुवा था, हम मह़बूब की सूरत वाले को भी **अ़ज़ाब** नहीं देते। (मिर्क़ात) मुसल्मान को चाहिये कि नमाज़ व रोज़ा वग़ैरा इबादात में भी अच्छों ख़ुसूसन अच्छों से अच्छे या'नी **मह़बूब** (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की **नक़्ल** करने की **निय्यत** करे। दिल लगे या ना लगे शक्ल तो हुज़ूर की सी बन जाती है। اِنْ شَآءَ الله (عَزَّوَجَلَّ) अस्ल की ब-र-कत से ख़ुदा हम नक़्क़ालों को भी बख़्श देगा। (मिर्क़ातुल मनाजीह़, जि.6, स.109) हां ! येह निय्यत न हो कि लोग मेरी ता'रीफ़ करें येह रिया है और ह़राम है।

दौराने इबादत दिल में रियाकारी आए तो ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रियाकारी का दख़्ल इबादत के **आग़ाज़** ही में नहीं होता बल्कि **दौराने अ़मल** और इस के **बा'द** भी होता है। अगर किसी ने **इख़्लास** के साथ इबादत शुरूअ़ की फिर दौराने इबादत **रियाकारी** का ख़याल दिल में आया तो अगर उस ने उस **शैत़ानी**

ख़याल को फ़ौरन **झटक** दिया तो उस की येह इबादत ख़ालिस (या'नी इख़्लास वाली) होगी और उसे **सवाब** भी मिलेगा। **अल हदीक़तुन्नदिय्या,** जिल्द अव्वल में है : फ़क़त **रियाकारी** का दिल में ख़याल आना और त़बीअ़त का उस त़रफ़ माइल होना नुक़्सानदेह नहीं है क्यूंकि शैत़ान तो हर इन्सान पर मुसल्लत है। इस लिये येह बात बन्दए मुकल्लफ़ की क़ुदरत में नहीं कि वोह शैत़ानी वस्वसों को रोक सके और उन की त़रफ़ माइल न हो। येही वजह है कि शैत़ान वस्वसे डालता ही रहता है और इन्सान को चाहिये कि इन वसाविस को दिल में न बिठाए और शैत़ानी ह़ीलों का इल्मे दीन और **नफ़रतो इन्कार** से मुक़ाबला करे।

(अल ह़दीक़तुन्नदिय्या, जि.1, स.496)

और अगर उस ने रियाकारी के इस शैत़ानी ख़याल को दिल पर जमा लिया यहां तक कि वोह इबादत मुकम्मल हो गई तो देखा जाएगा कि

(1) वोह बक़िय्या इबादत इसी रिया की वजह से पूरी कर रहा है, या

(2) अगर रिया न भी होता तो भी इबादत मुकम्मल करता।

पहली सूरत में (या'नी जब उस ने येह इबादते मह्ज़ रिया की वजह से मुकम्मल की) देखा जाएगा कि अगर वोह इबादत नमाज़, रोज़ा और ह़ज है तो ऐसी सूरत में इन कामों का **सवाब** नहीं मिलेगा। इस की मिसाल येह है कि किसी ने नमाज़ पढ़ना शुरूअ़ की फिर उसे अपना भूला हुवा माल अचानक याद आया और वोह उसे फ़ौरन ढूंडना चाहता है तो अगर लोग न होते तो येह नमाज़ तोड़ देता, लेकिन उस ने अपनी नमाज़ को लोगों की मज़म्मत के ख़ौफ़ से पूरा किया तो उस का सवाब **ज़ाएअ़** हो गया। **नबिय्ये** अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : अ़मल बरतन

की त़रह़ है जब इस का आख़िर अच्छा होगा तो अव्वल भी अच्छा होगा।

(सुननो इब्ने माजा, كتاب الزهد،باب التوقی علی العمل अल हदीस:4199, जि.4, स.468)

और अगर वोह अ़मल नमाज़, रोज़ा और ह़ज के इ़लावा म-सलन **स-दक़ा** और **तिलावते क़ुरआन** वग़ैरा हो तो जितने अ़मल में **रियाकारी** शामिल हुई उतने अ़मल का सवाब **ज़ाएअ़** होगा इस से पहले का नहीं क्यूंकि उन के हर ह़िस्से का **अलग हुक्म** होगा।

(एह़याउल उ़लूम, كتاب ذم الجاه والرياء،فصل الثانی जि.3, स.377,378)

दूसरी सूरत में (या'नी अगर रिया न भी होता तो भी इ़बादत मुकम्मल करता) जितनी **रियाकारी** इस फ़े'ल में अचानक शामिल हो गई तो इतनी ही **मिक़्दार** में सवाब ज़ाएअ़ होगा पूरी इ़बादत का नहीं। म-सलन कोई शख़्स नमाज़ पढ़ रहा हो और कुछ अफ़राद आ जाएं (अगर वोह न भी आते तो भी वोह नमाज़ पूरी पढ़ता) और वोह उन के आने पर ख़ुश हो और दिखावे की सूरत पैदा हो जाए म-सलन : वोह अपने रुकूअ़ व सुजूद बेहतर अन्दाज़ में करना शुरूअ़ कर दे तो उसे इस नमाज़ का **सवाब** तो मिलेगा मगर जो ख़ूबी रिया के बाइ़स पैदा हुई इस का सवाब **नहीं** मिलेगा। इमाम ग़ज़ाली رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने इर्शाद फ़रमाया : "अगर किसी शख़्स की इ़बादत का लोगों पर ज़ाहिर होना उस के **नशात़** में इज़ाफ़ा और क़ुव्वत पैदा करता है और अगर लोगों पर उस की इ़बादत ज़ाहिर न होती तब भी वोह **इ़बादत** न छोड़ता फिर अगर्चे उस की निय्यत रिया ही की हो तो हमारा गुमान है कि इस का अस्ल **सवाब** ज़ाएअ़ न होगा, रिया की मिक़्दार के मुत़ाबिक़ उसे सज़ा मिलेगी जबकि सवाब की निय्यत जितना सवाब उसे मिलेगा।" (अज़्ज़वाजिर अ़न इक़्तिराफ़िल कबाइर, जि.1, स.78)

बहारे शरीअ़त हिस्सा 16 सफ़्हा 239 पर है : ''किसी इ़बादत को **इख़्लास** के साथ शुरूअ़ किया मगर अस्नाए अ़मल में (या'नी अ़मल के दौरान) रिया की मुदाख़लत हो गई तो येह नहीं कहा जाएगा कि रिया से इ़बादत की बल्कि येह **इ़बादत** इख़्लास से हुई, हां उस के बा'द जो कुछ इ़बादत में **हुस्नो ख़ूबी** पैदा हो गई वोह रिया से होगी।''

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अपनी नेकियों का इज़्हार करना कैसा ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर कोई इ़बादत **इख़्लास** के साथ मुकम्मल हो जाए या'नी इस के अव्वल ता आख़िर में रियाकारी न पाई जाए लेकिन बा'द में कोई इस का लोगों पर इज़्हार करे तो इस की 2 सूरतें हैं : पहली: इस लिये इ़बादत को ज़ाहिर करता है कि येह लोगों पर ज़ाहिर करना **जाइज़ व अफ़्ज़ल** है। म–सलन फ़क़ीह, मुह़द्दिस, मुर्शिद, वाइज़, उस्ताज़ या ऐसा कोई भी शख़्स है कि लोग उस की **पैरवी** करते हों। ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''ख़ुफ़िया इ़बादत अ़लानिया इ़बादत से अफ़्ज़ल है और मुक़्तदा बिही (या'नी जिस की लोग पैरवी करते हैं) की अ़लानिया (इ़बादत) ख़ुफ़िया (इ़बादत) से अफ़्ज़ल है। (शुअ़बुल ईमान 46, باب فی السرور بالحسنة والاغتمام بالسيئه،٤٦ अल ह़दीस:7012, जि.5, स.376)

ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان लिखते हैं : अपनी इ़बादात लोगों को दिखाना ता'लीम के लिये येह रिया

नहीं बल्कि इल्मी तब्लीग़ व ता'लीम है इस पर सवाब है। मशाइख़ फ़रमाते हैं : **सिद्दीक़ीन** की रिया मुरीदीन के इख़्लास से बेहतर है। इस का येही मत़लब है। (मिर्आतुल मनाजीह़, जि.7, स.127)

दूसरी : लोगों पर इस लिये इबादत को ज़ाहिर करता है कि वोह इस की मद्ह़ो सना (या'नी ता'रीफ़) करेंगे तो येह फे'ल **मज़्मूम** है और इस सूरत में इबादत **पोशीदा** ही रखने का हुक्म है।

(अल ह़दीक़तुन्नदिय्या, जि.1, स.481)

इबादत के बा'द उसे बिला इजाज़ते शर-ई ज़ाहिर करने की सूरत में इस का **सवाब** बाक़ी रहेगा या नहीं ? इस बारे में उ़-लमा का इख़्तिलाफ़ है, ताहम **इमाम** ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی की तह़क़ीक़ येह है कि सवाब **बाक़ी** रहेगा लेकिन रियाकारी की सज़ा मिलेगी। चुनान्चे आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه लिखते हैं : "येह बात बईद है कि अ़मल के बा'द त़ारी होने वाली चीज़ अ़मल के सवाब को **ज़ाएअ़** कर दे बल्कि ज़ियादा क़रीने क़ियास येही है कि कहा जाए कि उसे इस के गुज़श्ता अ़मल पर **सवाब** मिलेगा और फ़ारिग़ होने के बा'द जो उस ने दिखावा किया (या'नी रियाकारी की) उस की **सज़ा** मिलेगी।

(एह़याउल उ़लूम, كتاب ذم الجاه والرياء،فصل الثانى जि.3, स.377)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बत़ौरे तरग़ीब नेकी ज़ाहिर करने की 2 शराइत़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अपने अ़मल को बत़ौरे तरग़ीब ज़ाहिर करने वाले की **2** ज़िम्मादारियां हैं : **एक** येह कि ऐसी जगह ज़ाहिर करे जहां पैरवी का यक़ीन हो या कम अज़ कम उस का गुमान हो, क्यूंकि

कई लोग ऐसे होते हैं जिन की इक़्तिदा उन के घर वाले करते हैं मगर पड़ोसी नहीं करते, कई ऐसे हैं कि उन के पड़ोसी उन की **पैरवी** करते हैं बाज़ार वाले नहीं, कई ऐसे हैं कि उन के महल्लादार उन की इक़्तिदा करते हैं। इस लिये जहां पर उस की **पैरवी** की जाती हो वहीं इज़हार मुनासिब है। लेकिन मश्हूर आ़लिम की इक़्तिदा सब लोग करते हैं। लिहाज़ा जब ग़ैरे आ़लिम बा'ज़ इ़बादात को ज़ाहिर करेगा तो हो सकता है उसे **रिया** और निफ़ाक़ की त़रफ़ मन्सूब किया जाए और लोग उस की पैरवी करने के बजाए उस की बुराई बयान करें तो इज़हारे अ़मल का कोई फ़ाइदा न होगा। अल ग़-रज़ इज़हार के लिये पैरवी की **निय्यत** होना ज़रूरी है और येह निय्यत उसी शख़्स को करनी चाहिये जिस की इक़्तिदा की जाती है और वोह उन लोगों के दरमियान हो जो उस की पैरवी करें। दूसरी ज़िम्मादारी येह है कि अपने दिल का ख़याल रखे क्यूंकि बा'ज़ अवक़ात इस में पोशीदा रिया मौजूद होता है जो उसे अ़मल के इज़हार पर **मजबूर** करता है इक़्तिदा तो महज़ एक बहाना होता है।

मुख़्लिसीन का ह़िस्सा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरा दोनों ज़िम्मादारियों से ओ़हदा बर आ होना **मुख़्लिसीन** का ही ह़िस्सा है लिहाज़ा कमज़ोर आदमी के लिये मुनासिब नहीं कि इस त़रीक़े से नफ़्सो शैत़ान के जाल में फंस जाए और ग़ैर शुऊ़री त़ौर पर **हलाक** हो जाए क्यूंकि कमज़ोर आदमी की मिसाल उस डूबने वाले की त़रह़ है जो थोड़ा बहुत तैरना जानता हो और वोह कुछ लोगों को **डूबता** हुवा देख कर उन पर रह़म खाए और वोह इन की त़रफ़ मुतवज्जेह हो जाए जब वोह इसे पकड़ें तो वोह भी **हलाक** हो जाएं और ख़ुद भी डूब जाए। फिर दुन्या में पानी में डूबने की **तक्लीफ़** एक

साअ़त के लिये होती है मगर रियाकारी का अ़ज़ाब तो दाइमी है और त़वील मुद्दत तक रहेगा । कमज़ोर तो एक त़रफ़ रहे येह तो ऐसा दुश्वार गुज़ार मरह़ला है कि उ़–लमा और इ़बादत गुज़ार लोगों के क़दम भी फिसल सकते हैं कि वोह अ़मल के इज़्हार में मज़्बूत़ लोगों की **मुशाबहत** तो इख़्तियार करें लेकिन उन के दिल इख़्लास पर मज़्बूत़ न हों लिहाज़ा रिया की वजह से गुनाहगार होंगे ।

नफ़्सो शैत़ान के धोके को पहचानने का त़रीक़ा

नफ़्सो शैत़ान के धोके को इस त़रह़ भी पहचाना जा सकता है कि ब त़ौरे तरग़ीब अपना नेक अ़मल **ज़ाहिर** करने से पहले अपने दिल से सुवाल कीजिये कि "अगर तुझे कहा जाए कि अपने अ़मल को **पोशीदा** रख ताकि लोग किसी दूसरे के अ़मल की पैरवी करें जो तेरा हम अ़स्र है और तुझे अ़मल के पोशीदा रखने का **सवाब** इसी क़–दर मिलेगा जिस क़–दर ज़ाहिर करने से होता है।" अब अगर उस का दिल इस त़रफ़ माइल हो कि उसी की **पैरवी** की जाए और वोही अ़मल को **ज़ाहिर** करे तो उसे समझ जाना चाहिये कि इज़्हारे अ़मल का मक़्सूद **रियाकारी** है त़लबे सवाब नहीं, न लोगों को अपने पीछे लाना है और न ही उन को भलाई की **तरग़ीब** देना है क्यूंकि लोग तो दूसरे शख़्स को देख कर भी रग़बत ह़ासिल कर लेते और उसे अ़मल को पोशीदा रखने का ज़ियादा सवाब मिल जाता ! अगर लोगों को दिखाना मक़्सूद नहीं है तो उस का दिल **अ़मल पोशीदा रखने पर क्यूं नहीं मानता ?**

(एह़याउल उ़लूमिद्दीन, كتاب ذم الجاه والرياء،بيان الرخصة فى قصد......الخ जि.3, स.390)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नेकियां छुपाइये

हर इस्लामी भाई को चाहिये कि अपने मुंह **मियां मिठ्ठू** बन कर **नफ़्सो शैत़ान** के **जाल** में फंसने से बचे क्यूंकि **नफ़्स** बड़ा धोके बाज़ है, **शैत़ान** भी ताक में रहता है और **जाहो मरतबे** की ख़्वाहिश दिल पर ग़ालिब रहती है और ज़ाहिरी आ'माल आफ़ात से बहुत कम महफ़ूज़ रहते हैं और अ़मल की सलामती इसे **पोशीदा** रखने में है। जब इस के **इज़हार** में ऐसे **ख़त़रात** हैं जिन से मुक़ाबले की **क़ुव्वत** हम जैसों को ह़ासिल नहीं है तो हम जैसे कमज़ोर लोगों के लिये इज़हार से बचना ही ज़ियादा **बेहतर** है। **लिहाज़ा** किसी पर अपनी नेकियों का इज़हार करने से पहले अपने दिल पर ख़ूब **ग़ौर** कर लीजिये। कहीं ऐसा न हो कि हम शैत़ान के जाल में फंस कर **रियाकारी का वबाल** अपने सर पर ले लें।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

रियाकारी से बचना अ़मल करने से ज़ियादा मुश्किल है

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दर्दाअ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बेशक अ़मल कर के उसे **रियाकारी** से बचाना अ़मल करने से ज़ियादा **मुश्किल** है और आदमी अ़मल करता है तो उस के लिये ऐसा अ़मल लिख दिया जाता है जो तन्हाई में किया गया होता है और उस के लिये सत्तर गुना **सवाब** बढ़ा दिया जाता है। फिर शैत़ान उस के साथ लगा रहता है (और उक्साता रहता है) यहां तक कि वोह आदमी इस अ़मल का ज़िक्र **लोगों के सामने** कर देता है, उसे ज़ाहिर करता है तो अब उस के

लिये येह अ़मल (मख़्फ़ी की बजाए) **अ़लानिया** लिख दिया जाता है और अज्र में सत्तर गुना इज़ाफ़ा **मिटा** दिया जाता है। शैत़ान फिर उस के साथ लगा रहता है यहां तक कि वोह **दूसरी मरतबा** लोगों के सामने इस अ़मल का ज़िक्र करता है और चाहता है कि लोग भी इस का **तज़किरा** करें और इस अ़मल पर उस की **ता'रीफ़** की जाए तो उसे अ़लानिया से भी मिटा कर **रियाकारी** लिख दिया जाता है। पस बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरे, अपने दीन की हिफ़ाज़त करे और बेशक **रियाकारी** शिर्क (अस्ग़र) है।'' (अत्तरग़ीब वत्तरहीब, کتاب المقدمه،باب الترهيب من الرياء अल ह़दीस:56, स.29)

अ़ल्लामा अ़ब्दुल ग़नी नाब्लिसी علیہ رحمۃ اللہ الھادی हमें समझाते हुए फ़रमाते हैं : ''जब **रिया व इख़्लास** में से हर एक में **शैत़ानी चालें** और धोके बाज़ियां हैं तो तुझे बेदार रहना लाज़िम है, पस अगर तुझे पता न चले कि तू मुख़्लिस है या रियाकार तो फिर तुझे अपने **नेक आ'माल छुपाना ही बेहतर है** कि इस में तेरे लिये किसी क़िस्म का नुक़्सान नहीं।''

(अल ह़दीक़तुन्नदिय्या, जि.1, स.517)

मेरा हर अ़मल बस तेरे वासित़े हो
عَزَّوَجَلَّ
कर इख़्लास ऐसा अ़त़ा या इलाही

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तह़दीसे ने'मत किसे कहते हैं ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! किसी इबादत की तक्मील के बा'द लोगों के सामने **रब** عَزَّوَجَلَّ की ने'मत का चर्चा करने के त़ौर पर इस को बयान करना **तह़दीसे ने'मत** कहलाता है। इस में भी **इख़्लास** और

रियाकारी दोनों का एह़तिमाल होता है। इस का भी येही हुक्म है कि मुक़्तदा (या'नी जिस शख़्स की लोग पैरवी करते हैं) के लिये **अफ़्ज़ल** येह है लोगों से बयान कर दे और अगर लोगों से अपनी **क़सीदा ख़्वानी** करवाना मक़्सूद हो तो येह **गुनाह** है। हां ! अगर इस त़रह़ इबादत के इज़हार में **रियाकारी** राह पा जाए तो येह गुनाह है मगर इस से गुज़श्ता इबादत **ज़ाएअ़** नहीं होती क्यूंकि येह इबादत जब अदा की गई थी उस वक़्त सह़ीह़ त़ौर पर अदा हुई थी और येह कि लोगों को अपनी इबादत के क़िस्से सुनाना येह गुज़श्ता इबादत के बा'द पैदा होने वाला एक **नया काम** है जिस से बन्दा फ़क़त़ गुनाहगार होता है गुज़श्ता इबादत ज़ाएअ़ नहीं होती। **बहर ह़ाल** वोह इबादात जिन को ज़ाहिर करने में इन्सान मजबूर नहीं होता, इन में **अफ़्ज़ल** येह है कि इन को छुपाए कि इस में बहुत सी ख़राबियों से **बचत** है, फिर अगर किसी को सिखाने का इरादा है या येह कि उस शख़्स की पैरवी की जाती है तो अब छुपाने से **ज़ाहिर** कर देना अफ़्ज़ल है। (अल ह़दीक़तुन्नदिय्या, जि.1, स.474)

101 बार दिल पर ग़ौर कर लीजिये

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه हमें समझाते हुए ''**फ़ैज़ाने सुन्नत**'' जिल्द अव्वल, सफ़ह़ा 1453 पर लिखते हैं : ''तह़दीसे ने'मत (या'नी ने'मत का चर्चा करने) की निय्यत से नेक अ़मल का इज़हार किया जा सकता है। इसी त़रह़ कोई **पेश्वा** है और वोह अपना अ़मल इस निय्यत से ज़ाहिर करता है कि मा तह़त अफ़राद को इस से अ़मल की रग़बत मिलेगी तो अब **रियाकारी** नहीं, मगर हर एक को अपना अ़मल ज़ाहिर करते वक़्त एक सो एक बार अपने दिल की कैफ़िय्यत पर **ग़ौर** कर लेना चाहिये, क्यूंकि शैत़ान बड़ा मक्कार है, हो सकता है कि इस

त़रह़ से उभार कर भी वोह **रियाकारी** में मुब्तला कर दे, म–सलन : दिल में वस्वसा डाले कि लोगों से कह दे, ''मैं तो सिर्फ़ **तह़दीसे ने'मत** के लिये अपना अ़मल बता रहा हूं।'' ह़ालांकि दिल में लड्डू फूट रहे होंगे कि इस त़रह़ बताने से लोगों के दिलों में मेरी **इ़ज़्ज़त** बढ़ जाएगी। येह यक़ीनन **रियाकारी** है और साथ में तह़दीसे ने'मत का कहना रियाकारी दर रियाकारी और साथ ही झूट के गुनाह की **तबाहकारी** भी है। तफ़्सीली मा'लूमात के लिये **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى की कुतुबे तसव्वुफ़ **एह़्याउल उ़लूम** या कीमियाए सआ़दत से निय्यत, इख़्लास और रिया के अब्वाब का मुत़ालआ़ कीजिये। काश ! उन्हें पढ़ने से शैत़ान मह़रूम न करे, क्यूंकि येह मर्दूद कभी न चाहेगा कि मुसल्मान का अ़मल ख़ालिस हो कर **मक़्बूल** हो जाए।

या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم हमें इख़्लास के साथ इ़बादत और नफ़्ली रोज़ों की कसरत की सआ़दत नसीब फ़रमा और हमें शैत़ान के उन ह़ीले बहानों की पहचान अ़त़ा फ़रमा जिन के ज़रीए़ वोह हमारे आ'माल बरबाद कर दिया करता है। اٰمين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم

रियाकारियों से बचा या इलाही
मुझे अ़ब्दे मुख़्लिस बना या इलाही

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

च्यूंटी की चाल से भी पोशीदा रिया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़ाहिर और पोशीदा होने के ए'तिबार से रियाकारी की दो क़िस्में हैं, रियाए **जली** और **ख़फ़ी**। रियाए **जली** से मुराद वोह रिया है जो अ़मल पर उभारे और उस की तरग़ीब दे।

येह बहुत वाज़ेह़ और ज़ाहिर रिया है। जब कि रियाए **ख़फ़ी** से मुराद वोह रिया है जो पोशीदा हो । (अज़्ज़वाजिर अ़न इक़्तिराफ़िल कबाइर, जि.1, स.81) **नबिय्ये अकरम नूरे मुजस्सम** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''रिया की एक क़िस्म वोह है जो च्यूंटी की चाल से भी ज़ियादा **ख़फ़ीफ़** होती है।'' (मज्मउ़ज़्ज़वाइद, کتاب الزھد،باب مایقول اذ خاف.....الخ अल ह़दीस:17669, जि.10, स.384)

रियाए ख़फ़ी से बचना बेह़द दुश्वार है मगर जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तौफ़ीक़ दे। इस की चन्द **अक़्साम** हैं :

''जहन्नम'' के चार ह़ुरूफ़ की मुना-सबत से रियाए ख़फ़ी की 4 अक़्साम

(1) वोह रिया जो किसी अ़मल पर तो न उभारे अलबत्ता उस की मशक़्क़त में **कमी** कर दे और उस का करना **आसान** हो जाए जैसे कोई शख़्स रोज़ाना नमाज़े तहज्जुद पढ़ने, अदा करने का आ़दी हो लेकिन उसे बोझ भी मह़सूस होता है और जब उस के हां कोई मेहमान आए या किसी को उस के तहज्जुद गुज़ार होने का पता चल जाए तो उस की **चुस्ती** में इज़ाफ़ा हो जाए और वोह उसे **ख़ुशदिली** से पढ़े।

(2) वोह रिया जिस का नेकी में कोई अ़मल दख़्ल नहीं होता या'नी वोह रिया जो न तो अ़मल पर **उभारता** है, न उस की मशक़्क़त में **कमी** करता है लेकिन इस की वजह से बन्दे का दिल **रियाकारी** में इस त़रह़ मुब्तला हो जाता है जैसे पथ्थर में आग पोशीदा होती है। रियाए ख़फ़ी

की **इस क़िस्म को पहचानना आसान नहीं,** इस की सब से बड़ी अ़लामत येह है कि जब लोगों को किसी की इ़बादत का पता चले तो उसे **ख़ुशी** हो। चुनान्चे कई इस्लामी भाई ऐसे होते हैं जो अपने अ़मल में मुख़्लिस होते हैं, रियाकारी को ना पसन्द करते हैं और अपने अ़मल को रियाकारी में मुब्तला हुए बिग़ैर मुकम्मल भी कर लेते हैं लेकिन जब लोगों को इन की इ़बादत का पता चलता है उन्हें **ख़ुशी** ह़ासिल होती है और उन्हें इ़बादत की मशक़्क़तें भूल जाती हैं। इस सूरत में रिया उन के दिल में इस त़रह़ पोशीदा होती है जैसे पथ्थर में आग पोशीदा होती है। येह **ख़ुशी रियाए ख़फ़ी पर दलालत** करती है क्यूं कि अगर दिल लोगों की त़रफ़ मुतवज्जेह न होता तो वोह अपनी इ़बादत पर उन के आगाह होने पर ख़ुश न होता, अब अगर वोह इस ख़ुशी को दिल ही दिल में मज़्मूम न जाने तो रिया का येह पोशीदा सिल्सिला मज़ीद मज़्बूत़ हो जाता है और फिर येह शख़्स कोशिश करता है कि इशारतन या किनायतन किसी भी त़रह़ से लोगों को इस की इ़बादत का ह़ाल **मा'लूम** हो जाए बल्कि बा'ज़ अवक़ात ऐसी आ़दतें अपना लेता है जिस से उस की नेकियों का **इज़्हार** हो सके म-सलन कमज़ोरी के सबब आवाज़ पस्त रखना या होंटों को ख़ुश्क रखना, रोज़े और आंसूओं के आसार ख़ौफ़े ख़ुदा से गिर्या व ज़ारी और अंगड़ाइयों और जमाइयों से नींद के ग़-लबे का इज़्हार त़वील तहज्जुद गुज़ारी पर दलालत करता है।

(3) वोह **रिया** है कि न तो लोगों के आगाह होने की ख़्वाहिश हो और न ही इ़बादत के ज़ाहिर होने पर ख़ुशी हो, अलबत्ता इस बात पर ख़ुशी हो कि ★ मुलाक़ात के वक़्त लोग उसे **पहले** सलाम करें ★ उसे ख़न्दा पेशानी और **इ़ज़्ज़तो एह़तिराम** से मिलें ★ उस की **ता'रीफ़** करें और

इस की ज़रूरतों को ख़ुशी ख़ुशी पूरा करें ★ ख़रीदो फ़रोख़्त में इस के साथ रिआ़यत बरतें (या'नी सस्ते में चीज़ बेचें या दाम ही न लें) ★ किसी महफ़िल में जाए तो उस के लिये जगह छोड़ दें।★ इस की आव भगत करें वग़ैरहा

और जब कोई इन मुआ़-मलात में ज़र्रा बराबर कोताही करे तो उसे बहुत **ना गवार** गुज़रे । गोया वोह अपनी **पोशीदा इबादत** का इज़हार तो नहीं चाहता लेकिन इस के बदले लोगों से इ़ज़्ज़तो एह़तिराम का त़लबगार है, बिलफ़र्ज़ उस ने येह **इबादतें** न की होतीं तो उस का दिल इन चीज़ों का **मुता-लबा** भी न करता । जब कोई इस्लामी भाई इस क़िस्म की **रियाकारी** में मुब्तला हो जाए तो उस की अ़क़्ल पर पर्दा पड़ जाता है और वोह महज़ इस बात पर क़नाअ़त नहीं करता कि दिलों का ह़ाल जानने वाले परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ को उस की नेकियों का **इ़ल्म** है। इन तमाम सूरतों में नेकियों का सवाब ज़ाएअ़ हो सकता है और इस से सिर्फ़ सिद्दीक़ीन ही महफ़ूज़ रहते हैं।''

क्या तुम्हारी ह़ाजतें पूरी नहीं की जाती थीं !

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم इर्शाद फ़रमाते हैं : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन क़ारियों से इर्शाद फ़रमाएगा क्या तुम्हें सौदा सस्ता नहीं दिया जाता था ? क्या तुम्हें सलाम करने में पहल नहीं की जाती थी ? क्या तुम्हारी ह़ाजतें पूरी नहीं की जाती थीं ? एक ह़दीस (क़ुदसी) में है : ''तुम्हारे लिये कोई अज्र नहीं क्यूं कि तुम ने अपना अज्र पूरा पूरा वुसूल कर लिया।''

(अ़ज़्ज़वाजिर अ़न इक़्तिराफ़िल कबाइर, जि.1, स.82)

कहीं नुक़्सान न हो जाए

ह़ज़रते सय्यिदुना वह्ब बिन मुनब्बेह رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं कि राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र के दौरान एक बुज़ुर्ग ने अपने हम सफ़रों से फ़रमाया : हम ने सरकशी के ख़ौफ़ से अपने मालों और औलाद को छोड़ दिया लेकिन हमें इस बात का **ख़ौफ़** है कि मालदार लोगों को माल के सबब जिस क़दर सरकशी का सामना करना पड़ता है उस से ज़ियादा कहीं हमें दीन में **नुक़्सान** न हो क्यूं कि हम में से कोई एक जब मुलाक़ात करता है तो अपने दीनी मक़ाम की वजह से अपनी ता'ज़ीम का **ख़्वाहिश मन्द** होता है और अगर कोई चीज़ ख़रीदता है तो चाहता है कि उस के दीनी मन्सब की वजह से उसे **कम क़ीमत** पर मिले। जब येह बात उन के बादशाह तक पहुंची तो वोह एक लश्कर के साथ उन की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा चुनान्चे पहाड़ और मैदान लोगों से भर गए। उस बुज़ुर्ग ने किसी से दरयाफ़्त किया : येह सब क्या है ? कहा गया : बादशाह आप से मिलने आया है। उन्हों ने ख़ादिम से कहा : मेरे लिये खाना लाओ। वोह साग ज़ैतून और खजूर के ख़ोशे ले आया। उस बुज़ुर्ग ने ख़ूब मुंह खोल कर **बड़े बड़े लुक़्मे** डालने शुरूअ़ कर दिये। बादशाह ने पूछा : तुम्हारे वोह सरदार कहां हैं ? लोगों ने जवाब दिया : येही हैं। बादशाह ने पूछा : आप का क्या ह़ाल है ? बुज़ुर्ग ने जवाब दिया : आ़म लोगों की त़रह़ है। येह सुन कर बादशाह ने कहा : इस शख़्स के पास कोई भलाई नहीं है और वापस चला गया। उस के जाने के बा'द बुज़ुर्ग कहने लगे : **अल्लाह** तआ़ला का शुक्र है जिस ने तुझे

मुझ से यूं फेरा कि तुम मेरी मज़म्मत कर रहे हो।

(एह्याउल उ़लूम, كتاب ذم الجاه والرياء،فصل الرابع जि.3, स.375/376)

(**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो...और...उन के सदके़ हमारी मग़्फ़िरत हो।)

(4) **रियाए ख़फ़ी** की एक **क़िस्म** ऐसी है जो वाइज़ीन, मुदर्रिसीन और उ़–लमा के साथ ख़ास है। वोह यूं कि इन में से अगर कोई ज़बान की महारत, वसीअ़ मुत़ा–लए़ और बेहतरीन ह़ाफ़िज़े की बदौलत अच्छा **बयान** करता हो, शरीअ़तो त़रीक़त की मा'रिफ़त रखता हो, लोगों का उस की त़रफ़ मैलान हो, फिर कोई और वाइ़ज़ या आ़लिम उन लोगों की **इस्लाह़** करे या वोह उसे छोड़ कर किसी और आ़लिम या शैख़ के पास जाएं तो वोह **मलाल** मह़सूस करे और ह़सद में मुब्तला हो जाए, तो येह इस बात की दलील है कि वोह **रियाए ख़फ़ी** का शिकार हो चुका है। इसी त़रह़ दौराने बयान जब कोई मालदार शख़्स या कोई साहि़बे मन्सब उन की मह़फ़िल में ह़ाज़िर हो तो अपनी गुफ़्त–गू अधूरी छोड़ कर उन की **ख़ुशामद** शुरूअ़ कर देना या अपने कलाम में शाइस्तगी और नरमी पैदा कर लेना। हां ! अगर उन की इस्लाह़ की निय्यत से येह बयान त़वील करता है ता कि वोह अपने फ़िस्क़ो फ़ुजूर से तौबा करें और इस्लाह़ की त़रफ़ **माइल** हो जाएं तो येह निय्यत दुरुस्त है मगर इस सूरत में भी रियाकारी में मुब्तला होने का ख़त़रा है। लिहाज़ा बयान करने वाले को चाहिये येह कि तमाम ख़ल्के़ ख़ुदा को एक नज़र से देखे और अमीर को उस की अमीरी के सबब ग़रीब से और बड़े को छोटे से मुम्ताज़ न करे तो यूं वोह اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ **रियाकारी** से बच जाएगा।

(अल ह़दी–क़तुन्नदिय्या, जि.1, स.476/477)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुख़्लिस बन्दे

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुख़्लिस बन्दे हमेशा **ख़फ़ी रिया** से डरते हैं और येह कोशिश करते हैं कि लोग उन के नेक आ'माल के सिल्सिले में उन्हें धोका न दे सकें दीगर लोग जितनी कोशिश अपने **गुनाह** छुपाने में करते हैं येह उन से ज़ियादा अपनी **नेकियां** छुपाने के ह़रीस होते हैं और इस की वजह सिर्फ़ येह है कि येह लोग अपनी नेकियों को ख़ालिस रखना चाहते हैं ताकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन लोगों के सामने उन्हें सवाब अ़ता फ़रमाए क्यूं कि वोह जानते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में क़ियामत के दिन सिर्फ़ वोही आ'माल मक़्बूल होंगे जो इख़्लास के साथ किये गए हों । और वोह येह भी जानते हैं कि क़ियामत के दिन वोह सख़्त मोह़ताज और भूके होंगे और उन का मालो औलाद उन्हें कुछ काम न आएगा सिवाए इस के जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में क़ल्बे सलीम (या'नी गुनाहों से महफ़ूज़ दिल) ले कर ह़ाज़िर होगा और न कोई बाप अपनी औलाद के काम आएगा यहां तक कि सिद्दीक़ीन को भी अपनी ही फ़िक्र होगी हर शख़्स नफ़्सी नफ़्सी पुकार रहा होगा, जब सिद्दीक़ीन का येह ह़ाल होगा तो दीगर लोग किस ह़ाल में होंगे ? हर वोह शख़्स जो अपने दिल में बच्चों, दीवानों और दीगर लोगों के अपने अ़मल पर आगाह होने से फ़र्क़ महसूस करता हो वोह रिया के शाइबे में मुब्तला होता है क्यूं कि अगर वोह येह जान लेता कि नफ़्अ़ व नुक़्सान देने वाला और हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही है और दूसरे किसी चीज़ पर क़ुदरत नहीं रखते तो उस के नज़्दीक बच्चों और दीगर लोगों का आगाह होना बराबर होता और बच्चों या बड़ों को ख़बर

होने से उस के **दिल पर कोई फ़र्क़ न पड़ता।**

(अज़्ज़वाजिर अ़न इक़्तिराफ़िल कबाइर, जि.1, स.82)

याद रहे रियाकारी की येह तमाम अ़लामात बन्दे के अपने नफ़्स के लिये हैं किसी दूसरे के लिये नहीं क्यूं कि इन का तअ़ल्लुक़ दिल के ह़ालात से है और दिल के ह़ालात पर कोई दूसरा मुत्तलअ़ नहीं हो सकता। लिहाज़ा इन ह़ालात को किसी पर क़ियास कर के **बद गुमानी** न कीजिये कि बद गुमानी ह़राम है और इसी त़रह़ किसी के बारे में तजस्सुस करना, उस की पर्दा दरी करना और उस में येह अ़लामात तलाश करना ताकि उस को बदनाम किया जाए **येह भी ह़राम है।**" (एह्याउल उ़लूम, کتاب الحلال والحرام،الباب الثالث الحالةالاولی जि.2,स.150/ **کتاب الامر بالمعروف**.....**الخ**, जि.2, स.399 मुलख़्ख़सन)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अपनी ता'रीफ़ पर ख़ुश होना कैसा ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर किसी के नेक अ़मल पर उस की ता'रीफ़ की जाए तो उस का **ख़ुश** होना फ़ित़री बात है। लेकिन याद रखिये कि अपनी (सच्ची) ता'रीफ़ पर ख़ुश होने की भी **सूरतें** हैं, चुनान्चे येह ख़ुशी कभी **महमूद** (या'नी पसन्दीदा) होती है और कभी **मज़्मूम** (या'नी ना पसन्दीदा), लिहाज़ा हमें चाहिये कि जब कोई हमारी (सच्ची) ता'रीफ़ करे तो उसे नरमी से मन्अ़ कर दें, फिर भी कोई हमारी ता'रीफ़ करने से बाज़ न आए तो फूलने के बजाए दिल में दाख़िल होने वाली ख़ुशी के बारे में **अच्छी अच्छी निय्यतें** कर लेनी चाहियें। महमूद ख़ुशी की 4 सूरतें हैं :

(1)..... अपना यूं ज़ेहन बनाए कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरे अच्छे अ़मल को लोगों पर ज़ाहिर कर के मुझ पर करम फ़रमाया है, क्यूं कि वोही इ़बादत और गुनाहों पर पर्दा डालता है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मह़ज़ अपने करम से गुनाहों पर पर्दा डाल कर उस की इ़बादत को ज़ाहिर फ़रमा दिया और इस से बड़ा एह़सान किसी पर क्या होगा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दे के गुनाहों को छुपा दे और इ़बादत को ज़ाहिर कर दे लिहाज़ा बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इस पर नज़रे रह़मत की वजह से ख़ुश हो लोगों की ता'रीफ़ और उन के दिलों में उस के लिये जो मक़ामो मरतबा है उस की वजह से ख़ुश न हो (तो येह रिया नहीं) जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَ بِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا ط

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ **अल्लाह** ही के फ़ज़्ल और उसी की रह़मत और उसी पर चाहिये कि ख़ुशी करें। (पारह : 11, यूनुस:58)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि रसूले अकरम नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से पूछा गया कि येह फ़रमाइये कि आदमी अच्छा काम करता है और लोग उस की **ता'रीफ़** करते हैं (येह रिया है या नहीं) ? फ़रमाया : "येह मोमिन के लिये जल्द या'नी दुन्या में बिशारत है।" (सह़ीह़ मुस्लिम, كتاب البرو الصلة والادب،باب اذااثنى على الصالح......الخ अल ह़दीस:2642, स.1420)

(या'नी येह रिया नहीं है बल्कि क़बूलिय्यत की अ़लामत है कि लोगों के मुंह से ख़ुद ब ख़ुद उस की ता'रीफ़ निकलती है। ग़रज़े कि

रिया का तअ़ल्लुक़ आ़मिल की निय्यत से है कि वोह दिखलावे शोहरत की निय्यत से नेकी करे येह है रिया।

(मिर्आतुल मनाजीह़, जि.7, स.129 मुलख़्ख़सन)

(2)…. या ख़ुशी का क़ाबिले ता'रीफ़ होना इस वजह से है कि बन्दा येह सोच कर ख़ुश हो जाता है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जब दुन्या में इस के गुनाहों को छुपाया और इस की नेकियों को ज़ाहिर फ़रमाया तो आख़िरत में भी इस के साथ येही सुलूक फ़रमाएगा, चुनान्चे साहि़बे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया: ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस बन्दे के गुनाह की दुन्या में पर्दा पोशी फ़रमाता है आख़िरत में भी उस की पर्दापोशी फ़रमाएगा।'' (कन्ज़ुल उ़म्माल,किताबुत्तौबा قسم الاقوال،باب فی فضلها والترغیب فیها अल ह़दीस:10296, जि.4, स.97, بدون"ذنباً")

(3)…. या फिर बन्दा येह ख़याल करे कि मेरे नेक आ'माल पर मुत्त़लअ़ होने वालों को मेरी इक़्तिदा में **रग़बत** मिलेगी और इस त़रह़ मुझे दुगना सवाब मिलेगा एक **सवाब** तो इस बात का होगा कि उस का मक़्सूद इब्तिदा में इ़बादत को पोशीदा रखना था और दूसरा **सवाब** उस के ज़ाहिर होने और लोगों की इक़्तिदा की वजह से होगा क्यूं कि इ़बादत व त़ाअ़त में जिस की पैरवी की जाती है उसे इन पैरवी करने वालों का सवाब भी मिलता है और उन के सवाब में भी कमी नहीं होती लिहाज़ा इस ख़याल से ख़ुशी ह़ासिल होना बिल्कुल दुरुस्त है क्यूं कि नफ़्अ़ के आसार का ज़ुहूर लज़्ज़त बख़्शता है और ख़ुशी का सबब बनता है। **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عليه رَحْمَةُ اللهِ القَوى लिखते हैं : **येह** इस सूरत में है कि इ़बादत इस

लिये नहीं की कि लोगों पर ज़ाहिर हो और लोग आ़बिद समझें, इ़बादत ख़ालिसन **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के लिये है, इ़बादत के बा'द अगर लोगों पर ज़ाहिर हो गई और त़ब्अ़न येह बात अच्छी मा'लूम होती है कि दूसरे ने **अच्छी** ह़ालत पर पाया, इस त़र्ब्ई मुसर्रत से **रिया** नहीं । (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा:16, स.238)

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह (عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ! मैं अपने मकान के अन्दर नमाज़ की जगह में था, एक शख़्स आ गया और येह बात मुझे पसन्द आई कि उस ने मुझे इस ह़ाल में देखा (येह रिया तो न हुवा) ? इर्शाद फ़रमाया : "अबू हुरैरा ! तुम्हारे लिये दो[2] सवाब हैं, पोशीदा इ़बादत करने का और अ़लानिया का भी ।"[1]

(शरहुस्सुन्नह, کتاب الرقاق، باب من عمل لله فحمد علیه, अल ह़दीस:4036, जि.7, स.346)

(4).... इसी त़रह़ कभी बन्दा इस वजह से ख़ुश होता है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उसे ऐसे अ़मल की तौफ़ीक़ दी है जिस की वजह से लोग उस की ता'रीफ़ कर रहे हैं और इस की वजह से इस से मह़ब्बत करते हैं क्यूं कि बा'ज़ गुनहगार मुसल्मान ऐसे भी होते हैं जो इ़बादत गुज़ार लोगों को देख कर इन का मज़ाक़ उड़ाते और उन्हें ईज़ा देते हैं, इस सूरत में **इख़्लास की**

1: या'नी तुम्हारे इस काम की इब्तिदा मह़ज़ इख़्लास पर थी इसी से तुम घर के गोशे में येह काम कर रहे थे **अल्लाह** तआ़ला ने तुम्हारे इस काम को ज़ाहिर फ़रमा दिया येह भी उस का करम है । तुम्हारा इस पर ख़ुश होना कि मुझे मुसल्मान ने बुरे काम पर न देखा अच्छे काम पर देखा येह ख़ुशी भी **अल्लाह** का करम है इस पर भी सवाब है कि येह ख़ुशी शुक्र की है न कि फ़ख़्र की । (मिर्आतुल मनाजीह़, जि.7, स.133)

अ़लामत येह है कि जिस त़रह़ उसे अपनी ता'रीफ़ पर ख़ुशी ह़ासिल होती है इसी त़रह़ दूसरों की ता'रीफ़ भी उस के लिये बाइ़से मुसर्रत हो।

क़ाबिले मज़म्मत ख़ुशी येह है कि आदमी लोगों के नज़्दीक अपने मक़ामो मरतबे पर ख़ुश हो और येह ख़्वाहिश करे : ''वोह इस की ता'रीफ़ व ता'ज़ीम करें, इस की ह़ाजतें पूरी करें, आमदो रफ़्त में इसे अपने आगे करें।'' (अज़्वाजिर, الكبيرة الثانيه الشرك الاصغر.....الخ, जि.1, स.77)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ख़ौफ़े ख़ुदा से लरज़ जाइये !

जब कोई आप की **ता'रीफ़** करे तो इस त़रह़ भी ग़ौरो ख़ौज़ (या'नी फ़िक्रे मदीना) कीजिये : ''जिस वजह से मेरी **ता'रीफ़** की गई है वोह मुझ में पाई भी जा रही है या नहीं ? म-सलन : लोगों ने मुझे **मुत्तक़ी व परहेज़गार** कहा, क्या मैं वाक़ेई तक़्वा के शर-ई **मे'यार** पर पूरा उतरता हूं और अगर लोगों की ता'रीफ़ **सच्ची** भी है तो इस में मेरा क्या कमाल है येह तो मेरे रब عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा है फिर आ'माल का ए'तिबार तो ख़ातिमे पर है, मैं नहीं जानता कि मेरा **ख़ातिमा ईमान पर होगा या नहीं ?** कहीं ऐसा न हो कि क़ियामत के दिन मुझे इन्ही लोगों के सामने बुला कर कहा जाए : ''**ऐ फ़ाजिर** ! ऐ धोकेबाज़ ! **क्या तुझे ह़या न आई** जब तू ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त के बदले दुन्या का साज़ो सामान ख़रीदा ? तू ने बन्दों के दिलों पर नज़र रखी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नज़रे रह़मत पर क़नाअ़त न की, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से नहीं सिर्फ़ उस के बन्दों से मह़ब्बत की, लोगों के लिये ऐसी चीज़ों से आरास्ता हुवा जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक बुरी थीं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दूरी इख़्तियार कर के लोगों की क़ुर्बत पाई।''

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

रियाकारी की तरबिय्यतगाह

आजकल बच्चा या बच्ची अगर हिफ़्ज़े कुरआन मुकम्मल कर ले तो उस के लिये शानदार तक़रीब की जाती है। जिस में उस को गुलपोशी व गुलपाशी और तहाइफ़ो ता'रीफ़ी कलिमात से ख़ूब नवाज़ा जाता है। **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इस क़िस्म की तक़रीबात का इन्इक़ाद करने वालों को "**फ़िक्रे मदीना**" की दा'वत देते हुए फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द अव्वल के सफ़हा 1448 पर लिखते हैं : घर वाले शायद समझते होंगे हम **हौसला अफ़्ज़ाई** कर रहे हैं। मगर मा'ज़िरत के साथ अ़र्ज़ है कि बच्चा बुलन्द हौसला था जभी तो **हाफ़िज़** बना। हां हिफ़्ज़ शुरूअ़ करवाते वक़्त हौसला अफ़्ज़ाई की वाक़ेई ज़रूरत होती है कि किसी तरह येह पढ़ ले। बहर हाल **हाफ़िज़** म-दनी मुन्ने, मुन्नी के **हिफ़्ज़ की तक़रीब** में हौसला अफ़्ज़ाई हो रही है या वोह ख़ुद "**फूल कर कुप्पा**" हुवा जा रहा है इस पर ग़ौर कर लिया जाए। कहीं ऐसा तो नहीं कि हमारी येह "तक़रीबे सईद" इस बे चारे सादा लौह भोलेभाले हाफ़िज़ म-दनी मुन्ने की **रियाकारी की तरबिय्यतगाह** बन रही हो ! **मैं** ने इस तरह की तक़ारीब में **इख़्लास** को बहुत तलाशा, मुझे न मिल सका। यहां तक कि बा'ज़ अवक़ात مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ तसावीर भी खींची जाती हैं। इसी तरह अक्सर कमसिन म-दनी मुन्ने, मुन्नी की "रोज़ा कुशाई" की तक़रीब में भी

तसावीर के गुनाह का सिल्सिला होता है। वरना सादगी के साथ रोज़ा कुशाई की रस्म अदा की जाए या ह़ाफ़िज़ म-दनी मुन्ने की दीनी तरक़्क़ी के लिये सब को इकट्ठा करने के बजाए बुज़ुर्गों की बारगाहों में पेश कर के उ़म्र भर कु़रआने पाक याद रहने और उस पर अ़मल करने की **दुआ़एं** ली जाएं तो اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ इस में **ब-र-कतें** ज़ियादा होंगी। **अल ह़ासिल** अच्छी त़रह़ ग़ौर कर लेना चाहिये कि हम जो तक़रीब करने जा रहे हैं इस में **हमारी आख़िरत का कितना फ़ाएदा है ?** अगर आप का दिल वाक़ेई मुत़्मइन है कि हि़फ़्ज़े कु़रआन की ख़ुशी की तक़रीब से मक़्सूद नुमाइश नहीं और येह भी यक़ीन है कि म-दनी मुन्ने को **रियाकारी** का कोई ख़त़रा नहीं या'नी **आप इस को इख़्लास की आ'ला तरबिय्यत दे चुके हैं** तो बेशक तक़रीब कीजिये। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़बूल फ़रमाए।

(اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم)

(फ़ैज़ाने सुन्नत, जि.1, बाब फ़ैज़ाने र-मज़ान, स.1448)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

गुनाहों से बचने में भी रियाकारी

ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان लिखते हैं : "तक़्वा के दो रुक्न हैं (1) अच्छे काम करना (2) बुरे काम से बचना, मगर इस का रुक्ने आ'ला बुरे कामों से बचना है, इ़बादात आसान हैं मगर मुह़र्रमात (या'नी ह़राम कामों) से परहेज़, बुरे मुआ़-मलात से

बचना बहुत ही मुश्किल है।

(मिर्आतुल मनाजीह़, जि.6, स.634)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिस त़रह़ दीगर नेकियां **रियाकारी** की नज़्र हो सकती हैं इसी त़रह़ गुनाहों से बचने में भी **रियाकारी** मुम्किन है क्यूं कि गुनाह से बचना भी नेकी है और शैत़ान कभी नहीं चाहेगा कि मुसल्मान **सवाब** कमाने में काम्याब हो जाए। लिहाज़ा अगर इस लिये गुनाह तर्क करता है कि लोग उसे मुत्तक़ी, परहेज़गार, इबादत गुज़ार और ख़ौफ़े ख़शिय्यत का पैकर समझें तो येह सूरत ख़ालिस **रियाकारी** की है। चुनान्चे गुनाहों को छोड़ने में रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ पेशे नज़र होनी चाहिये, ज़िम्नन और भी अच्छी अच्छी निय्यतें की जा सकती हैं म-सलन : (1) कहीं मेरी देखा देखी लोग भी इसी गुनाह में न लग जाएं, यूं मेरा **गुनाह** बड़ा हो जाएगा (2) इस गुनाह की वजह से मैं लोगों की नज़र से गिर जाऊंगा और वोह मेरी **पैरवी** करना छोड़ देंगे और मेरी **नेकी की दा'वत** क़बूल न करेंगे, यूं मैं लोगों की इस्लाह़ करने के **सवाब** से महरूम हो जाऊंगा, वग़ैरहा

इख़्लास की पहचान

गुनाह छोड़ने में **इख़्लास** की पहचान येह है कि बन्दा जिस त़रह़ लोगों के सामने **गुनाह** से बाज़ रहता है इसी त़रह़ तन्हाई में भी **गुनाह** से बाज़ रहे। बहर ह़ाल गुनाह से हर ह़ाल में बचा जाए और दिल में इख़्लास पैदा करने की कोशिश जारी रखी जाए।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

रियाकारी के ख़ौफ़ से इबादत छोड़ना कैसा ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हो सकता है कि किसी के दिल में शैत़ान येह **वस्वसा** डाले कि जब **रियाकारी** की इस क़दर **आफ़तें** हैं और रियाकारी से बचना भी बेह़द **दुश्वार** है तो सिरे से **नेक अ़मल** ही न किया जाए ताकि कम अज़ कम हम रियाकारी की सज़ा से तो बच जाएं। ऐसे इस्लामी भाइयों की ख़िदमत में **अ़र्ज़** है कि रियाकारी के ख़ौफ़ से नेक अ़मल छोड़ना **दानिश मन्दी** की बात नहीं क्यूं कि इस त़रह़ हम **इख़्लास** और **नेकी** दोनों के सवाब से **महरूम** हो जाएंगे। ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ इर्शाद फ़रमाते हैं : "लोगों के लिये अ़मल **तर्क** कर देना **रियाकारी** है और लोगों के लिये अ़मल करना **शिर्क** (अस्ग़र) है, जब कि **इख़्लास** येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझे इन दोनों चीज़ों से नजात अ़त़ा फ़रमा दे।"

(अज़्ज़वाजिर, الكبيرة الثانيه الشرك الاصغر.....الخ, जि.1, स.76)

लिहाज़ा हमें चाहिये कि नेक अ़मल छोड़ने के बजाए अपनी **निय्यत** दुरुस्त कर लें क्यूं कि अगर **नाक पर मक्खी बैठ जाए तो मक्खी को उड़ाया जाता है नाक नहीं काटी जाती।**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

रियाकारी का वस्वसा आना गुनाह नहीं है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रियाकारी का दिल में सिर्फ़ ख़याल आना और त़बीअ़त का इस त़रफ़ माइल होना **नुक़्सान** देह नहीं है क्यूं कि **शैत़ान** तो हर इन्सान पर मुसल्लत़ है येह इन्सान के बस में नहीं है कि वोह शैत़ानी **वस्वसों** को दिल में **दाख़िल** ही न होने दे और उन की

त़रफ़ **माइल** न हो। येही वजह है कि शैत़ान वस्वसे डालता ही रहता है **अब** इन्सान को चाहिये कि इन वस्वसों को दिल में न बिठाए और शैत़ानी ह़ीलों का इल्मे दीन और नफ़्रत व इन्कार से मुक़ाबला करे। (अल ह़दी-क़तुन्नदिय्या, जि.1, स.496) ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ह़दीस में मरवी है आप फ़रमाते हैं : सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने शैत़ान के मक्रो फ़रेब को **वस्वसों** में बदल दिया।''(सु-ननो अबी दावूद, کتاب الادب،باب فی رد الوسوسة अल ह़दीस:5112, जि.4, स.425)

ह़ज़रते अबू ह़ाज़िम علیہ رحمۃ اللہ الاکرم फ़रमाते हैं : ''जो ख़त़रा तेरे **नफ़्स** की त़रफ़ से हो और तेरा नफ़्स उसे अपने लिये पसन्द करे लेकिन इस पर तू उस को झिड़कता भी रहे तो इस सूरत में शैत़ानी वस्वसा और नफ़्सानी ख़यालात तुझे **नुक़्सान** नहीं पहुंचाएंगे जब इन्कार और ना पसन्दीदगी के ज़रीए नफ़्सो शैत़ान की **मुराद** को पूरा न होने दे।

(एह्याउल उ़लूमिद्दीन, کتاب ذم الجاہ والریاء،بیان دواء الریاء.....الخ जि.3, स.385)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

शैत़ान को नाकाम व ना मुराद कर दीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शैत़ान का तो काम ही येही है कि वोह हमें **नेकियों** से रोक कर **गुनाहों** में मुब्तला कर दे। इस लिये **रियाकारी** के डर से नेकियां छोड़ने के बजाए इन की कसरत कर के शैत़ान को **नाकाम व ना मुराद** कर दीजिये। **शैत़ान** गोया एक भौंकने वाले **कुत्ते** की त़रह़ है कि अगर हम इस के क़रीब जा कर ख़ामोश करवाने की

कोशिश करें तो येह और ज़ियादा **भौंकता** है और अगर हम उसे उस के ह़ाल पर छोड़ कर अपनी राह लें तो येह बिल आख़िर **भौंकना** छोड़ देता है। इसी त़रह़ **शैत़ान** भी पहले पहल हमें नेक अ़मल छोड़ने का **मश्वरा** देता है, अगर हम उस के मश्वरे को **नज़र अन्दाज़** कर के नेकियों में मश्ग़ूल हो जाएं तो उस की कोशिश होती है कि हम से ऐसी **ग़-लत़ी** करवा दे जिस की वजह से हमारा नेक अ़मल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में **मक़्बूल** न हो सके, अगर इस में भी **नाकाम** रहे तो वोह हमारे दिल में **रियाकारी** के वस्वसे डालता है और हमें रियाकारी करने पर **आमादा** करता है। अगर हम उस पर फिर भी तवज्जोह न दें बल्कि **फ़िक्रे मदीना** करते हुए नेकियों की त़रफ़ ही मु-तवज्जेह रहें तो वोह हमारे दिल में **वस्वसे** डालेगा और कहेगा **:** "तेरा अ़मल ख़ालिस नहीं, तू **रियाकार** है, तेरी कोशिश **बेकार** है, उस अ़मल का क्या फ़ाएदा जिस में **इख़्लास** न हो ?" यूं वोह हमारे साथ मुसल्सल **चिमटा** रहेगा ताकि किसी त़रह़ वोह हमें उस अ़मल के **छोड़ने** पर आमादा करे तो अगर हम ने वोह अ़मल **छोड़** दिया तो शैत़ान **काम्याब** हो गया। लिहाज़ा उसे हरगिज़ **ख़ुश** न कीजिये और नेक काम पर इस्तिक़ामत पज़ीर रहिये ताकि वोह हम से **ना उम्मीद व मायूस** हो जाए। येह हमारी **काम्याबी** होगी और उस की **नाकामी** !

ह़ज़रते इब्राहीम तीमी عليه رَحمَةُ اللهِ القَوی फ़रमाते हैं **:** "शैत़ान बन्दे को **गुनाह** के एक दरवाज़े की त़रफ़ बुलाता है और वोह बन्दा उस की बात नहीं मानता बल्कि उस की जगह कोई **नेकी** करता है जब शैत़ान येह सूरते

हाल देखता है तो उसे **छोड़** देता है। उन्हों ने येह भी फ़रमाया कि जब शैतान तुम्हें **मु-तरद्दिद** देखता है (कि कभी नेकी की और कभी छोड़ दी) तो तुम में **त़मअ़** (या'नी लालच) रखता है और जब तुम्हें हमेशा **नेकी** करता हुवा देखता है तो तुम से नफ़रत करता है और तुम्हें छोड़ देता है।

(एह्याउल उ़लूमिद्दीन, كتاب ذم الجاه والرياء،بيان دواء الرياء......الخ जि.3, स.386)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

क्या नेकियां छोड़ कर हम शैतान से बच जाएंगे ?

फिर इस बात की क्या ज़मानत है कि **रियाकारी** के डर से नेकी छोड़ कर हम शैतान की गरिफ़्त से **महफ़ूज़** हो जाएंगे। याद रखिये ! शैतान हमारा फिर भी **पीछा** नहीं छोड़ेगा, बल्कि हो सकता है कि वोह हमारा यूं ज़ेहन बनाए कि लोग कहते हैं कि "तुम ने अ़मल **इख़्लास** की वजह से छोड़ा है और तुम शोहरत के त़ालिब नहीं हो।" अब जब कि तुम्हारे इख़्लास का **चर्चा** हो रहा है तुम इस जगह को छोड़ दो, अगर हम वोह जगह भी **छोड़** दें और बिलफ़र्ज़ किसी ग़ार या ज़मीन के नीचे किसी **बिल** में चले जाएं तो वोह हमारे दिल में इस बात की **लज़्ज़त** डालेगा कि लोग तुम्हें ज़ाहिद समझते हैं और उन को तुम्हारे **ख़ल्वत नशीं** होने का इल्म है लिहाज़ा इस वजह से वोह तुम्हारी **ता'ज़ीम** करते हैं..... علٰی ھذا القیاس यूं वोह क़दम क़दम पर हमारे लिये **मसाइल** खड़े करता रहेगा। चुनान्चे हमें **रियाकारी** के डर से नेक अ़मल को नहीं **छोड़ना** चाहिये और **शैतानी वस्वसों** पर ज़ियादा **तवज्जोह** भी नहीं देनी चाहिये।

रिया के ख़ौफ़ से नेक अ़मल छोड़ देने वाले की मिसाल

ह़ज़रते सय्यिदुना हुज्जतुल इस्लाम, इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الۡوَالِی एह्याउल उ़लूम में लिखते हैं : **जो** शख़्स रिया के ख़ौफ़ से अ़मल को छोड़ देता है उस की **मिसाल** इस त़रह़ है कि एक **शख़्स** को उस के **आक़ा** ने ऐसी गन्दुम दी जिस में गन्दुम के मुशाबेह दूसरे दाने मिले हुए थे और उस ने हुक्म दिया कि इसे बिल्कुल **साफ़** कर दो यहां तक कि इस में गन्दुम के इ़लावा एक भी दाना न रहे अब वोह शख़्स इस ख़ौफ़ से कि शायद मैं इसे बिल्कुल **साफ़** न कर सकूं, उस अ़मल को बिल्कुल ही **छोड़** देता है तो येही ह़ाल उस शख़्स का है जो **इख़्लास** पैदा न होने के ख़ौफ़ से **नेकी** करना ही छोड़ देता है और कहता है कि जब **इख़्लास** ही न होगा तो अ़मल का क्या फ़ाएदा होगा ?

(एह्याउल उ़लूमिद्दीन, كتاب ذم الجاه والرياء،بيان ترك الطاعت.....الخ ज़ि.3, स.395)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

लोग क्या कहेंगे ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर किसी ने इस ख़ौफ़ से **नेकी** छोड़ दी कि लोग मुझे **रियाकार** कहेंगे और **गुनाहगार** होंगे लिहाज़ा उन को **गुनाह** से बचाने के लिये मैं नेक अ़मल ही नहीं करता, येह भी **शैत़ानी मक्रो फ़रेब** है और इस में सब से **पहली ख़राबी** येह है कि येह शख़्स मुसल्मानों के बारे में **बद गुमानी** का शिकार हुवा ह़ालांकि उसे इस का कोई ह़क़ न था, फिर अगर येह बात **सच** साबित हो जाती है तो भी उसे कोई **नुक़्सान** न पहुंचता। लेकिन उस ने अपने हाथों ख़ुद अपना **नुक़्सान**

कर लिया कि नेकी छोड़ कर सवाब से **महरूम** हो गया। **दूसरी ख़राबी** येह है कि उस का अ़मल को इस लिये छोड़ना कि लोग उसे **रियाकार** कहेंगे, येह भी रिया है क्यूं कि अगर उसे लोगों की **ता'रीफ़** और **मज़म्मत** से कोई सरोकार न होता तो वोह इस बात की क्यूं परवाह करता कि **लोग उसे रियाकार कहते हैं या मुख़्लिस ?**

(एह्याउल उ़लूमिद्दीन, كتاب ذم الجاه والرياء،بيان ترك الطاعت......الخ जि.3, स.395)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

रियाकार की अ़लामतें

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने इर्शाद फ़रमाया : रियाकार की तीन **अ़लामतें** हैं :

(1) **तन्हाई** में हो तो अ़मल में **सुस्ती** करे और लोगों के सामने हो तो **जोश** दिखाए,

(2) उस की **ता'रीफ़** की जाए तो अ़मल में **इज़ाफ़ा** कर दे और

(3) अगर **मज़म्मत** की जाए तो अ़मल में **कमी** कर दे।"

(अज़्ज़वाजिर, الكبيرة الثانيه الشرك الاصغر......الخ जि.1, स.75)

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ह़सन बसरी عليه رَحْمَةُ اللهِ القَوى फ़रमाते थे कि जो शख़्स किसी मज्मअ़ में अपनी **मज़म्मत** करता है वोह दर ह़क़ीक़त अपनी **ता'रीफ़** करता है और येह भी रिया की अ़लामतों में से एक अ़लामत है। (तम्बीहुल मुग़्तर्रीन, स.24)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

कहीं हम रियाकार तो नहीं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें चाहिये कि बड़ी **दियानत दारी** से ख़ुद पर ग़ौर करें कि कहीं हम **तन्हाई** में इबादत के मुआ़-मले में **सुस्ती व ग़फ़्लत** और लोगों के सामने **चुस्ती** का मुज़ा-हरा तो नहीं करते ? कहीं हम नेकी करने के बा'द उस का लोगों पर **बिला ज़रूरत इज़हार** तो नहीं कर देते ? फिर अगर कोई इस पर हमारी **ता'रीफ़** कर दे तो फूल कर अ़मल में **इज़ाफ़ा** तो नहीं कर देते ? और **ता'रीफ़** न होने की सूरत में कहीं हम **ग़मगीन** तो नहीं हो जाते और उस अ़मल में **कमी** तो नहीं कर देते ? हमें लोगों के **सामने** नेकी करने में बड़ी **लज़्ज़त** मिलती है मगर तन्हाई में **मज़ा** नहीं आता ? कहीं हम लोगों के सामने अपनी **मज़म्मत** उन्हें **मु-तअस्सिर** करने के लिये तो नहीं करते ? वग़ैरहा।

रिया से तौबा कर लीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर इन सुवालात का जवाबात हां में आए तो फ़ौरन से पेशतर **तौबा** कर लीजिये और हुसूले **इख़्लास की कोशिशों** में लग जाइये कि कहीं तौबा से पहले मौत न आ जाए और हमें **रियाकारी** के उख़्वी **नुक़्सानात** का सामना करना पड़े।

रियाकारी से तौबा की ब-र-कत

ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنّان लिखते हैं : ख़याल रहे कि रिया से इबादत **ना जाइज़** नहीं हो जाती बल्कि **ना मक़्बूल** होने का अन्देशा होता है अगर **रियाकार** आख़िर में रिया से

तौबा करे तो उस पर रिया की इबादत की **क़ज़ा** वाजिब नहीं बल्कि इस तौबा की ब-र-कत से गुज़श्ता ना मक़्बूल रिया की इबादात भी क़बूल हो जाएंगी। मुत्लक़न रिया से ख़ाली होना बहुत मुश्किल है कोई शख़्स रिया के अन्देशे से इबादत न छोड़े बल्कि रिया से बचने की दुआ करे।

(मिर्आतुल मनाजीह, जि.7, स.127)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

म-रज़े रिया का इलाज कीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर हम अपने दिल में इस म-रज़े रिया की **अलामात** महसूस करें तो बा'दे तौबा **इलाज** में देर नहीं करनी चाहिये। जब हम अपने **बातिन** को **पाकीज़ा** करने की कोशिश करेंगे तो اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ हमारा ज़ाहिर भी सुथरा हो जाएगा। **शहन्शाहे मदीना,** क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''जो अपने बातिन की इस्लाह करेगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के ज़ाहिर की इस्लाह फ़रमा देगा।'' (कन्ज़ुल उम्माल, किताबुल अख़्लाक़, अल हदीस:5273, जि.3, स.13, मुलख़्ख़सन)

मायूस न हों

मायूसी का शिकार हो कर येह नहीं कहना चाहिये कि **इख़्लास** पर तो **औलियाए किराम** عليه رَحمَةُ اللهِ السَّلَام ही **क़ादिर** हो सकते हैं, हम कहां इस **क़ाबिल** ? और इस तरह इख़्लास की कोशिश तर्क कर दी जाएं। **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** इस बात में कोई शक नहीं कि हम जैसे गुनहगारों के लिये कामिल तौर पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वलियों के नक़्शे

क़दम पर चलना ना मुम्किन नहीं तो बेहद दुश्वार ज़रूर है लेकिन इस **दुश्वारी** को आड़ बना कर अपनी इस्लाह़ की कोशिश **तर्क** कर देना बहुत बड़ी **नादानी** है। अगर्चे हम इन पाकीज़ा हस्तियों जैसे नहीं बन सकते मगर इन के ह़ालात व मल्फ़ूज़ात की रोशनी में अपनी निय्यतों और मुआ़-मलात की दुन्या तो **संवार** सकते हैं, अपने नफ़्स की ख़ुशनूदी के सौदों से तो बाज़ रह सकते हैं, आख़िरत के **नफ़्अ़ व नुक़्सान** और अपने **रब्बे** क़दीर عَزَّوَجَلَّ के **ग़ज़ब व रिज़ा** का ख़याल तो रख सकते हैं।

मुश्किल से न घबराइये

बीमारी जितनी **पुरानी** होती है उस का **इलाज** भी उतना ही **मुश्किल** होता है। चुनान्चे हमें अपना ज़ेह्न बना लेना चाहिये कि जिस त़रह़ हम अपने जिस्मानी अम्राज़ के इलाज के लिये ख़िलाफ़े त़बीअ़त **कड़वी दवाइयां** पीने पर तय्यार हो जाते हैं इसी त़रह़ इस बात़िनी बीमारी या'नी **रियाकारी के इलाज** के लिये भी اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ हर त़रह़ की **मशक़्क़त** बरदाश्त करेंगे। इन मशक़्क़तों को बरदाश्त करना शुरूअ़ में **दुश्वार** महसूस होगा बा'द में क़दरे **आसान** लगेगा जिस त़रह़ सख़्त सर्दी में ठन्डे **पानी** से **वुज़ू** करना बेहद **दुश्वार** महसूस होता है लेकिन अगर हम हिम्मत कर के पानी अपने जिस्म पर डालना शुरूअ़ कर दें तो वुज़ू करना हमारे लिये **आसान** हो जाता है।

रन्ज से ख़ूगर हुवा इन्सां तो मिट जाता है रन्ज
मुश्किलें इतनी पड़ीं मुझ पर कि आसां हो गईं

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

''*इख़्लास का नूर*'' के दस हुरूफ़ की निस्बत से रियाकारी के 10 इलाज

(पहला इलाज) अल्लाह तआ़ला से मदद त़लब कीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुआ़ मोमिन का हथियार है इसे नफ़्सो शैत़ान के ख़िलाफ़ जंग में इस्ति'माल करते हुए बारगाहे इलाही में यूं दुआ़ कीजिये कि ''या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे **रियाकारी** की बीमारी से **शिफ़ा** अ़त़ा फ़रमा, मेरी ख़ाली झोली को **इख़्लास** की अ़ज़ीम दौलत से भर दे, मेरा सामना उस दुश्मन (या'नी शैत़ान) से है जो मुझे देखता है मगर ख़ुद दिखाई नहीं देता लेकिन तू उस को **मुला-ह़ज़ा** फ़रमा रहा है ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे इस दुश्मन के **मक्रो फ़रेब** से बचा ले, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं इस बात से तेरी पनाह चाहता हूं कि **लोगों की नज़र** में मेरा ह़ाल बहुत **अच्छा** हो, वोह मुझे नेक और परहेज़गार समझें मगर तेरी बारगाह में सज़ा का **ह़क़दार** ठहरूं।

मेरा हर अ़मल बस तेरे वासित़े हो
कर इख़्लास ऐसा अ़त़ा या इलाही

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(दूसरा इलाज) रियाकारी के नुक़्सानात पेशे नज़र रखिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें चाहिये कि हम **रियाकारी की आफ़तों** को अपने पेशे नज़र रखें क्यूं कि आदमी का दिल किसी चीज़ को उस वक़्त तक **पसन्द** करता है जब तक वोह उसे नफ़्अ़ बख़्श और लज़ीज़ नज़र आती है मगर जब उसे उस शै के **नुक़्सान देह** होने का पता चलता है तो वोह इस से बचता है म-सलन एक इस्लामी भाई **शहद**

को उस की लज़्ज़त और **मिठास** की वजह से बहुत पसन्द करता है लेकिन अगर उसे येह बता दिया जाए कि येह **शहद** जिसे तुम पीने जा रहे हो, इस में ज़हर मिला हुवा है तो वोह इस में मौजूद मिठास को नहीं **ज़हर** को देखेगा और उसे हरगिज़ हरगिज़ **नहीं पियेगा**। इसी त़रह़ लोगों पर अपना नेक अ़मल **ज़ाहिर** करने और उन की त़रफ़ से **वाह वाह** होने में यक़ीनन नफ़्स को बड़ी **लज़्ज़त** मिलती है लेकिन अगर हम इस लज़्ज़त के बजाए **रियाकारी के नुक़्सानात** ज़ेह्न में रखें तो इस से बचना हमारे लिये क़दरे आसान हो जाएगा। क्या **रियाकारी** का येही नुक़्सान कम नहीं कि नेक अ़मल में **मशक़्क़त** उठाने के बा वुजूद सवाब से **महरूम** कर दिया जाए! उस **मज़्दूर** का क्या ह़ाल होगा जो सारा दिन धूप में **पसीना** बहाए और जब **मज़्दूरी** मिलने का वक़्त आए तो उस की मज़्दूरी येह कह कर रोक ली जाए कि फुलां फुलां **ग़-लती** की वजह से तुम्हें मज़्दूरी नहीं दी जा सकती। मगर आह! **रियाकार** को तो सवाब से **महरूमी** के साथ साथ **अ़ज़ाब** भी बरदाश्त करना होगा। वोह शख़्स कितना **नादान** है कि जिस शै से वोह **लाखों** कमा सकता है वक़्ती ख़ुशी की ख़ातिर उसे कोड़ियों के मोल **बेच** दे, बिल्कुल इसी त़रह़ वोह **इबादत गुज़ार** कितना **ना समझ** है जो इबादत के ज़रीए **ख़ालिक़ का क़ुर्ब** चाहने के बजाए **मख़्लूक़ को अपना** बनाने की कोशिश करे, ऐसे रियाकार ने गोया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की **ना फ़रमानी** के बदले लोगों से **महब्बत** चाही, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से **मज़म्मत** के बदले लोगों की **ता'रीफ़** का त़ालिब हुवा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की **नाराज़ी** के बदले लोगों की **रिज़ा** का त़ालिब हुवा और बाक़ी रहने वाली **जन्नती ने'मतों** को **फ़ानी दुन्या** के बदले बेच डाला। फिर सब लोगों को राज़ी रखना **दूध की नहर** खोदने के मु-तरादिफ़ है कि अगर

कुछ लोग एक बात से **ख़ुश** होते हैं तो **नाराज़** होने वालों की भी एक ता'दाद होती है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दिखावे के लिये अ़मल करने वाले की मिसाल

दिखावे और सुनाने के लिये अ़मल करने वाले की **मिसाल** उस शख़्स की त़रह़ है जो अपनी पोटली (या'नी जेब या थेली) **पथ्थरों** से भर कर **ख़रीदारी** के लिये बाज़ार चला गया। जब लोगों ने उसे देखा तो ह़ैरत से कहने लगे : "इस की जेब कितनी भरी हुई है !" मगर जब वोह दुकानदार के सामने अपनी **पोटली** खोलेगा तो **ज़लीलो रुस्वा** होगा और उस की **पिटाई** होगी, उसे लोगों की वाह वाह के सिवा कोई **नफ़्अ़** ह़ासिल न होगा। इसी त़रह़ **दिखावे** और **सुनाने** के लिये अ़मल करने वाले को लोगों की त़रफ़ से बोले जाने वाले **ता'रीफ़ी कलिमात** के इ़लावा कोई नफ़्अ़ ह़ासिल नहीं होता और न ही उसे क़ियामत के दिन कोई **सवाब** मिलेगा। (अज़्ज़वाजिर, الكبيرة الثانيه الشرك الاصغر.....الخ جि.1, स.76 माख़ूज़न)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(तीसरा इलाज) अस्बाब का ख़ातिमा कीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हर बीमारी का कोई न कोई **सबब** होता है अगर सबब मिटा दिया जाए तो बीमारी भी **रुख़्सत** हो जाती है। इसी त़रह़ **रियाकारी** के भी बुन्यादी त़ौर पर **तीन अस्बाब** होते हैं अगर इन तीन चीज़ों से जान छुड़ा ली जाए तो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ रियाकारी से बचना बेह़द **आसान** हो जाएगा। वोह तीन अस्बाब येह हैं :

(1) ता'रीफ़ की ख़्वाहिश, (2) मज़म्मत का ख़ौफ़ और (3) मालो दौलत की हिर्स

ता'रीफ़ की ख़्वाहिश पर कैसे क़ाबू पाएं ?

हमें चाहिये कि **ता'रीफ़ की ख़्वाहिश** पर क़ाबू पाने के लिये इन नुक़्सानात पर ग़ौरो फ़िक्र करें :

''तबाही'' के पांच हुरूफ़ की मुना-सबत से हुब्बे जाह के नुक़्सानात पर मुश्तमिल 5 रिवायात

(1) **अल्लाह** के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है: ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इताअ़त को बन्दों से **ता'रीफ़ की महब्बत** से मिलाने से बचते रहो कहीं तुम्हारे आ'माल **बरबाद** न हो जाएं।'' (फ़िरदौसुल अख़्बार लिदै-लमी, باب الالف،فصل فی التحذیر والوعید अल ह़दीस:1567, जि.1, स.223)

(2) **सय्यिदुल मुर-सलीन, ख़ा-तमुन्नबिय्यीन, जनाबे रह़मतुल्लिल आ़-लमीन** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : माल और मरतबे की **महब्बत** मोमिन के दिल में **मुना-फ़क़त** को इस त़रह़ बढ़ाती है जैसे पानी सब्ज़ा उगाता है। (कन्ज़ुल उ़म्माल, کتاب اللھو.....الخ،قسم الاقوال التغنی المحظور अल ह़दीस:40652/40661/40663, जि.15, स.95/96)

(3) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया: ''दो **भूके भेड़िये** बकरियों के रेवड़ में इतनी **तबाही** नहीं मचाते जितनी माल और इ़ज़्ज़तो आबरू की **तमन्ना** मुसल्मान के दीन को **ख़राब** करती है। (कन्ज़ुल उ़म्माल, کتاب الاخلاق،قسم الاقوال الاکمال حب الجاہ अल ह़दीस:7433, जि.3, स.185)

रहज़न ने लूट ली कमाई

फ़रियाद है ख़िज़रे हाशिमी से (ह़दाइक़े बख़्शिश)

(4) रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : सताइश पसन्दी आदमी को अन्धा बहरा कर देती है। (कन्ज़ुल उ़म्माल, किताबुल अख़्लाक़, अल ह़दीस:7428, जि.3, स.185)

(5) ह़ज़रते अबू अ़ब्दुल्लाह अन्ताकी علیہ رحمۃ اللہ الباقی फ़रमाते थे कि जो शख़्स अपने आ'माले ज़ाहिरा में **इख़्लास** का त़ालिब हो और दिल से **मख़्लूक़ पर नज़र** रखता हो, वोह त़-लबे मुह़ाल में मुब्तला है क्यूं कि **इख़्लास क़ल्ब का पानी है और रिया इस को मुर्दा करने वाली है।**

(तम्बीहुल मुग़तरीन, स.24)

यूं फ़िक्रे मदीना कीजिये

कोशिश कर के इस त़रह़ ग़ौरो ख़ौज़ (या'नी फ़िक्रे मदीना) कीजिये : "लोगों का मेरी **ता'रीफ़** में चन्द जुम्ले बोल देना या मुझे **सताइशी** (या'नी ता'रीफ़ भरी) **निगाहों** से देखना, या शोहरत मिल जाना नफ़्स के लिये यक़ीनन **बाइसे लज़्ज़त** है मगर उन की ता'रीफ़ मुझे मैदाने ह़श्र में बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में **काम्याबी व कामरानी** नहीं दिलवा सकती क्यूं कि येह लोग तो ख़ुद ख़ौफ़े इ़ताब से **लरज़ा बर अन्दाम** होंगे। उन की **ता'रीफ़** से मेरा **रिज़्क़** बढ़ेगा न उ़म्र में **इज़ाफ़ा** होगा और न ही आख़िरत में कोई **मक़ामो मरतबा** नसीब हो सकता है तो ऐसे लोगों की **ता'रीफ़ की ख़्वाहिश का क्या फ़ाएदा ?** मैं क्यूं इन लोगों को **दिखाने** के लिये नेक अ़मल करूं बल्कि मैं सिर्फ़ **अपने रब** عَزَّوَجَلَّ

की रिज़ा के लिये इबादत करूंगा । اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

आज बनता हूं मुअ़ज़्ज़ज़ जो खुले ह़श्र में ऐ़ब
हाए रुस्वाई की आफ़त में फंसूंगा या रब

झूटी ता'रीफ़ को पसन्द करना ह़राम है

आ'ला ह़ज़रत علیہ رحمۃ ربّ العزت फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 21 सफ़ह़ा 597 पर लिखते हैं : अगर अपनी **झूटी ता'रीफ़** को दोस्त रखे कि लोग उन फ़ज़ाइल से उस की सना (या'नी ता'रीफ़) करें जो उस में नहीं जब तो सरीह़ **ह़रामे क़त्ई** है । قَالَ اللّٰہُ (**अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया)

لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَفْرَحُوْنَ بِمَآ اَتَوْا وَّيُحِبُّوْنَ اَنْ يُّحْمَدُوْا بِمَا لَمْ يَفْعَلُوْا فَلَا تَحْسَبَنَّهُمْ بِمَفَازَةٍ مِّنَ الْعَذَابِ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۸۸﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : हरगिज़ न समझना उन्हें जो ख़ुश होते हैं अपने किये पर और चाहते हैं कि बे किये उन की ता'रीफ़ हो ऐसों को हरगिज़ अ़ज़ाब से दूर न जानना और उन के लिये दर्द नाक अ़ज़ाब है ।

(पारह : 3, आले इ़मरान :188)

ता'रीफ़ को पसन्द करना कब मुस्तह़ब है ?

आ'ला ह़ज़रत علیہ رحمۃ ربّ العزت मज़ीद लिखते हैं : हां अगर **ता'रीफ़** वाक़ेई हो तो अगर्चे तावील मा'रूफ़ो मश्हूर के साथ, जैसे **शम्सुल अइम्मा व फ़ख़्रुल उ़-लमा-इ व ताजुल आ़रिफ़ीन** व अम्सालु ज़ालिक (या'नी इमामों के आफ़्ताब, अहले इ़ल्म के लिये फ़ख़्र, और आरिफ़ों के ताज, और इसी क़िस्म के दूसरे तौसीफ़ी कलिमात (जो मद्ह़ की ता'रीफ़ो तौसीफ़ ज़ाहिर करें) कि मक़्सूद अपने अ़स्र लोग होते हैं और इस पर इस लिये **ख़ुश** न हो कि मेरी

ता'रीफ़ हो रही है बल्कि इस लिये कि इन लोगों की (ता'रीफ़) इन को **नफ़्ए़ दीनी** पहुंचाएगी सम्ए़ क़बूल से सुनेंगे जो इन को नसीह़त की जाएगी तो येह ह़क़ीक़त हुब्बे मद्ह़ (ता'रीफ़ की मह़ब्बत) नहीं बल्कि हुब्बे नस्ह़े मुस्लिमीन (मुसल्मानों की ख़ैर ख़्वाही की मह़ब्बत) है और वोह मह़ूज़ ईमान है। त़रीक़ए मुह़म्मदिय्या व ह़दीक़तुन्नदिय्या में है : "रियासत की चाहत और मह़ब्बत के तीन अस्बाब हैं, दूसरा येह है कि इक़्तिदार इस लिये चाहता है ताकि इस की वजह से निफ़ाज़े ह़क़ ए'ज़ाज़े दीन और लोगों की इस्लाह़ कर सके, अगर येह मम्नूअ़ उमूर म-सलन रिया तल्बीस, और वाजिब और सुन्नत के छोड़ने से ख़ाली हो तो न सिर्फ़ जाइज़ है बल्कि मुस्तह़ब (मूजिबे अज्रो सवाब है) चुनान्चे अल्लाह तआ़ला ने नेक बन्दों की ह़िकायत बयान फ़रमाई (कि वोह बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में अर्ज़ गुज़ार होते हैं) ऐ परवर्द गार ! हमें परहेज़गार और डरने वाले लोगों का इमाम (या'नी पेश्वा) बना दे। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि.21, स.597)

लोगों की मज़म्मत का ख़ौफ़ किस त़रह़ दूर करें ?

लोगों की मज़म्मत का ख़ौफ़ इस त़रह़ दूर किया जा सकता है कि अपना ज़ेह्न बना लीजिये कि लोगों के **मज़म्मत** करने से मेरी **मौत** जल्द नहीं आ जाएगी, न मेरे **रिज़्क़** में कमी बेशी होगी, अगर मेरा **रब** عَزَّوَجَلَّ मुझ से **राज़ी** है तो लोगों की नाराज़ी मेरा **बाल भी बीका** नहीं कर सकती। येह लोग तो ख़ुद **आ़जिज़** हैं कि अपने लिये नफ़्अ़ व नुक़्सान और मौत व ह़यात के **मालिक** नहीं तो मैं क्यूं इन की मज़म्मत के **ख़ौफ़** से नेक अ़मल करूं या छोड़ूं, **मुझे सिर्फ़ अपने रब** عَزَّوَجَلَّ **के ग़ज़ब से डरना चाहिये।**

यक़ीनन हर वोह शख़्स जो अपने दिल में बच्चों, दीवानों और

दीगर लोगों के अपने अ़मल पर आगाह होने से **फ़र्क़** मह़सूस करता हो वोह **रिया** के शाइबे में मुब्तला होता है क्यूं कि अगर वोह येह जान लेता कि **नफ़्अ़ व नुक़्सान** देने वाला और हर चीज़ पर **कुदरत** रखने वाला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही है और दूसरे किसी चीज़ पर कुदरत नहीं रखते तो उस के नज़्दीक बच्चों और दीगर लोगों का आगाह होना **बराबर** होता और बच्चों या बड़ों के मुत्तलअ़ होने से उस के दिल पर कोई **फ़र्क़** न पड़ता।

मालो दौलत की ह़िर्स से कैसे नजात ह़ासिल करें ?

मालो दौलत की ह़िर्स से नजात ह़ासिल करने के लिये अपना ज़ेहन बनाए कि **माल** देने और रोकने के सिल्सिले में **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला ही दिलों को मुसख़्ख़र फ़रमाने वाला है, येह लोग तो मजबूरे मह़ज़ हैं, रिज़्क़ देने वाली ज़ात सिर्फ़ **अल्लाह** तआ़ला की है। जो शख़्स लोगों के माल की **लालच** रखता है वोह **ज़लीलो रुस्वा** हो जाता है और अगर उसे माल मिल भी जाए तो देने वाले का **एह़सान मन्द** होना पड़ता है, तो जब माल का मिलना भी **यक़ीनी** नहीं और ज़िल्लतो रुस्वाई का **अन्देशा** भी है तो मैं क्यूं इबादत के ज़रीए लोगों को **मु-तअस्सिर** कर के उन से **माल** ह़ासिल करने की कोशिश करूं बल्कि **मैं अपने रब** عَزَّوَجَلَّ **को राज़ी करने के लिये इबादत करूंगा** اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب !　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दुन्या की मह़ब्बत से पीछा छुड़ा लीजिये

रियाकारी के इन तीनों **अस्बाब** का तअ़ल्लुक़ दुन्या की ह़द तक है लिहाज़ा अगर हम **दुन्या की मह़ब्बत** ही अपने दिल से निकाल दें तो

इन **अस्बाब** का रास्ता रोकना कोई मुश्किल काम नहीं जिस के नतीजे में اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ **रियाकारी** से जान छुड़ाना बेहद **आसान** हो जाएगा। सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **''दुन्या की महब्बत तमाम गुनाहों का सर है।''**

(मिश्कातुल मसाबीह, किताबुर्रिक़ाक़, अल हदीस:5212, जि.2, स.250)

पीछा मेरा दुन्या की महब्बत से छुड़ा दे
या रब मुझे दीवाना मदीने का बना दे

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(चौथा इलाज) इख़्लास अपना लीजिये

सरकारे वाला तबार, बे कसों के मददगार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''ऐ लोगो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये इख़्लास के साथ अमल करो क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ वोही आ'माल क़बूल फ़रमाता है जो उस के लिये इख़्लास के साथ किये जाते हैं और येह मत कहा करो कि मैं ने येह काम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और रिश्तेदारी की वजह से किया है।''

(सु-ननुद्दारे क़ुत्नी, كتاب الطهارت ، باب النية अल हदीस:130, जि.1, स.73)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिस तरह कपड़े से मैल कुचैल **साफ़** करने के लिये आ'ला क़िस्म का **साबुन** या सर्फ़ इस्ति'माल किया जाता है इसी तरह **रियाकारी** की गन्दगी से अपने दिल को साफ़ करने के लिये **इख़्लास** का साबुन दरकार है। इख़्लास रियाकारी की ज़िद है। इस अज़ीम दौलत को पाने के लिये इस के फ़ज़ाइल पर ग़ौर कीजिये :

''क़बूलिय्यत'' के छ हुरूफ़ की निस्बत से इख़्लास के 6 फ़ज़ाइल

(1) कुरआने ह़कीम में इर्शाद होता है:

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الْاٰخِرَةِ نَزِدْ لَهٗ فِيْ حَرْثِهٖ ۚ وَمَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا وَمَا لَهٗ فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ نَّصِيْبٍ ۝٢٠

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : जो आख़िरत की खेती चाहे हम उस की खेती बढ़ाएं और जो दुन्या की खेती चाहे हम उसे उस में से कुछ देंगे और आख़िरत में उस का कुछ ह़िस्सा नहीं।

(पारह : 25, अश्शूरा : 20)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस आयत के तह़्त लिखते हैं: (जो आख़िरत की खेती चाहे) या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा और जनाबे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की **ख़ुशनूदी** चाहे, रिया के लिये आ'माल न करे (हम उस की खेती बढ़ाएं) या'नी उसे ज़ियादा नेकियों की **तौफ़ीक़** देंगे, नेक काम आसान कर देंगे, आ'माल का **सवाब** बे ह़िसाब बख़्शेंगे। (और जो दुन्या की खेती चाहे) कि महज़ दुन्या कमाने के लिये नेकियां करे, **इज़्ज़तो जाह** के लिये आ़लिम, ह़ाजी बने, **ग़नीमत** के लिये ग़ाज़ी, (हम उसे उस में से देंगे और आख़िरत में उस का कुछ ह़िस्सा नहीं) क्यूं कि उस ने आख़िरत के लिये **अ़मल** किये ही नहीं, मा'लूम हुवा कि **रियाकार सवाब से महरूम रहता है** मगर शरअ़न उस का अ़मल दुरुस्त है, रिया की नमाज़ से फ़र्ज़ अदा हो जाएगा, मगर सवाब न मिलेगा इस लिये فِی الْآخِرَة की क़ैद लगाई। (नूरुल इरफ़ान, स. 774)

(2) नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''अपने दीन में **मुख़्लिस** हो जाओ, **थोड़ा अ़मल** भी तुम्हारे लिये **काफ़ी** होगा।''

(अल मुस्तदरक, किताबुर्रिक़ाक़, अल ह़दीस:7914, जि.5, स.435)

(3) ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूर रह़मते दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जो दुन्या से इस ह़ाल में मरा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये अपने तमाम आ'माल में **मुख़्लिस** था और नमाज़, रोज़े का पाबन्द था, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से **राज़ी** है।'' (अल मुस्तदरक, باب خطبة النبی ﷺ فی حجة الوداع रक़मुल ह़दीस:3330, जि.3, स.65, मुल्तक़ितन)

(4) ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जब आख़िरी ज़माना आएगा तो मेरी उम्मत तीन गुरोह में बट जाएगी। एक गुरोह ख़ालिसन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की **इबादत** करेगा दूसरा गुरोह **दिखावे** के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत करेगा और तीसरा गुरोह इस लिये इबादत करेगा कि वोह लोगों का **माल** हड़प कर जाए। जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत उन को उठाएगा तो लोगों का **माल** खा जाने वाले से फ़रमाएगा : मेरी इ़ज़्ज़त और मेरे जलाल की क़सम ! मेरी इबादत से तेरा क्या इरादा था ?'' अ़र्ज़ करेगा : ''तेरी इ़ज़्ज़त और तेरे जलाल की क़सम ! लोगों को दिखाना।'' **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : ''इस की कोई नेकी मेरी बारगाह में **मक़्बूल** नहीं, इसे **दोज़ख़** में डाल दो।'' फिर ख़ालिसन अपनी इबादत करने वाले से फ़रमाएगा ''मेरी इ़ज़्ज़त और मेरे जलाल की

क़सम ! मेरी इबादत से तेरा क्या **मक़्सूद** था ?'' वोह अ़र्ज़ करेगा : ''तेरी इ़ज़्ज़त व जलाल की क़सम ! मेरे इरादे को तू बेहतर जानता है, मैं ने तेरी **रिज़ा** चाही।'' इर्शाद फ़रमाएगा : ''मेरे बन्दे ने सच कहा, इसे जन्नत की त़रफ़ ले जाओ।''

(अल मो'जमुल औसत़, रक़म:5105, जि.4, स.30)

(5) ह़ज़रते सय्यदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जिस की **निय्यत** आख़िरत कमाना हो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की **ग़िना** उस के दिल में डाल देगा और उस की मु-तफ़र्रिक़ात को जम्अ़ कर देगा और उस के पास दुन्या **ज़लील** हो कर आएगी और जिस की **निय्यत** दुन्या त़-लबी हो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **फ़क़ीरी** उस की आंखों के सामने कर देगा और उस पर उस के काम परागन्दा कर देगा और उस के पास आएगी इतनी जितनी उस के लिये **लिखी** गई। (मिश्कातुल मसाबीह़, كتاب الرقاق،باب الرياء و السمعة अल ह़दीस:5320, जि.2, स.267)

ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीस के तह़्त लिखते हैं : या'नी **इख़्लास** वाले को रब तआ़ला दिली **इस्तिग़्ना** भी बख़्शता है और उस की मु-तफ़र्रिक़ ह़ाजतें यकजा जम्अ़ भी फ़रमा देता है कि घर **बैठे** उस की सारी ज़रूरतें पूरी होती रहती हैं। ज़रूरतों के पास वोह नहीं जाता, ज़रूरिय्यात उस के **पास** आती हैं। जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का हो जाता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस का हो जाता है। जिस जानवर को कीले (खूंटे) से बांध देते हैं उस की हर ज़रूरत वहां ही पहुंच जाती है।

दुन्या से मुराद दुन्यावी ने'मतें भी हैं और दुन्या के लोग भी या'नी दुन्या और दुन्यादार उस के पास **ख़ादिम** बन कर ह़ाज़िरी देते हैं जैसा कि **औलियाउल्लाह** के आस्तानों पर देखा जा रहा है। शे'र

वोह कि इस दर का हुवा ख़ल्क़े ख़ुदा उस की हुई

वोह कि इस दर से फिरा अल्लाह उस से फिर गया

फ़क़ीरी से मुराद है लोगों की **मोह़ताजी,** उन का ह़ाजत मन्द रहना है उन के दरवाज़ों पर **धक्के** खाना उन की **ख़ुशामदें** करना। या'नी उस का दिल **परेशान** रहे कभी रोटी के पीछे दौड़ेगा कभी कपड़े की फ़िक्र में मारा मारा फिरेगा कभी दीगर ज़रूरिय्यात के लिये **परेशान** फिरेगा **अल्लाह अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ करने का वक़्त ही न पाएगा येह भी तजरिबे से साबित है। या'नी उस की ऐसी दौड़ धूप से उस की दुन्या में **इज़ाफ़ा** न होगा बल्कि उस की परेशानियों में ही इज़ाफ़ा होगा **दुन्या** इतनी ही मिलेगी जितनी मुक़द्दर में है। (मिर्आतुल मनाजीह़, जि.7, स.131)

(6) मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानिय्यत عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है **:** "अगर तुम में से कोई शख़्स किसी ऐसी सख़्त चट्टान में कोई अ़मल करे जिस का न तो कोई दरवाज़ा हो और न ही रोशन दान, तब भी उस का अ़मल ज़ाहिर हो जाएगा और जो होना है हो कर रहेगा।" (अल मुस्नद लिल इमाम अह़मद बिन ह़म्बल, मुस्नदो अबी सईद ख़ुदरी, अल ह़दीस**:**11230, जि.4, स.57)

ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मौलाना मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عليه رحمة الله الغنى इस ह़दीस के तह़्त लिखते हैं **:** इस फ़रमाने आ़ली का

मक़्सद येह है कि तुम **रिया** कर के अपने सवाब क्यूं बरबाद करते हो तुम **इख़्लास** से नेकियां करो ख़ुफ़्या करो **अल्लाह** तआ़ला तुम्हारी नेकियां ख़ुद ब ख़ुद लोगों को बता देगा लोगों के दिल तुम्हें **नेक** मानने लगेंगे। येह निहायत ही मुजर्रब है बा'ज़ लोग **ख़ुफ़्या तहज्जुद** पढ़ते हैं लोग ख़्वाह म ख़्वाह उन्हें तहज्जुद ख़्वां कहने लगते हैं, तहज्जुद बल्कि हर **नेकी का नूर** चेहरे पर नुमूदार हो जाता है। जिस का दिन रात मुशा-हदा हो रहा है। लोग हुज़ूरे ग़ौसे पाक ख़्वाजा अजमेरी को **वली** कहते हैं क्यूं कि रब तआ़ला कहलवा रहा है येह है इस फ़रमाने आ़ली का ज़ुहूर।

(मिर्आतुल मनाजीह़, जि.7, स.145)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मुख़्लिस मोमिन की मिसाल

क़ुरआने पाक में मुख़्लिस मोमिन की मिसाल इन अल्फ़ाज़ के साथ दी गई है :

وَمَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ وَتَثْبِيْتًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍۭ بِرَبْوَةٍ اَصَابَهَا وَابِلٌ فَاٰتَتْ اُكُلَهَا ضِعْفَيْنِ ۚ فَاِنْ لَّمْ يُصِبْهَا وَابِلٌ فَطَلٌّ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۲۶۵﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और उन की कहावत जो अपने माल **अल्लाह** की रिज़ा चाहने में ख़र्च करते हैं और अपने दिल जमाने को उस बाग़ की सी है जो भोड़ (रेतीली ज़मीन) पर हो उस पर ज़ोर का पानी पड़ा तो दूने मेवे लाया फिर अगर ज़ोर का मींह उसे न पहुंचे तो ओस काफ़ी है और **अल्लाह** तुम्हारे काम देख रहा है।

(पारह : 3, अल ब-क़रह : 265)

ह़ज़रते सदरुल अफ़ाज़िल सय्यिदुना मौलाना मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी علیہ رحمۃ اللہ الھادی **ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में इस के तह़्त लिखते हैं :

कि येह **मोमिने मुख़्लिस** के आ'माल की एक मिसाल है कि जिस त़रह़ बुलन्द ख़ित्ते की **बेहतर ज़मीन** का बाग़ हर ह़ाल में ख़ूब **फलता** है ख़्वाह बारिश कम हो या ज़ियादा ! ऐसे ही **बा इख़्लास** मोमिन का स-दक़ा और इन्फ़ाक़ ख़्वाह कम हो या ज़ियादा **अल्लाह** तआ़ला उस को **बढ़ाता** है और **वोह तुम्हारी निय्यत और इख़्लास को जानता है ।**

(ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान, स.81)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मुख़्लिस कौन ?

इन्सान मुख़्लिस कब होता है ? इस बारे में **अस्लाफ़े किराम** رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى اَجْمَعِيْن के चन्द अक़्वाल मुला-ह़ज़ा हों :

(1) ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन मुआ़ज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से सुवाल हुवा कि **इन्सान कब मुख़्लिस होता है ?** फ़रमाया : ''जब **शीर ख़्वार बच्चे** की त़रह़ उस की **आ़दत** हो । शीर ख़्वार बच्चे की कोई **ता'रीफ़** करे तो उसे **अच्छी** नहीं लगती और **मज़म्मत** करे तो उसे **बुरी** नहीं मा'लूम होती । जिस त़रह़ वोह अपनी **ता'रीफ़ व मज़म्मत** से **बे परवाह** होता है । इसी त़रह़ **इन्सान जब ता'रीफ़ व मज़म्मत की परवाह न करे तो मुख़्लिस कहा जा सकता है ।''**

(अख़्लाक़ुस्सालिह़ीन मत़्बूआ़ मक-त-बतुल मदीना बाबुल मदीना कराची)

(2) ह़ज़रते ज़ुन्नून मिस्री علیه رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی से किसी ने पूछा कि **आदमी किस वक़्त समझे कि वोह मुख़्लिसीन में से है ?** तो आप ने फ़रमाया कि **जब वोह आ'माले सालिह़ा में पूरी कोशिश सर्फ़ कर दे और इस को पसन्द करे कि मैं मुअ़ज़्ज़ज़ न समझा जाऊं ।**

(तम्बीहुल मुग़तर्रीन, स.23)

(3) किसी इमाम से पूछा गया : ''**मुख़्लिस कौन है ?**'' तो उन्हों ने इर्शाद फ़रमाया: ''मुख़्लिस वोह है जो अपनी **नेकियां** इस त़रह़ **छुपाए** जिस त़रह़ अपने **गुनाह छुपाता है ।**''

(4) एक और बुज़ुर्ग رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیہ से अ़र्ज़ किया गया : ''इख़्लास की **इन्तिहा** किया है ?'' तो उन्हों ने इर्शाद फ़रमाया : ''वोह येह कि **लोगों से ता'रीफ़ की ख़्वाहिश न करो ।**''

(अज़्ज़वाजिर, الکبیرۃالثانیۃ الشرك الاصغر.....الخ،خاتمۃ فی الاخلا, जि.1, स.90)

यक्सां हो मद्ह़ो ज़म मुझ पे कर दो करम
न ख़ुशी हो न ग़म ताजदारे ह़रम

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा सब ने'मतों से बढ़ कर है

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنہُ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अहले जन्नत से फ़रमाएगा : ''ऐ जन्नतियो !'' तो वोह अ़र्ज़ करेंगे : ''ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ ! हम ह़ाज़िर हैं और भलाई तो तेरे ही दस्ते क़ुदरत में है ।'' **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : ''क्या तुम राज़ी हो ?'' तो वोह अ़र्ज़ करेंगे : ''ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ ! हम क्यूं न राज़ी हों कि तू ने हमें वोह कुछ अ़त़ा फ़रमाया जो तू ने अपनी मख़्लूक़ में से किसी को अ़त़ा नहीं फ़रमाया ।'' तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : ''मैं तुम्हें इस से भी अफ़्ज़ल ने'मत अ़त़ा न फ़रमाऊं ?'' वोह अ़र्ज़ करेंगे : ''इस से अफ़्ज़ल शै कौन सी होगी ?'' तो

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : ''मैं तुम्हें अपनी **रिज़ा** सोंपता हूं लिहाज़ा ! आज के बा'द कभी तुम से नाराज़ न होउंगा।''

(बुख़ारी, जि.4, स.260, ह़दीस:6539)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(पांचवां इलाज) निय्यत की ह़िफ़ाज़त कीजिये

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''आ'माल का दारो मदार **निय्यतों** पर है और हर शख़्स के लिये वोही है जिस की वोह **निय्यत** करे।''

(सह़ीहुल बुख़ारी, کتاب الایمان، باب ماجاء ان الاعمال.....الخ, अल ह़दीस:54, स.7)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, बि इज़्ने परवर्द गार दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से पूछा गया कि ''एक आदमी शुजाअ़त के **इज़हार,** दूसरा क़ौमी **ग़ैरत** और तीसरा **रियाकारी** की ग़रज़ से लड़ता है, इन में से कौन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद कर रहा है ?''... फ़रमाया, ''जो शख़्स सिर्फ़ इस **ग़रज़** से लड़े कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का कलिमा **बुलन्द** हो, वोह उस के रास्ते में **मुजाहिद** है।''

(सह़ीह़ुलबुख़ारी, کتاب الجهادوالسیر/کتاب التوحید،باب من قاتل لکتون کلمة.....الخ/باب قوله تعالی ولقد سبقت .....الخ، अल ह़दीस:281/7458, जि.2/4, स.256/561)

इस ह़दीस से मा'लूम हुवा तमाम **नेकियों** के सवाब के ह़ुसूल के लिये **इख़्लास** और रिज़ाए इलाही शर्त़ है। (फ़ुयूज़ुल बारी, जि.11,12, स.194)

निय्यत किसे कहते हैं ?

निय्यत लु-ग़वी तौ़र पर दिल के **पुख़्ता इरादे** को कहते हैं और शरअ़न इ़बादत के इरादे को **निय्यत** कहा जाता है।

(माख़ूज़ अज़ नुज़्हतुल क़ारी शर्हे सह़ीहुल बुख़ारी, जि.1, स.226)

जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा उतना सवाब भी ज़ियादा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! एक अ़मल में जितनी **निय्यतें** होंगी उतनी नेकियों का **सवाब** मिलेगा, म-सलन मोह़ताज क़राबत दार की मदद करने में अगर निय्यत फ़क़त लِوَجْهِ اللّٰه (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये) देने की होगी तो एक निय्यत का **सवाब** पाएगा और अगर सिलए रेह़्मी की **निय्यत** भी करेगा तो दोहरा **सवाब** पाएगा। (अशिअ़ुअ़तुल्लम्आ़त, जि.1, स.36) **इसी** त़रह़ मस्जिद में नमाज़ के लिये जाना भी एक अ़मल है इस में बहुत सी **निय्यतें** की जा सकती हैं, इमामे अहले सुन्नत अश्शाह **मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 5 सफ़ह़ा 673 में इस के लिये चालीस निय्यतें बयान कीं और फ़रमाया : "बेशक जो **इल्मे निय्यत** जानता है एक एक फ़े'ल को अपने लिये कई कई **नेकियां** कर सक्ता है।"

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि.5, स.673)

बल्कि मुबाह़ कामों में भी अच्छी **निय्यतें** करने से **सवाब** मिलेगा, म-सलन ख़ुश्बू लगाने में इत्तिबाए़ सुन्नत, ता'ज़ीमे मस्जिद, फ़रह़ते दिमाग़ और अपने इस्लामी भाइयों से ना पसन्दीदा बू दूर करने की **निय्यतें** हों तो हर निय्यत का अलग **सवाब** होगा।

(अशिअ़ुअ़तुल्लम्आ़त, जि.1, स.37)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

स-दक़ा देने से पहले निय्यत पर ग़ौर

हज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عليه رَحْمَةُ اللهِ القوی फ़रमाते हैं कि "बुज़ुर्गाने दीन عليهم رحمة الله المبين में से अगर कोई स-दक़ा करना चाहता तो वोह **ग़ौरो फ़िक्र** करता और सोचता, अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की **रिज़ा** के लिये होता तो कर देता।"

(एह्याउल उ़लूम, كتاب المراقبة والمحاسبة जि.5, स.133)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हर काम से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बिला शुबा **अच्छी निय्यत** करना ऐसा अ़मल है जो मेह़नत के ए'तिबार से बेह़द हल्का, लेकिन **अज्रो सवाब** के लिह़ाज़ से ह़द द-रजा **अ़ज़ीम** है। इस लिये हमें चाहिये कि हर नेक अ़मल के शुरूअ़ करने से पहले **अच्छी अच्छी निय्यतें** कर लें ह़त्ता कि खाने, पीने, लिबास, नींद और निकाह़ करने में भी अच्छी निय्यत शामिले ह़ाल हो। म-सलन **खाने पीने** से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की **इत़ाअ़त पर क़ुव्वत** ह़ासिल करने की **निय्यत** हो। **लिबास** पहनते वक़्त येह निय्यत हो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे अपनी पोशीदा चीज़ें **छुपाने** का हुक्म दिया है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की **ने'मत** के इज़्हार की **निय्यत** हो। **सोने** से येह मक़्सूद हो कि जो इ़बादात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने **फ़र्ज़** की हैं इन को अदा करने में **मदद** ह़ासिल हो। निकाह़ करने में पाक दामनी ह़ासिल करने और ह़राम से बचने की निय्यत हो।

मदीना : अच्छी अच्छी निय्यतों से मु-तअ़ल्लिक़ रहनुमाई के लिये, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का सुन्नतों भरा केसिट बयान **"निय्यत का फल"** और निय्यतों से मु-तअ़ल्लिक़ आप के मुरत्तब कर्दा **कार्ड** या **पेम्फ़्लेट मक-त-बतुल मदीना** की किसी भी शाख़ से हदिय्यतन ह़ासिल फ़रमाएं।

''चल मदीना'' के सात हुरूफ़ की निस्बत से अच्छी निय्यत के 7 फ़ज़ाइल

(**1**) **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **है : मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है ।**

(अल मो'जमुल कबीर लित्त़-बरानी, अल ह़दीस:5942, जि.6, स.185)

(2) शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है **:** ''सच्ची निय्यत सब से **अफ़्ज़ल अ़मल** है ।''

(जामिउ़ल अह़ादीस, قسم الاقوال, अल ह़दीस:3554, जि.2, स.19)

(**3**) ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है **:** ''**अच्छी निय्यत** बन्दे को **जन्नत** में दाख़िल कर देती है ।'' (कन्ज़ुल उ़म्माल, كتاب الاخلاق،قسم الاقوال ،حرف النون باب النية अल ह़दीस:7245, जि.3, स.169)

(**4**) मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है **:** ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आख़िरत की **निय्यत** पर दुन्या **अ़त़ा** फ़रमा देता है लेकिन दुन्या की **निय्यत** पर आख़िरत **अ़त़ा** फ़रमाने से इन्कार कर देता है ।'' (कन्ज़ुल उ़म्माल, كتاب الاخلاق،قسم الاقوال ،حرف الزاي، باب الزهد अल ह़दीस:6053, जि.3, स.75)

(**5**) मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है **:** ''**अच्छी निय्यत** अ़र्श से चिमट जाती है पस जब कोई बन्दा अपनी निय्यत को **सच्चा** कर देता (या'नी अपनी निय्यत के मुत़ाबिक़ अ़मल करता) है तो अ़र्श **हिलने** लग जाता है, फिर उस बन्दे को **बख़्श** दिया जाता है ।''

(तारीखे़ बग़दाद, अल क़ासिम, अल ह़दीस:6926, जि.12, स.444)

(**6**) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, ''जिस ने **नेकी** का इरादा किया फिर उसे न किया तो उस के लिये एक नेकी लिखी जाएगी ।'' (सह़ीह़ मुस्लिम, کتاب الرعات، باب اذاهم العبد بحسنة كتبت.....الخ अल ह़दीस:130, स.79)

(**7**) ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि सब से अफ़्ज़ल आ'माल फ़राइज़ अदा करना, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़राम कर्दा अश्या से बचना और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में निय्यतों को दुरुस्त करना है ।''

(इत्तिह़ाफ़ुस्सा–दतुल मुत्तक़ीन, کتاب النیةو الاخلاص जि.13, स.19)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जैसी निय्यत वैसा सिला

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू कब्शा अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने **नबिय्ये करीम रऊफ़ुर्रह़ीम** عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को फ़रमाते हुए सुना : ''लोग **चार** क़िस्म के हैं : **पहला :** वोह जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने माल और इ़ल्म अ़त़ा फ़रमाया तो वोह परहेज़गारी करता, सिलए रेह़मी करता और इस ने'मत में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ह़क़ जानता है तो येह **बेहतरीन** मरतबा व मन्ज़िल में है। **दूसरा :** वोह शख़्स जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इ़ल्म अ़त़ा फ़रमाया उस के पास माल नहीं और वोह **निय्यत** में सच्चा है और कहता है कि अगर मेरे पास माल होता तो फ़ुलां की त़रह़ अ़मल करता तो वोह अपनी **निय्यत** के साथ है। और इन दोनों का **अज्रो सवाब** बराबर है। **तीसरा :** वोह शख़्स जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने माल अ़त़ा फ़रमाया और इ़ल्म अ़त़ा न फ़रमाया और वोह अपना माल बग़ैर इ़ल्म के ख़र्च करता, परहेज़गारी नहीं करता, न

सिलए रेह़्मी करता और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मत में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ह़क़ नहीं जानता तो येह **बद तरीन** मरतबा व मन्ज़िल में है। **चौथा :** वोह शख़्स जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने माल और इ़ल्म नहीं दिया और वोह कहता है कि अगर मेरे पास माल होता तो मैं फुलां की त़रह़ अ़मल करता तो वोह अपनी **निय्यत** के साथ है और इन दोनों का **गुनाह** बराबर है।'' (जामिउ़त्तिरमिज़ी, كتاب الزهد ، باب ماجاء مثل الدنيا.....الخ अल ह़दीस:2332, जि.4, स.145)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आपने ! कि एक शख़्स ने **अपनी अच्छी** निय्यत की बिना पर कुछ किये बग़ैर ख़र्च का सवाब ह़ासिल कर लिया, जब कि दूसरा बग़ैर ख़र्च किये ही ह़राम फ़े'ल का मुर्तकिब ठहरा। **फ़र्क़** सिर्फ़ अच्छी और बुरी निय्यत की वजह से पैदा हुवा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मार खाना निय्यते सालेह़ से ज़ियादा आसान है

ह़ज़रते नुऐ़म बिन ह़म्माद عليہ رحمۃ اللہ الوھاب फ़रमाते थे कि हमारी पीठ का कोड़ों की मार खाना हमारे लिये **निय्यते सालेह़ा** से ज़ियादा आसान है।

(तम्बीहुल मुग़्तरीन, स.25)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जिहाद का सवाब

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि हम ग़ज़्वए तबूक से नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ वापस आए तो आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَام ने इर्शाद फ़रमाया : ''बेशक हम ने मदीनए मुनव्वरह में ऐसे लोगों को छोड़ा कि हम जिस पहाड़ी रास्ते और वादी से गुज़रे वोह

हमारे साथ थे और उ़ज़्र के सबब रुक गए थे।" (सह़ीहुल बुख़ारी, كتاب الجهاد والسير अल ह़दीस:2839, जि.2, स.265)

ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُالْمَنَّان इस ह़दीस के तह़त लिखते हैं : मुख़्तलिफ़ जमाअ़तों व क़बीलों के मुसल्मान वोह भी हैं जो उस ग़ज़्वे में जाने की दिल से तमन्ना करते थे मगर किसी सख़्त मजबूरी की वजह से न जा सके। (वोह तुम्हारे साथ थे) इस त़रह़ कि **जिस्म** उन के मदीने में रहे और **दिल** तुम्हारे साथ जिहाद में रहे। नीज़ उन की **निय्यत**, उन के इरादे तुम्हारे साथ रहे या वोह **अज्रो सवाब** में तुम्हारे साथ रहे कि तुम्हारे पीछे तुम्हारे घर बार की देखभाल और तुम्हारे बाल बच्चों की ख़िदमत करते रहे। इस त़रह़ वोह नफ़्से **सवाब** में तुम्हारे साथ शरीक रहे। अगर्चे अ़-मली जिहाद में तुम उन से बढ़ गए। इस वजह से ग़नीमत में उन का ह़िस्सा न होगा। इस से मा'लूम हुवा कि **निय्यते ख़ैर** का बड़ा द-रजा है। इस त़रह़ किसी नेकी से रह जाने पर अफ़्सोस करना भी **सवाब** है। (मिर्आतुल मनाजीह़, जि.4, स.429/439)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ख़ुलूसे निय्यत

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُاللّٰهِ الْغَفَّار दिमिश्क़ में मुक़ीम थे और **ह़ज़रते** सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की तय्यार कर्दा मस्जिद में ए'तिकाफ़ किया करते थे। एक मरतबा इन के दिल में **ख़याल** आया कि कोई ऐसी सूरत पैदा हो जाए कि मुझे इस मस्जिद का मु-तवल्ली (या'नी इन्तिज़ाम संभालने वाला) बना दिया जाए। चुनान्चे आप ने ए'तिकाफ़ में इज़ाफ़ा कर दिया और इतनी कसरत से नमाज़ें पढ़ीं

कि हमा वक़्त नमाज़ में मश्ग़ूल देखे जाते। लेकिन किसी ने आप की त़रफ़ तवज्जोह नहीं की। एक साल इसी त़रह़ गुज़र गया। एक मरतबा आप मस्जिद से बाहर आए तो निदाए ग़ैबी आई : "**ऐ मालिक ! तुझे अब तौबा करनी चाहिये।**" येह सुन कर आप को एक साल तक अपनी ख़ुद ग़-रज़ाना इ़बादत पर शदीद रन्जो शर्मिन्दगी हुई और आप अपने क़ल्ब को रिया से ख़ाली कर के **ख़ुलूसे निय्यत** के साथ सारी रात इ़बादत में मश्ग़ूल रहे।

सुब्ह़ के वक़्त मस्जिद के दरवाज़े पर लोगों का एक मज्मअ़ मौजूद था, और लोग आपस में कह रहे थे कि "मस्जिद का इन्तिज़ाम ठीक नहीं है लिहाज़ा इसी शख़्स को मु-तवल्ली बना दिया जाए और तमाम इन्तिज़ामी उमूर इस के सिपुर्द कर दिये जाएं।" सारा मज्मअ़ इस बात पर मुत्तफ़िक़ हो कर आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار के पास पहुंचा और आप के नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बा'द उन्हों ने आप से अ़र्ज़ की के "हम बाहमी त़ौर पर किये गए मुत्तफ़िक़ा फ़ैसले से आप को मस्जिद का मु-तवल्ली बनाना चाहते हैं।" आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ की : "ऐ **अल्लाह**! मैं एक साल तक **रियाकाराना इ़बादत** में इस लिये मश्ग़ूल रहा कि मुझे मस्जिद की **तौलियत** ह़ासिल हो जाए मगर ऐसा न हुवा अब जब कि मैं **सिद्क़े दिल** से तेरी इ़बादत में मश्ग़ूल हुवा तो तमाम लोग मुझे मु-तवल्ली बनाने आ पहुंचे और मेरे ऊपर येह बार डालना चाहते हैं, लेकिन मैं तेरी अ़-ज़मत की क़सम खाता हूं कि मैं न तो अब तौलियत क़बूल करूंगा और न मस्जिद से बाहर निकलूंगा।" येह कह कर फिर इ़बादत में मश्ग़ूल हो गए। (तज़्किरतुल औलिया, बाब चहारुम, ज़िक्र मालिक बिन दीनार رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه, जि.1, स.48,49)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नेक आ'माल की निय्यत कर लिया करो

मरवी है कि एक त़ालिबे इ़ल्म ने **उ़-लमाए किराम** की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की, "मुझे कोई ऐसा अ़मल बताइये कि जिस के बाइ़स मैं हमेशा **नेकियां** ह़ासिल करता रहूं, क्यूं कि मुझे येह बात मह़बूब नहीं कि रात और दिन में मुझ पर कोई ऐसा लम्ह़ा आए कि मैं उस में कोई **नेक अ़मल** न कर रहा हूं।" उसे जवाब दिया गया कि "जिस क़दर मुम्किन हो नेकी करो, जब थक जाओ तो नेक आ'माल की **निय्यत** करो, **क्यूं कि निय्यत करने वाला भी नेक अ़मल करने वाले की मिस्ल है।"**

(एह़्याउल उ़लूमिद्दीन, كتاب النية والاخلاص والصدق،الباب الاول فی النية जि.5, स.89)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب !　　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(छटा इ़लाज) दौराने इ़बादत शैत़ानी वस्वसों से बचिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इख़्लास क़बूलिय्यत की कुन्जी (चाबी) है, लिहाज़ा जिस त़रह़ नेक अ़मल से पहले दिल में **इख़्लास** होना ज़रूरी है इसी त़रह़ इ़बादत के दौरान उसे क़ाइम रखना भी ज़रूरी है क्यूं कि शैत़ान मुसल्सल हमारे दिल में वस्वसे डालने की कोशिश में लगा रहता है। ह़ज़रते फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ (علیه رحمة الله الرزّاق) फ़रमाते थे कि जो शख़्स अपने आ'माल में साह़िर (या'नी जादूगर) से ज़ियादा **होशियार** न होगा ज़रूर **रिया में** फंस जाएगा।

(तम्बीहुल मुग़्तरीन, स.23)

इ़बादत के दौरान शैत़ानी वस्वसों से छुटकारे के लिये तीन चीज़ें ज़रूरी हैं : (1) वस्वसे को पहचानना, (2) उसे ना पसन्द करना, (3) उसे

क़बूल करने से इन्कार करना। म-सलन किसी ने अच्छी अच्छी **निय्यतें** कर के नमाज़े तहज्जुद अदा करना शुरूअ़ की, अब दौराने नमाज़ शैत़ान ने दिल में **रियाकारी** का वस्वसा डाला कि जब लोगों को मेरी तहज्जुद गुज़ारी का पता चलेगा तो वोह मुझ से बहुत मु-तअस्सिर होंगे, अब इस वस्वसे को फ़ौरी त़ौर पर **पहचानना** कि येह शैत़ान की त़रफ़ से है इस नमाज़ी के लिये बहुत ज़रूरी है। फिर इसे **ना पसन्द** भी जाने कि **ख़ालिक़** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये किये जाने वाले अ़मल से **मख़्लूक़** को मु-तअस्सिर करने की कोशिश करना **ग़ज़बे इलाही** عَزَّوَجَلَّ को दा'वत देने के मु-तरादिफ़ है, फिर इस **वस्वसे से अपनी तवज्जोह हटा ले**।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर्चे येह काम बहुत **मुश्किल** सही मगर **ना मुम्किन** नहीं, आग़ाज़ में येह काम बेह़द मुश्किल मह़सूस होता है, लेकिन जब तकल्लुफ़ कर के एक अ़र्से तक इस पर सब्र करे तो **अल्लाह** तआ़ला के फ़ज़्लो करम और हुस्ने तौफ़ीक़ से येह काम आसान हो जाता है, चुनान्चे हमारा काम कोशिश करना है काम्याबी देने वाली ज़ात **रब्बे काएनात** عَزَّوَجَلَّ की है : **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۶۹﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जिन्हों ने हमारी राह में कोशिश की ज़रूर हम उन्हें अपने रास्ते दिखा देंगे और बेशक **अल्लाह** नेकों के साथ।

(सूरए अ़न्कबूत : 69)

कोशिश के बा वुजूद वस्वसा दूर न हो तो ?

अगर हमारे ना पसन्द करने के बा वुजूद भी हमारा नफ़्स शैत़ान की दी हुई राह पर चल पड़े तो **अल्लाह** तआ़ला की रह़मत से उम्मीद है कि **रियाकारी** का गुनाह हमारे ज़िम्मे नहीं लिखा जाएगा । हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى एह़याउल उ़लूम में लिखते हैं :

"जान लीजिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बन्दों को उन की **त़ाक़त** के मुत़ाबिक़ ही **मुकल्लफ़** बनाता है और इन्सान के बस में नहीं कि वोह **शैत़ानी वस्वसों** को रोक सके या त़बीअ़त को इस ह़ालत पर ले आए कि वोह **ख़्वाहिशात** की त़रफ़ माइल न हो । इन्सान तो येही कर सकता है कि वोह ख़्वाहिशात का मुक़ाबला उस कराहत से करे जो अन्जाम की मा'रिफ़त, इ़ल्मे दीन और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और आख़िरत पर ईमान की वजह से उसे ह़ासिल हुई है, जब वोह ऐसा कर ले तो उस ने इस अ़मल की अदाएगी में **इन्तिहाई कोशिश** कर ली और वोह इसी बात का **मुकल्लफ़** है । इस बात पर **अह़ादीसे** मुबा-रका दलालत करती हैं जैसा कि मरवी है हुज़ूरे पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सहा़बए किराम رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में शिकायत करते हुए अ़र्ज़ किया कि हमारे दिलों में कुछ ऐसे **ख़यालात** आते हैं कि अगर हम आस्मान से गिर जाएं और हमें परिन्दे उचक लें या हवा हमें किसी जगह से उठा कर किसी दूसरी जगह फेंक दे तो हमें येह बात उन ख़यालात को ज़बान पर लाने से ज़ियादा **पसन्द** है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पूछा क्या तुम उन ख़यालात को ना पसन्द करते हो ? उन्हों ने अ़र्ज़ किया : जी हां ।

तो आप ने फ़रमाया : "येह तो वाज़ेह़ **ईमान** है ।" (सु-ननो अबी दावूद, كتاب الادب،باب فی رد الوسوسة अल ह़दीस:5111, जि.4, स.425) और उन के दिलों में वस्वसे और उन की **ना पसन्दीदगी** पाई जाती थी तो येह नहीं कहा जा सकता कि सरीह़ ईमान से आप ने वस्वसे **मुराद** लिये तो अब सिर्फ़ एक बात रह गई या'नी इस से मुराद इन वस्वसों की कराहत थी जो उन (वस्वसों) के साथ होती थी । रिया अगर्चे बहुत बड़ा **गुनाह** है लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़क़ में **वस्वसों से कम** है तो जब ना पसन्द करने की वजह से **बड़ा गुनाह** दूर हो गया तो **रिया** का ज़रर ब द-र-जए औला **दूर** हो जाना चाहिये ।

(एह़्याउल उ़लूम, كتاب ذم الجاه والرياء،بيان دواء الرياء......الخ जि.3, स.385)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(सातवां इलाज) तन्हाई हो या हुजूम यक्सां अ़मल कीजिये

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जब बन्दा अ़लानिया नमाज़ पढ़े तो भी **अच्छी** और खु़फ़्या नमाज़ पढ़े तो भी **अच्छी** तो **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है कि येह मेरा **सच्चा बन्दा है** । (सु-ननो इब्ने माजह, كتاب الزهد،باب التوقی علی العمل अल ह़दीस:4200, जि.4, स.468)

ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَةُ الْمَنَّان इस ह़दीस के तह़्त लिखते हैं : या'नी इस बन्दे में **रियाकारी** नहीं है येह बन्दा **मुख़्लिस** है अगर रियाकार होता तो **अ़लानिया** नमाज़ **अच्छी** त़रह़ पढ़त **खु़फ़्या** में **मा'मूली** त़रह़, जब येह खु़फ़्या में भी अच्छी त़रह़ पढ़ता है तो **मुख़्लिस** ही है । (मिर्आतुल मनाजीह़, जि.7, स.140)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हम तन्हाई में हों या इस्लामी भाइयों के दरमियान, ख़ूब कोशिश कर के दोनों अ़मल को **यक्सां** अन्दाज़ में करने की कोशिश करें। म-सलन जिस **ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़** से लोगों के सामने नमाज़ पढ़ने की कोशिश करते हैं उसी अन्दाज़ को तन्हाई में भी **क़ाइम** रखें और जिस **काम** को लोगों के सामने करने से **झिजकते** हैं तन्हाई में वोह **काम** न किया करें। शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो काम लोगों के **सामने** करने को ना **पसन्द** करते हो वोह **तन्हाई** में भी **न** किया करो।"

(अल जामिउ़स्सग़ीर, حرف الميم अल ह़दीस:7973, जि.2, स.487)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(आठवां इ़लाज) नेकियां छुपाइये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें चाहिये कि ह़त्तल इम्कान अपनी नेकियों को उसी त़रह़ छुपाएं जिस त़रह़ अपने गुनाहों को छुपाते हैं और इसी पर क़नाअ़त करें कि **अल्लाह** तआ़ला हमारी नेकी को जानता है। बिल ख़ुसूस पोशीदा नेकी करने के बा'द नफ़्स की ख़ूब निगरानी करें क्यूं कि हो सकता है कि नफ़्स में उस इ़बादत को ज़ाहिर करने की ह़िर्स जोश मारे और यूं कहे कि अगर तेरे इस अ़ज़ीम अ़मल पर लोगों को इत्तिलाअ़ हो जाए तो वोह भी इ़बादात में मश्ग़ूल हो जाएं। तू अपने अ़मल को छुपाने पर कैसे राज़ी हो गया ? इस त़रह़ तो लोगों को तेरे मक़ाम व मरतबे का इ़ल्म नहीं होगा, चुनान्चे वोह तेरी क़द्रो मन्ज़िलत का इन्कार करेंगे और तेरी पैरवी से मह़रूम रह जाएंगे ऐसे में तू लोगों का मुक़्तदा कैसे बनेगा ? नेकी की दा'वत कैसे आ़म होगी ? वग़ैरा। ऐसी सूरत में **अल्लाह**

तआ़ला से साबित क़दमी की दुआ़ करनी चाहिये और अपने बड़े अ़मल के मुक़ाबले में आख़िरत की बहुत बड़ी मिल्किय्यत या'नी जन्नत की ने'मतों को याद कीजिये जो हमेशा रहने वाली हैं। जो शख़्स **अल्लाह** तआ़ला की इ़बादत के ज़रीए़ उस के बन्दों से अज्र का त़ालिब होता है उस पर **अल्लाह** तआ़ला का ग़ज़ब नाज़िल होता है और येह भी हो सकता है कि दूसरों के सामने अ़मल को ज़ाहिर करने की सूरत में वोह उन के नज़्दीक तो मह़बूब हो जाए लेकिन **अल्लाह** तआ़ला के नज़्दीक उस का मक़ाम गिर जाए ! यूं मेरा अ़मल ज़ाएअ़ हो जाएगा। फिर नफ़्स को इस त़रह़ समझाए कि मैं किस त़रह़ इस अ़मल को लोगों की ता'रीफ़ के बदले बेच दूं वोह तो ख़ुद आ़जिज़ हैं न तो वोह मुझे रिज़्क़ दे सकते हैं और न ही मौत व ह़यात के मालिक हैं।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सब से मज़्बूत़ मख़्लूक़

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ज़मीन को पैदा फ़रमाया तो वोह कांपने लगी। फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने पहाड़ों को पैदा फ़रमा कर उन्हें ज़मीन के लिये मैख़ें बना दिया। फ़िरिश्ते आपस में कहने लगे शायद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने पहाड़ों से ज़ियादा **सख़्त** कोई शै पैदा नहीं फ़रमाई। फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने लोहा पैदा फ़रमाया, उस ने पहाड़ों को काट डाला। फिर आग पैदा फ़रमाई, उस ने लोहे को पिघला दिया। फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने पानी को हुक्म दिया, उस ने आग को बुझा दिया। फिर हवा को हुक्म दिया उस ने पानी को गदला कर दिया। अब फ़िरिश्तों में इख़्तिलाफ़ पैदा हुवा

कि सब से ज़ियादा **मज़्बूत़** कौन सी शै है ? चुनान्चे इस सिल्सिले में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस्तिफ़्सार किया गया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : मैं ने इन्सान के क़ल्ब से ज़ियादा मज़्बूत़ किसी शै को पैदा नहीं किया। जिस वक़्त कि वोह सीधे हाथ से स-दक़ा करते हुए बाएं हाथ से भी उसे छुपाता है, पस वोह मेरी मख़्लूक़ में सब से ज़ियादा मज़्बूत़ है।''

(जामिउ़त्तिरमिज़ी, كتاب التفسير अल ह़दीस:3380, जि.5, स.242, मुलख़्ख़सन)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

पोशीदा अ़मल अफ़्ज़ल है

नबिय्ये पाक साहि़ले लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **ज़ाहिरी आ'माल** के मुक़ाबले में **पोशीदा अ़मल** सत्तर गुना **अफ़्ज़ल** है। (कन्ज़ुल उ़म्माल, كتاب الاذكار،قسم الاقوال अल ह़दीस:1925, जि.1, स.227, मुलख़्ख़सन)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का इर्शाद

ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : ''जब तुम में से किसी एक का रोज़ा हो तो वोह अपने सर और दाढ़ी में तेल लगाए और होंटों पर भी हाथ फेरे ताकि लोगों को **मा'लूम** न हो कि येह रोज़ादार है और जब दाएं हाथ से दे तो बाएं हाथ को ख़बर न हो और जब नमाज़ पढ़े तो अपने दरवाज़े पर पर्दा डाल दे और **अल्लाह** तआ़ला सना (या'नी ता'रीफ़) भी इसी त़रह़ **तक़्सीम** करता है जिस त़रह़ **रिज़्क़** तक़्सीम फ़रमाता है।'' (एह्याउल उ़लूमिद्दीन, كتاب ذم الجاه والرياء،بيان ذم الرياء.....الخ जि.3, स.361)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अस्लाफ़ के अक़्वाल

(**1**) ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الۡبَارِی फ़रमाते हैं कि मैं ने जिस क़दर आ'माल अपने **ज़ाहिर** कर के किये हैं, उन को मैं न होने के बराबर समझता हूं क्यूं कि जब लोग देख रहे हों उस वक़्त **इख़्लास** का बाक़ी रखना हम जैसों की क़ुदरत से बाहर है।

(तम्बीहुल मुग़तर्रीन, स.26)

(**2**) ह़ज़रते बिश्रे ह़ाफ़ी علیہ رحمۃ اللہ الکافی फ़रमाते थे कि हम ऐसों के लिये येह भी मुनासिब नहीं कि अपने आ'माले ख़ालिसा में से भी कुछ ज़ाहिर करें। तो उन आ'माल की क्या ह़ालत होगी जिन में सरीह़ **रिया** दाख़िल हो चुकी है, पस हम ऐसों के लिये तो आ'माल का **पोशीदा** रखना ही मुनासिब है। (तम्बीहुल मुग़तर्रीन, स.29)

(**3**) ह़ज़रते फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते थे कि अ़मल व इ़ल्म वोही बेहतर है जो लोगों से **पोशीदा** हो।

(तम्बीहुल मुग़तर्रीन, स.29)

(**4**) ह़ज़रते ह़सन बसरी علیہ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं मैं ने कुछ लोगों की सोह़बत इख़्तियार की और उन के दिलों में ह़िक्मत की ऐसी बातें गुज़रती थीं कि अगर वोह उन को ज़बान पर लाते तो वोह उन को भी और उन के साथियों को भी नफ़्अ़ देतीं लेकिन उन्हों ने **शोहरत** के ख़ौफ़ से उन बातों को ज़ाहिर नहीं किया और उन में से कोई एक रास्ते में अज़िय्यत देने वाली चीज़ देखता तो वोह उस को सिर्फ़ इस लिये न हटाता कि शोहरत न हो। (एह़याउल उ़लूमिद्दीन, کتاب ذم الجاہ والریاء،بیان ذم الریاء.....الخ जि.3, स.364)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़िकायत

ह़ुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی लिखते हैं : किसी ज़माने में बसरा के हर गली कूचे से ज़िक्रे इलाही और तिलावते क़ुरआने पाक की आवाज़ें बुलन्द होती थीं और इस त़रह़ लोगों को ज़िक्रे इलाही और तिलावते क़ुरआने पाक की **तरग़ीब** होती थी। इत्तिफ़ाक़न उस ज़माने में किसी आ़लिम ने **रिया की बारीकियों** के बारे में एक रिसाला लिखा (उस रिसाले की जब इशाअ़त हुई) तो तमाम लोग ज़िक्रो तिलावते जहरी से **दस्त बरदार** हो गए, कई लोगों ने कहा : काश उस आ़लिम ने येह **रिसाला** न लिखा होता।

(कीमियाए सआ़दत, जि.2, स.692)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

रोज़े के बारे में न पूछो

ह़ज़रते इब्राहीम बिन अद्हम علیہ رحمۃ اللہ الاکرم फ़रमाते थे कि अपने भाई से उस के रोज़े के बारे में न पूछो, क्यूं कि अगर वोह कहता है कि मैं रोज़ादार हूं तो उस का नफ़्स ख़ुश होगा और अगर कहे कि मैं रोज़ादार नहीं हूं तो उस का नफ़्स ग़मगीन होगा और येह दोनों रिया की अ़लामतों में से है।

(तम्बीहुल मुग़तर्रीन, स.24)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

पूछने पर रोज़ेदार अपने रोज़े के बारे में बता दे

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि मोह़तरम नबी, मक्की म-दनी, मह़बूबे रब्बे ग़नी عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद

फ़रमाया, ''जब कोई किसी को खाने की दा'वत दे तो उसे चाहिये कि क़बूल कर ले, और अगर रोज़ेदार है तो उसे दुआ दे।'' (जामिउ़त्तिरमिज़ी, كتاب الصوم ،باب ماجاء فى اجابة الصائم الدعوة रक़म:780, जि.2, स.203)

मुस्लिम शरीफ़ की एक रिवायत में है कि ''जब किसी को दा'वत दी जाए और वोह रोज़े से हो तो उसे चाहिये कि कह दे कि **मैं रोज़ेदार हूं।**'' (सह़ीह़ मुस्लिम, كتاب الصيام،باب الصائم يدعى.....الخ, अल ह़दीस:1150, स.579)

मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُالْمَنَّان इस ह़दीस के तह़्त लिखते हैं : ''या इस त़रह़ कि दा'वत क़बूल ही न करे या इस त़रह़ कि क़बूल कर ले और पहुंच भी जाए, मगर वहां खाए नहीं, येह उ़ज़्र कर दे । ख़याल रहे कि नफ़्ली रोज़े का छुपाना बेहतर है मगर चूंकि यहां छुपाने से या साह़िबे ख़ाना के दिल में अ़दावत पैदा होगी या रन्जो ग़म, मुसल्मान के दिल को ख़ुश करना भी इ़बादत है इस लिये रोज़े के इज़्हार का हुक्म दिया गया। (मिर्आतुल मनाजीह़, जि.3, स.198)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बद तरीन रियाकार

ह़ज़रते फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ عليه رحمة الله التواب फ़रमाते थे कि हम ने पहले तो लोगों को इस ह़ालत में पाया था कि वोह उन नेकियों में रिया करते थे जो वोह करते थे और अब लोगों की येह ह़ालत है कि वोह उन बातों में रिया करते हैं जो वोह नहीं करते। (तम्बीहुल मुग़तर्रीन, स.25)

या'नी पहले लोग मख़्लूक़ को राज़ी करने के लिये नेक काम करते थे और अब नेक काम भी नहीं करते बल्कि नेकों की सूरत बना कर इस का

यक़ीन दिलाना चाहते हैं कि वोह नेक काम करते हैं पस येह पहले **रियाकारों** से भी बदतर हैं।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(नवां इलाज) अच्छी सोह़बत इख़्तियार कीजिये

मक्की म-दनी सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमियान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''अच्छे और बुरे मुसाह़िब की मिसाल, मुश्क उठाने वाले और भट्टी झौंकने वाले की त़रह़ है, कस्तूरी उठाने वाला तुम्हें तोह़फ़ा देगा या तुम उस से ख़रीदोगे या तुम्हें उस से उ़म्दा ख़ुश्बू आएगी, जब कि भट्टी झौंकने वाला या तुम्हारे कपड़े जलाएगा या तुम्हें उस से ना गवार बू आएगी।'' (सह़ीहुल मुस्लिम, स.1116, रक़मुल ह़दीस:2628)

चंगे बन्दे दी सोह़बत यारो जेवें दुकान अ़त्त़ारां
सौदा भावें मुल न लइये हुल्ले आन हज़ारां

बुरे बन्दे दी सोह़बत यारो जेवें दुकान लोहारां
कपड़े भावें कुन्ज कुन्ज बइये चिंगां पैन हज़ारां

(या'नी अच्छे शख़्स की सोह़बत अ़त्त़ार की दुकान की त़रह़ है कि जहां से आदमी कुछ न भी ख़रीदे तो उसे ख़ुश्बू तो आ ही जाती है और बुरे शख़्स की सोह़बत लोहार की दुकान की मिस्ल है जहां अपने कपड़ों को जितना भी समेट कर रखें, चिंगारियां उस तक पहुंच ही जाती हैं)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई ! हर सोह़बत अपना असर रखती है, म-सलन अगर आप की मुलाक़ात किसी ऐसे इस्लामी भाई से हो जिस की आंखों में अपने किसी अ़ज़ीज़ की मौत की वजह से **नमी** तैर रही हो, उस के चेहरे पर **ग़म** के बादल छाए हुए हों और उस के लहजे से **उदासी** झलक रही हो तो उस की येह ह़ालत देख कर कुछ देर के लिये

आप भी **ग़मगीन** हो जाएंगे और अगर आप को किसी ऐसे इस्लामी भाई के पास बैठने का इत्तिफ़ाक़ हो, जिस का चेहरा किसी काम्याबी की वजह से **ख़ुशी** से दमक रहा हो, उस के लबों पर **मुस्कराहट** खेल रही हो और उस की बातों से **मुसर्रत** का इज़हार हो रहा हो तो ख़्वाही न ख़्वाही आप भी कुछ देर के लिये उस की **ख़ुशी** में शरीक हो जाएंगे।

बिल्कुल इसी त़रह़ अगर कोई शख़्स ऐसे लोगों की सोह़बत इख़्तियार करेगा जो फ़िक्रे आख़िरत से यक्सर **ग़ाफ़िल** हों और गुनाहों के इर्तिकाब में किसी क़िस्म की **झिझक** महसूस न करते हों तो ग़ालिब गुमान है कि वोह भी बहुत जल्द उन्ही के **मानिन्द** हो जाएगा और अगर कोई ऐसे लोगों की सोह़बत इख़्तियार करेगा जिन के दिल **फ़िक्रे मदीना** से मा'मूर हों, वोह दिन रात उख़्वी काम्याबी के लिये अपनी **इस्लाह़** की कोशिश में मस्रूफ़ रहें, उन की आंखें **अल्लाह** तआ़ला के **ख़ौफ़** से रोएं तो यक़ीनी त़ौर पर येही कैफ़िय्यात उस शख़्स के दिल में भी सरायत कर जाएंगी। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दा'वते इस्लामी का म-दनी माह़ोल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस म-दनी सोह़बत को पाने के लिये आप को परेशान होने की क़त़्अन ज़रूरत नहीं, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** से वाबस्ता होने की ब-र-कत से आ'ला अख़्लाक़ी औसाफ़ ग़ैर महसूस त़ौर

पर उन के किरदार का हिस्सा बनते चले जाएंगे। हर इस्लामी भाई को चाहिये कि वोह अपने शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत करे और राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करने वाले **आशिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करे। इन म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र की ब-र-कत से اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ अपने साबिक़ा तर्ज़े ज़िन्दगी पर ग़ौरो फ़िक्र का मौक़अ़ मिलेगा और दिल हुस्ने आ़क़िबत के लिये बेचैन हो जाएगा जिस के नतीजे में इर्तिकाबे गुनाह की कसरत पर नदामत महसूस होगी और तौबा की तौफ़ीक़ मिलेगी। आ़शिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िलों में मुसल्सल सफ़र करने के नतीजे में ज़बान पर फ़ोहूश कलामी और फ़ुज़ूल गोई की जगह दुरूदे पाक जारी हो जाएगा, येह तिलावते क़ुरआन, हम्दे इलाही عَزَّوَجَلَّ और ना'ते रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आ़दी बन जाएगी, ग़ुस्से की आ़दत रुख़्सत हो जाएगी और उस की जगह नरमी ले लेगी, बे सब्री की आ़दत तर्क कर के साबिरो शाकिर रहना नसीब होगा, तकब्बुर से जान छूट जाएगी और एह़तिरामे मुस्लिम का जज़्बा मिलेगा, दुन्यावी मालो दौलत की लालच से पीछा छूटेगा और नेकियों की हिर्स मिलेगी, अल ग़रज़ बार बार राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करने वाले की ज़िन्दगी में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो जाएगा, اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ। **इस्लामी बहनों** को भी चाहिये कि अपने शहर में होने वाले **इस्लामी बहनों** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में पाबन्दी से शिर्कत करें।

اَلْحَمْدُلِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ मैं बदल गया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शालीमार टाउन (मर्कज़ुल औलिया लाहोर) के एक इस्लामी भाई का कुछ यूं बयान है : मैं बेह़द बिगड़ा हुवा इन्सान था, फ़िल्मों डिरामों का रसिया होने के साथ साथ जवान लड़कियों

के साथ छेड़ ख़ानियां, औबाश नौ जवानों के साथ दोस्तियां, रात गए तक उन के साथ आवारा गर्दियां वग़ैरा मेरे मा'मूलात थे। मेरी ह़-रकाते बद के बाइ़स ख़ानदान वाले भी मुझ से कतराते, अपने घरों में मेरी आमद से घबराते नीज़ अपनी औलाद को मेरी सोह़बत से बचाते थे। मेरी गुनाहों भरी ख़ज़ां रसीदा शाम के सुब्हे़ बहारां बनने की सबील यूं हुई कि एक **दा'वते इस्लामी** वाले **आ़शिक़े रसूल** की मुझ पर मीठी नज़र पड़ गई, उस ने निहायत ही शफ़्क़त के साथ **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए मुझे **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र की तरग़ीब दिलाई। बात मेरे दिल में उतर गई और मैं ने म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की सआ़दत ह़ासिल की اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ म-दनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बतों ने मुझ पापी व बदकार के दिल में **म-दनी इन्क़िलाब** बरपा कर दिया। गुनाहों से तौबा का तोह़फ़ा और सुन्नतों भरे **म-दनी लिबास** का जज़्बा मिला, सर पर **सब्ज़ सब्ज़ इ़मामा** सजा और मेरे जैसा गुनहगार व अबुल फ़ुज़ूल सुन्नतों के म-दनी फूल लुटाने में मश्ग़ूल हो गया। जो अ़ज़ीज़ो अक़्रिबा देख कर कतराते थे। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ अब वोह गले लगाते हैं। पहले मैं ख़ानदान के अन्दर बद तरीन था। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के **म-दनी क़ाफ़िले** की ब-र-कत से अब अ़ज़ीज़ तरीन हो गया हूं।

जब तक बिके न थे कोई पूछता न था
तूने ख़रीद कर मुझे अनमोल कर दिया

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब फ़ैज़ाने र-मज़ान, जि.1, स.1091)

म-दनी इन्आ़मात

اَلْحَمْدُلِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ ! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इस पुर फ़ितन दौर में आसानी से नेकियां करने और गुनाहों से बचने के त़रीक़ेकार पर मुश्तमिल शरीअ़तो त़रीक़त का जामेअ़ मज्मूआ़ बनाम **''म-दनी इन्आ़मात''** ब सूरते सुवालात अ़त़ा फ़रमाया है। इस्लामी भाइयों के लिये **72**, इस्लामी बहनों के लिये **63** और त़-ल-बए इ़ल्मे दीन के लिये **92**, दीनी त़ालिबात के लिये **83** और म-दनी मुन्नों और मुन्नियों के लिये **40** और ख़ुसूसी इस्लामी भाइयों के लिये **27 म-दनी इन्आ़मात** हैं। बे शुमार इस्लामी भाई, इस्लामी बहनें और तु-लबा म-दनी इन्आ़मात के मुत़ाबिक़ अ़मल कर के रोज़ाना सोने से क़ब्ल ''फ़िक्रे मदीना'' या'नी अपने आ'माल का जाएज़ा ले कर म-दनी इन्आ़मात के पॉकिट साइज़ रिसाले में दिये गए ख़ाने पुर करते हैं। इन म-दनी इन्आ़मात को अपना लेने के बा'द नेक बनने और गुनाहों से बचने की राह में ह़ाइल रुकावटें **अल्लाह** तआ़ला के फ़ज़्लो करम से ब तदरीज दूर होती चली जाती हैं और इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन भी बनेगा। हमें चाहिये कि बा किरदार मुसल्मान बनने के लिये मक-त-बतुल मदीना की किसी भी शाख़ से म-दनी इन्आ़मात का रिसाला ह़ासिल करें और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना (या'नी अपना मुह़ा-सबा) करते हुए इस में दिये गए ख़ाने पुर करें और हर म-दनी या'नी क़-मरी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के म-दनी इन्आ़मात के ज़िम्मादार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लें।

आ़मिलीने म-दनी इन्आ़मात के लिये बिशारते उ़ज़्मा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! म-दनी इन्आ़मात का रिसाला पुर करने वाले किस क़दर ख़ुश क़िस्मत होते हैं इस का अन्दाज़ा इस **म-दनी बहार** से लगाइये चुनान्चे हैदरआबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के एक इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ ह़लफ़िया बयान है कि माहे र-जबुल मुरज्जब 1426 हि. की एक शब मुझे ख़्वाब में **मुस्त़फ़ा जाने रह़मत** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की अ़ज़ीम सआ़दत मिली। लबहाए मुबा-रका को जुम्बिश हुई और रह़मत के फूल झड़ने लगे, अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए **: जो इस माह रोज़ाना पाबन्दी से म-दनी इन्आ़मात से मु-तअ़ल्लिक़ फ़िक्रे मदीना करेगा, अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **उस की मग़्फ़िरत फ़रमा देगा ।**

म-दनी इन्आ़मात की भी मरह़बा क्या बात है
कुर्बे ह़क़ के त़ालिबों के वासिते सौग़ात है

(फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब फ़ैज़ाने र-मज़ान, जि.1, स.1235)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(दस्वां इलाज) अवरादो वज़ाइफ़ का मा'मूल बना लीजिये

प्यारे इस्लामी भाइयो ! **रियाकारी** से बचने के लिये मज़्कूरा उमूर के साथ साथ रूह़ानी इलाज भी कीजिये, **म-सलन**

(**1**) जब भी दिल में **रियाकारी** का ख़याल आए तो "اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْم" एक बार पढ़ने के बा'द उल्टे कन्धे की त़रफ़ तीन बार थू थू कर दीजिये।

(**2**) रोज़ाना दस बार "اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْم" पढ़ने वाले पर शैत़ान से हिफ़ाज़त करने के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर कर देता है। (मुस्नदो अबी या'ला, मुस्नदे अनस बिन मालिक, अल ह़दीस:4100, जि.3, स.400 मुलख़्ख़सन)

(**3**) सूरए इख़्लास ग्यारह बार सुब्ह़ (आधी रात ढले से सूरज की पहली किरन चमकने तक सुब्ह़ है) पढ़ने वाले पर अगर शैत़ान मअ़ लश्कर के कोशिश करे कि इस से गुनाह कराए तो न करा सके जब तक कि येह ख़ुद न करे। (अल वज़ी-फ़तुल करीमा, अल अज़्कारुस्सबाह़िय्या, स.18)

(**4**) सू-रतुन्नास पढ़ लेने से भी वस्वसे दूर होते हैं।

(**5**) जो कोई सुब्ह़ व शाम इक्कीस इक्कीस बार "لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْم" पानी पर दम कर के पी लिया करे तो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ वस्वए शैत़ानी से बहुत ह़द तक अम्न में रहेगा।

(मिर्आतुल मनाजीह़, बाबुल वस्वसा, जि.1, स.87)

(**6**) "هُوَالْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ وَهُوَبِكُلِّ شَیْءٍ عَلِيْمٌ" कहने से फ़ौरन वस्वसा दूर हो जाता है।

(**7**) سُبْحٰنَ الْمَلِكِ الْخَلَّاقِ ط اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ط وَمَاذٰلِكَ عَلَى اللّٰه بِعَزِيْزٍ o की कसरत उसे (या'नी वस्वसे को) जड़ से क़त़्अ़ कर देती है। (या'नी काट देती है।)

(फ़तावा र-ज़विय्या तख़्रीज शुदा, जि.1, स.770)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इलाज के बा वुजूद इफ़ाक़ा न हो तो ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर भरपूर इलाज के बा'द भी इफ़ाक़ा न हो तो घबराइये नहीं बल्कि इलाज जारी रखिये कि **''दिल को भी आराम हो ही जाएगा ।''** क्यूं कि अगर हम ने इलाज तर्क कर दिया तो गोया ख़ुद को मुकम्मल तौ़र पर शैत़ान के ह़वाले कर दिया कि वोह हमें कहीं का न छोड़ेगा । लिहाज़ा हमें चाहिये कि **रियाकारी** से जान छुड़ाने की कोशिश जारी रखें । ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْوَالِي (अल मु-तवफ़्फ़ा 505 हि.) हम जैसों को समझाते हुए लिखते हैं : ''अगर तुम मह़सूस करो कि शैत़ान, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से पनाह मांगने के बा वुजूद तुम्हारा पीछा नहीं छोड़ता और ग़ालिब आने की कोशिश करता है तो इस का मत़लब येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को हमारे मुजा-हदे, हमारी क़ुव्वत और सब्र का इम्तिह़ान मक़्सूद है या'नी **अल्लाह** तआ़ला आज़माता है कि तुम शैत़ान से मुक़ाबला और मुह़ा-रबा (या'नी जंग) करते हो या उस से मग़्लूब हो जाते हो ।''

(मिन्हाजुल आ़बिदीन, العائق الثالث:الشیطٰن स.46, मुलख़्ख़सन)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ख़ुलासए कलाम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अब तक के मुत़ा-लए से हमें मा'लूम हुवा कि

★ **रियाकारी** यक़ीनन एक बुरी ख़स्लत और बद तरीन बात़िनी मरज़ है ।

★ येह ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है ।

★ क़ुरआने पाक और अह़ादीसे मुबा-रका में इस की शदीद मज़म्मत की गई है ।

★ **रियाकारों** को जहन्नम की उस वादी में डाला जाएगा जिस से जहन्नम भी पनाह मांगता है ।

★ रियाकरी और उस का इलाज सीखना फ़र्ज़ उ़लूम में से है।

★ **रियाकारी** से मुराद येह है कि ''बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की रिज़ा के इलावा किसी और निय्यत या इरादे से इबादत करे।**''

★ किसी को रियाकार कहना जाइज़ नहीं है क्यूं कि येह दिल का मुआ़-मला है।

★ **रियाकारी** कभी तो ज़बान के ज़रीए होती है और कभी फ़े'ल के ज़रीए।

★ मुम्किना त़ौर पर तीन चीज़ों में **रियाकारी** हो सकती है : (1) ईमान में (2) दुन्यवी मुआ़-मलात में (3) इबादात में।

★ **इबादात** में दो त़रह़ से **रियाकारी** हो सकती है : (**i**) अदाएगी में रियाकारी, और (**ii**) औसाफ़ में रियाकारी। फिर इबादात में पाया जाने वाला रिया कभी ख़ालिस होता है और कभी **मख़्लूत़** (या'नी मिलावट वाला)।

★ हमें चाहिये कि **इबादत से पहले,** दौरान और बा'द में अपनी निय्यत की ह़िफ़ाज़त करें।

★ नेकियों का इज़हार बा'ज़ सूरतों में जाइज़ है लेकिन छुपाना बेहतर है।

★ रिया की एक क़िस्म रियाए ख़फ़ी भी है जिस से बचना बहुत दुश्वार है मगर जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तौफ़ीक़ दे।

★ अगर किसी के नेक अ़मल पर उस की ता'रीफ़ की जाए तो उस का ख़ुश होना फ़ित़री बात है। लेकिन याद रखिये कि अपनी ता'रीफ़ पर ख़ुश होने की भी **सूरतें** हैं, चुनान्चे येह ख़ुशी कभी मह़मूद होती है और कभी **मज़्मूम।**

★ गुनाहों से बचने में भी **रियाकारी** मुम्किन है क्यूं कि गुनाह से बचना भी नेकी है।

★ रियाकारी के ख़ौफ़ से नेक अ़मल छोड़ना **दानिश मन्दी** की बात नहीं क्यूं कि इस त़रह़ हम **इख़्लास और नेकी** दोनों के सवाब से मह़रूम हो जाएंगे।

★ रियाकारी का दिल में सिर्फ़ ख़याल आना और त़बीअ़त का इस त़रफ़ माइल होना **नुक़्सान** देह नहीं है क्यूं कि शैत़ान तो हर इन्सान पर मुसल्लत़ है येह इन्सान के बस में नहीं है कि वोह **शैत़ानी** वस्वसों को दिल में **दाख़िल** ही न होने दे।

★ रियाकार की तीन **अ़लामतें** हैं : (1) **तन्हाई** में हो तो अ़मल में सुस्ती करे और लोगों के सामने हो तो **जोश** दिखाए, (2) उस की **ता'रीफ़** की जाए तो अ़मल में **इज़ाफ़ा** कर दे और (3) अगर **मज़म्मत** की जाए तो अ़मल में **कमी** कर दे।''

★ अगर येह अ़लामतें हम में पाई जाएं तो फ़ौरन से पेशतर **तौबा** कर लेनी चाहिये और हुसूले इख़्लास की **कोशिशों** में लग जाएं कि कहीं तौबा से पहले मौत न आ जाए और हमें रियाकारी के उख़्रवी **नुक़्सानात** का सामना करना पड़े।

★ रियाकारी से पीछा छुड़ाना दुश्वार ज़रूर है ना मुम्किन नहीं।

★ रियाकारी की बीमारी से शिफ़ा के लिये दर्जे ज़ैल दस इ़लाज बहुत मुफ़ीद हैं।

(पहला इ़लाज) अल्लाह तआ़ला से मदद त़लब कीजिये (दूसरा इ़लाज) रियाकारी के नुक़्सानात पेशे नज़र रखिये (तीसरा इ़लाज) अस्बाब का ख़ातिमा कीजिये (चौथा इ़लाज) इख़्लास अपना लीजिये (पांचवां इ़लाज) निय्यत की हिफ़ाज़त कीजिये (छटा इ़लाज) दौराने इ़बादत शैत़ानी वस्वसों से बचिये (सातवां इ़लाज) तन्हाई हो या हुजूम यक्सां अ़मल कीजिये (आठवां इ़लाज) नेकियां छुपाइये (नवां इ़लाज) अच्छी सोह़बत इख़्तियार कीजिये (दस्वां इ़लाज) अवरादो वज़ाइफ़ का मा'मूल बना लीजिये।

★ तफ़्सील याद रखने के लिये इस किताब का फिर से मुत़ा-लआ़ कर लीजिये।

''कर इख़्लास ऐसा अ़ता या इलाही'' के इक्कीस हुरूफ़ की निस्बत से 21 ह़िकायात

(1) इख़्लास का इन्आ़म

ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़-ज़मत निशान है कि ''गुज़श्ता ज़माने में तीन आदमी कहीं जा रहे थे, रात गुज़ारने के लिये उन्हें एक ग़ार का सहारा लेना पड़ा। वोह ग़ार में दाख़िल हुए तो पहाड़ से एक चट्टान लुढ़क कर ग़ार के मुंह पर आ गई, जिस से ग़ार का मुंह बन्द हो गया। उन्हों ने बाहम तै़ किया कि इस चट्टान से नजात का एक ही त़रीक़ा है कि हम अपने अपने नेक आ'माल का वसीला **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में पेश कर के **दुआ़** मांगें।

उन में से एक ने अ़र्ज़ की, ''या इलाही عَزَّوَجَلَّ ! मेरे मां बाप बूढ़े हो गए थे, और मैं उन से पहले अपने बच्चों और ख़ुद्दाम को दूध नहीं दिया करता था। एक दिन मैं लकड़ियों की तलाश में दूर निकल गया। जब वापस लौटा तो देखा कि वालिदैन सो चुके हैं, मैं उन के लिये दूध लाया लेकिन उन्हें जगाना मुनासिब न समझा, और न उन से पहले अहलो इ़याल को दूध पिलाना पसन्द आया। बच्चे मेरे पाउं में बिलक्ते रहे, लेकिन मैं तमाम रात दूध का पियाला हाथ में लिये खड़ा रहा। यहां तक कि सुब्ह़ हो गई। फिर मेरे वालिदैन ने दूध पिया। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! अगर मैं ने येह अ़मल **तेरी रिज़ा** के लिये किया हो तो, तू हम से इस चट्टान की मुसीबत

को दूर फ़रमा दे।'' चट्टान थोड़ी सी सरक गई लेकिन वोह अभी बाहर न निकल सकते थे।

दूसरे ने अ़र्ज़ की, ''या इलाही عَزَّوَجَلَّ ! मुझे अपनी चचाज़ाद बहन से महब्बत थी, मैं ने उस से बुरी ख़्वाहिश का इज़्हार किया, लेकिन उस ने इन्कार कर दिया। यहां तक कि वोह क़हत़ साली का शिकार हो कर मेरे पास आई, मैं ने उसे 100 दीनार इस शर्त़ पर दिये कि वोह मेरे साथ तन्हाई में जाए, वोह रिज़ा मन्द हो गई, जब हम तन्हाई में पहुंचे तो उस ने कहा : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डर और येह गुनाह मत कर।'' येह सुन कर मैं उस गुनाह से बाज़ आ गया और वोह दीनार भी उसे दे दिये। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! अगर मेरा **येह अ़मल महज़ तेरी रिज़ा के लिये था,** तो हम से येह मुसीबत दूर कर दे।'' चट्टान कुछ और सरक गई लेकिन अभी भी बाहर निकलना मुम्किन न था।

तीसरे ने अ़र्ज़ की : ''या इलाही عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने कुछ आदमियों को मज़दूरी पर लगाया, फिर एक के सिवा सब अपनी मज़दूरी ले गए, मैं ने उस की मज़दूरी को कारोबार में लगा दिया, यहां तक कि उस का माल बहुत ज़ियादा हो गया। कुछ अ़र्से के बा'द वोह मेरे पास आया और अपनी मज़दूरी का मुत़ा-लबा किया। मैं ने कहा कि, ''येह जितने ऊंट, गाय, बकरी और ग़ुलाम वग़ैरा देख रहा है, येह सब तेरे हैं।'' उस ने कहा, ''आप मेरे साथ मज़ाक़ करते हैं ?'' मैं ने कहा, ''नहीं, मैं मज़ाक़ नहीं कर रहा हूं (बल्कि येह ह़क़ीक़त है)।'' येह सुन कर वोह तमाम माल ले कर चला गया, और उस में से कुछ न छोड़ा। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! अगर मेरा

येह अ़मल महबूज़ तेरी रिज़ा के लिये था तो हमें इस परेशानी से नजात दिला दे।'' उस की दुआ़ के साथ ही चट्टान हट गई और वोह अपनी मन्ज़िल की जानिब रवाना हो गए। (सहीह़ मुस्लिम, किताबुज़्ज़िक्रे वदुआ़...., बाब : क़िस्सतु अस्ह़ाबिल ग़ार...., अल ह़दीस : 2743, स. 1465)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ग़ार में क़ैद हो जाने वालों को **इख़्लास** के साथ किये गए नेक आ'माल की कैसी ब-र-कतें नसीब हुईं।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(2) मैं अपनी निय्यत को ह़ाज़िर नहीं पाता

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन अल ह़सन رحمۃ اللہ تعالٰی علیہما फ़रमाते हैं : ''अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान ने एक शख़्स को ह़ाकिम बना कर मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّ تَعظِيماً भेजा ताकि वोह बैअ़त वग़ैरा का सिल्सिला करे और इन्तिज़ामात संभाले।'' चुनान्चे मैं ह़ज़रते सय्यिदुना सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह, ह़ज़रते सय्यिदुना क़ासिम बिन मुह़म्मद और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू स-लमह बिन अ़ब्दुर्रह़मान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِم اَجْمَعِيْن के पास गया और उन से कहा : ''आओ हम सब अपने शहर के नए ह़ाकिम के पास चलते हैं ताकि उस से मुलाक़ात करें और उसे ए'तिमाद में लें।'' चुनान्चे हम उस ह़ाकिम के पास गए और उसे सलाम किया, उस ने हमें अपने पास बुलाया और कहा : ''तुम में सईद बिन मुसय्यिब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه कौन है ?'' ह़ज़रते सय्यिदुना क़ासिम बिन मुह़म्मद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने जवाब दिया : ''सईद बिन मुसय्यिब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه उ-मरा से तअ़ल्लुक़ नहीं रखते

उन्हों ने मस्जिद में रहने को लाज़िम कर लिया है, वोह हर वक़्त दरबारे इलाही عَزَّوَجَلَّ में मश्ग़ूले इबादत रहते हैं, दुन्यादारों से उन्हें कोई ग़रज़ नहीं, वोह उ-मरा के दरबारों में जाना पसन्द नहीं फ़रमाते।''

उस हाकिम ने कहा : ''तुम लोग उसे मेरे पास आने की तरग़ीब दिलाओ और उसे मेरे पास ज़रूर ले कर आना, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर वोह न आया तो मैं उसे ज़रूर क़त्ल कर दूंगा।'' उस हाकिम ने तीन मर्तबा क़सम खा कर इन अल्फ़ाज़ के साथ क़त्ल की धमकी दी। हज़रते सय्यिदुना क़ासिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि उस ज़ालिम हुक्मरान की येह धमकी सुन कर हम बहुत परेशान हुए और वापस चले आए। मैं सीधा मस्जिद में गया और हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास पहुंचा, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ एक सुतून से टेक लगाए बैठे थे। मैं ने उन्हें सारी सूरते हाल से आगाह किया और अ़र्ज़ की : ''हुज़ूर ! मेरी तो राय येह है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ **उ़म्रा** करने चले जाएं और कुछ अ़र्सा मक्कए मुकर्रमा में गुज़ारें ताकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ उस शरीर हाकिम की नज़रों से ओझल रहें और मुआ़-मला रफ़्अ़ दफ़्अ़ हो जाए।''

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने जवाबन इर्शाद फ़रमाया : ''मैं इस अ़मल में अपनी **निय्यत** हाज़िर नहीं पाता और मेरे नज़्दीक सब से ज़ियादा पसन्दीदा अ़मल वोह है जो **ख़ुलूसे निय्यत** से हो और सिर्फ़ **रिज़ाए इलाही** عَزَّوَجَلَّ के लिये हो।'' (उ़यूनुल हिकायात, स. 258)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(3) मुसल्सल चालीस साल तक रोज़े

ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद त़ाई رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ मुसल्सल चालीस साल तक रोज़े रखते रहे मगर आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ के **इख़्लास** का येह **आ़लम** था कि अपने घर वालों तक को ख़बर न होने दी। काम पर जाते हुए दो पहर का खाना साथ ले लेते और रास्ते में किसी को दे देते, मग़रिब के बा'द घर आ कर खाना खा लिया करते। (फ़ैज़ाने सुन्नत, जि. 1, स. 1445, ब ह़वाला मा'दिने अख़्लाक़, हिस्सए अव्वल, स. 182)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(4) नेकियां छुपाने वाला ग़ुलाम

एक शख़्स ने एक ग़ुलाम ख़रीदा। उस ग़ुलाम ने कहा कि ऐ मेरे आक़ा ! मैं तीन शर्तें लगाता हूं :

(1) आप मुझे फ़र्ज़ नमाज़ से मन्अ़ नहीं करेंगे, जब उस का वक़्त आ जाए।

(2) आप मुझे दिन को जो चाहें **हुक्म** दें, रात को **हुक्म** नहीं करेंगे।

(3) अपने घर में मेरे लिये एक कमरा **जुदा** कर दें, जिस में मेरे सिवा कोई दूसरा दाख़िल न हो।

उस आदमी ने कहा मैं ने येह **शर्तें** क़बूल कीं। फिर उस आदमी ने कहा कि अपने लिये कमरा पसन्द कर लो। चुनान्चे ग़ुलाम ने एक ख़राब सा टूटा फूटा कमरा पसन्द कर लिया। इस पर आदमी ने कहा कि ऐ ग़ुलाम ! तूने ख़राब व ख़स्ता कमरा क्यूं पसन्द किया ? ग़ुलाम ने जवाब दिया, मेरे आक़ा ! क्या आप नहीं जानते कि टूटा फूटा कमरा भी

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की **याद** और उस के ज़िक्र की ब-र-कत से बाग़ बन जाता है। चुनान्चे वोह ग़ुलाम दिन को अपने आक़ा की ख़िदमत करता और रात को **अल्लाह** तआ़ला की **इबादत** करता।

कुछ मुद्दत के बा'द एक रात को उस का आक़ा घर में चलते चलते ग़ुलाम के कमरे में पहुंच गया तो देखा कि कमरा रोशन है और ग़ुलाम **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में सज्दा रेज़ है और उस पर आस्मानो ज़मीन के दरमियान एक रोशन क़िन्दील लटकी हुई है और वोह **अल्लाहु** रब्बुल आ़-लमीन की बारगाह में आ़जिज़ी इन्किसारी के साथ **मुनाजात** कर रहा है कि ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तूने मुझ पर मेरे आक़ा का ह़क़ और दिन को उस की ख़िदमत लाज़िम कर दी है, अगर येह मस्रूफ़िय्यत न होती तो मैं दिन रात में सिर्फ़ तेरी **इबादत** में मस्रूफ़ रहता इस लिये ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! मेरा उ़ज़्र क़बूल फ़रमा ले। आक़ा उसे देखता रहा यहां तक कि सुब्ह़ हुई और रोशन क़िन्दील वापस चली गई और मकान की छत मिल गई।

येह सारा मन्ज़र देख कर आक़ा वापस आ गया और सब माजरा अपनी बीवी को सुनाया। दूसरी रात वोह अपनी बीवी को भी साथ ले कर ग़ुलाम के दरवाज़े पर आया तो देखा कि ग़ुलाम सज्दे में पड़ा है और **क़िन्दील** उस के सर पर है वोह दोनों खड़े हुए येह सब मन्ज़र देख रहे थे और **रो** रहे थे। आख़िरे कार सुब्ह़ हुई तो उन्हों ने ग़ुलाम को बुला कर कहा, "तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ातिर आज़ाद हो ताकि तुम जो उ़ज़्र पेश कर रहे थे वोह दूर हो जाए और तुम यक्सूई के साथ **अल्लाह** तआ़ला की **इबादत** कर सको।" ग़ुलाम ने येह सुन कर अपना सर आस्मान की त़रफ़

उठाया और कहा ''ऐ साहिबे राज़ ! राज़ तो खुल गया, अब **राज़ खुल** जाने के बा'द मैं ज़िन्दगी नहीं चाहता।'' पस उसी वक़्त वोह ग़ुलाम गिरा और उस की रूह क़-फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई। (मुका-श-फ़तुल क़ुलूब, الباب الحادی عشر،بیان فی طاعة الله ومحبة رسوله ﷺ, स. 39)

(5) अल्लाह तआ़ला के लिये मुआ़फ़ किया

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक शख़्स को अपने दुर्रे से मारा फिर फ़रमाया : मुझ से इस का बदला लो। उस ने अ़र्ज़ किया : मैं ने **अल्लाह** तआ़ला के लिये और आप की ख़ातिर मुआ़फ़ कर दिया। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : येह तो कुछ भी न हुवा या तो मेरे लिये मुआ़फ़ करो ताकि मुझ पर एह़सान हो या सिर्फ़ **अल्लाह** तआ़ला के लिये छोड़ दो। उस ने अ़र्ज़ किया : मैं ने सिर्फ़ **अल्लाह** तआ़ला के लिये मुआ़फ़ किया। आप ने फ़रमाया, हां अब बात हुई है।

(अल ह़दी-क़तुन्नदिय्या, المبحث السابع .....الخ, स. 529)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़िकायत से हमें येह म-दनी दर्स मिला कि हर नेक अ़मल ख़ालि-सतन ''रिज़ाए इलाही'' के लिये हो, निय्यत ''ग़ैर'' की आमैज़िश से पाक हो ताकि वोह बारगाहे ख़ुदा वन्दी में श-रफ़े क़बूलिय्यत पा जाए और हमारे लिये तोशए आख़िरत बने।

जिस का अ़मल हो बे ग़रज़ उस की जज़ा कुछ और है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(6) मां का हुक्म नफ़्स पर क्यूं गिरां गुज़रा ?

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुह़म्मद मुर-तइ़श رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया, ''मैं ने बहुत से ह़ज किये और उन में से अक्सर सफ़र किसी

क़िस्म का ज़ादे राह लिये बिग़ैर किये । फिर मुझ पर आश्कार हुवा कि येह सब तो मेरी ख़्वाहिशे नफ़्सानी से आलूदा थे क्यूं कि एक मर्तबा मेरी मां ने मुझे घड़े में पानी भर कर लाने का हुक्म दिया तो मेरे नफ़्स पर उन का हुक्म गिरां गुज़रा, चुनान्चे मैं ने समझ लिया कि सफ़रे ह़ज में मेरे नफ़्स ने मेरी मुवा–फ़क़त फ़क़त़ अपनी लज़्ज़त के लिये की और मुझे धोके में रखा क्यूं कि अगर मेरा नफ़्स फ़ना हो चुका होता तो आज एक ह़क़्क़े शर–ई पूरा करना इसे बेह़द दुश्वार क्यूं मह़सूस होता ?"

(अर्रिसा–लतुल कुशैरिय्या, स. 135)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस से पता चला कि बसा अवक़ात नफ़्स नेकियों के पर्दे में भी अपना काम कर दिखाता है वोह इस त़रह़ कि जिस नेक काम में येह लज़्ज़त मह़सूस करता और अपनी ख़्वाहिश पूरी होते देखता है उसे करने पर बख़ुशी तय्यार हो जाता है और जिस नेक काम में इस के लिये कोई कशिश (charm) न हो उस में गिरानी का मुज़ा–हरा करता है ।

ओ शहद नुमाए ज़हर दर जाम
गुम जाऊं किधर तेरी बदी से

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(7) पहली सफ़ छूट जाने पर परेशानी क्यूं ?

(सय्यिदुना इमाम) मुह़म्मद ग़ज़ाली علیہ رَحمَۃُ اللہِ القَوی कीमियाए सआ़दत में नक़्ल फ़रमाते हैं कि एक बुज़ुर्ग ने इर्शाद फ़रमाया कि मैं ने तीस बरस की नमाज़ क़ज़ा की जिसे मैं ने हमेशा पहली सफ़ में खड़े हो कर अदा किया था । इस का बाइ़स येह हुवा कि एक दिन मुझे किसी वजह

से ताख़ीर हो गई तो आख़िरी सफ़ में जगह मिली। मैं ने अपने दिल में इस बात से शर्म महसूस की के ''लोग क्या कहेंगे कि येह आज इतनी देर से आया है ?'' उस वक़्त मैं समझा कि ''येह सब लोगों के दिखाने के लिये था कि वोह मुझे पहली सफ़ में देखें।'' (चुनान्चे येह तमाम नमाज़ें अकारत गईं और मैं ने उन की क़ज़ा लौटाई)

(कीमियाए सआ़दत, जि. 2, स. 786)

अल्लाहु अक्बर ! हमारे अस्लाफ़े किराम رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہم का जज़्बए इख़्लास सद मरहबा ! फ़क़त एक ''ख़तरए दिली'' की बिना पर तीस बरस की नमाज़ों को राएगां तसव्वुर कर के उन की क़ज़ा लौटाई और एक तरफ़ हम हैं कि उन की ग़ुलामी का दम भरते हैं और ह़ाल येह है कि अव्वल तो ''किश्ते क़ल्ब (या'नी दिल की खेती)'', ''ज़ौक़े इबादत'' के ''बीज'' से ख़ाली और जैसे तैसे कर के इबादत कर भी ली तो ''इख़्लास के पानी'' से सैराबी मफ़्क़ूद बल्कि ''नामो नुमूद की आफ़ते बद'' से ''फ़स्ले इबादत'' तबाह कर बैठते हैं।

खा गई सब नेकियों को ख़्वाहिशे नामो नुमूद

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(8) इख़्लास फ़रोश

ह़ज़रते सय्यिदुना मुबारक बिन फ़ुज़ाला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत करते हैं : ''किसी अ़लाक़े में एक बहुत बड़ा दरख़्त था, लोग उस की पूजा किया करते थे और इस तरह़ उस अ़लाक़े में कुफ़्रो शिर्क की वबा बहुत तेज़ी से फैल रही थी। एक मुसल्मान शख़्स का वहां से गुज़र हुवा तो उसे येह देख कर बहुत ग़ुस्सा

आया कि यहां ग़ैरुल्लाह की इबादत की जा रही है। चुनान्चे वोह जज़्बए तौहीद से मा'मूर बड़ी ग़ज़बनाक हालत में कुल्हाड़ा ले कर उस दरख़्त को काटने चला, उस के ईमान ने येह गवारा न किया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा किसी और की इबादत की जाए। इसी जज़्बे के तहूत वोह दरख़्त काटने जा रहा था कि शैतान मरदूद उस के सामने इन्सानी शक्ल में आया और कहने लगा : "तू इतनी ग़ज़बनाक हालत में कहां जा रहा है ?" उस मुसल्मान ने जवाब दिया : "मैं उस दरख़्त को काटने जा रहा हूं जिस की लोग इबादत करते हैं।" येह सुन कर शैतान मरदूद ने कहा : "जब तू उस दरख़्त की इबादत नहीं करता तो दूसरों का उस दरख़्त की इबादत करना तुझे क्या नुक़्सान देता है ? तू अपने इस इरादे से बाज़ रह और वापस चला जा।" उस मुसल्मान ने कहा : "मैं हरगिज़ वापस नहीं जाऊंगा।" मुआ़-मला बढ़ा और शैतान ने कहा : "मैं तुझे दरख़्त नहीं काटने दूंगा।"

चुनान्चे दोनों में कुश्ती हो गई और उस मुसल्मान ने शैतान को पछाड़ दिया, फिर शैतान ने उसे लालच देते हुए कहा : "अगर तू उस दरख़्त को काट भी देगा तो तुझे इस से क्या फ़ाएदा हासिल होगा। मेरा मश्वरा है कि तू उस दरख़्त को न काट, अगर तू ऐसा करेगा तो रोज़ाना तुझे अपने तकिये के नीचे से दो दीनार मिला करेंगे।" वोह शख़्स कहने लगा : "कौन मेरे लिये दो दीनार रखा करेगा।" शैतान ने कहा : "मैं तुझ से वा'दा करता हूं कि रोज़ाना तुझे अपने तकिये के नीचे से दो दीनार मिला करेंगे।" वोह शख़्स शैतान की इन लालच भरी बातों में आ गया और दो दीनार की लालच में उस ने दरख़्त काटने का इरादा तर्क किया और वापस

लौट आया। फिर जब सुब्ह़ बेदार हुवा तो उस ने देखा कि तकिये के नीचे दो दीनार मौजूद थे।

फिर दूसरी सुब्ह़ जब उस ने तकिया उठाया तो वहां दीनार मौजूद न थे, उसे बड़ा ग़ुस्सा आया और कुल्हाड़ा उठा कर फिर दरख़्त काटने चला। शैत़ान फिर इन्सान की शक्ल में उस के पास आया और कहा : ''कहां का इरादा है ?'' वोह कहने लगा : ''मैं उस दरख़्त को काटने जा रहा हूं जिस की लोग इ़बादत करते हैं, मैं येह बर्दाश्त नहीं कर सक्ता कि लोग ग़ैरे ख़ुदा की इ़बादत करें, लिहाज़ा मैं उस दरख़्त को काट कर ही दम लूंगा।'' शैत़ान ने कहा : ''तू झूट बोल रहा है, अब तू कभी भी उस दरख़्त को नहीं काट सकता।'' चुनान्चे शैत़ान और उस शख़्स के दरमियान फिर से कुश्ती शुरूअ़ हो गई। इस मर्तबा शैत़ान ने उस शख़्स को बुरी त़रह़ पछाड़ दिया और उस का गला दबाने लगा, क़रीब था कि उस शख़्स की मौत वाक़ेअ़ हो जाती। उस ने शैत़ान से पूछा : ''येह तो बता कि तू है कौन ?'' शैत़ान ने कहा : ''मैं इब्लीस हूं और जब तू पहली मर्तबा दरख़्त काटने चला था तो उस वक़्त भी मैं ने ही तुझे रोका था लेकिन उस वक़्त तूने मुझे गिरा दिया था इस की वजह येह थी कि उस वक़्त तेरा ग़ुस्सा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये था लेकिन इस मर्तबा मैं तुझ पर ग़ालिब आ गया हूं क्यूं कि अब तेरा ग़ुस्सा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये नहीं बल्कि दीनारों के न मिलने की वजह से है। लिहाज़ा अब तू कभी भी मेरा मुक़ाबला नहीं कर सकता।''

(उ़यूनुल ह़िकायात, الحكاية العاشرة بعد المائة،حكاية ابليس والرجل.....الخ, س. 129)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई इन्सान बड़ी आज़माइश में पड़ जाता है क्यूं कि दीन के कामों में इख़्लास ह़ासिल होना येह निहायत ही मुश्किल अम्र है। शैत़ान इस क़दर मक्कारी के साथ इन्सान की निय्यत से खेलता है कि उसे पता तक नहीं चलता और वोह बेचारा शैत़ान के हाथों शिकस्त खा चुका होता है। नीज़ इस ह़िकायत से मा'लूम हुवा कि म-दनी काम महज़ रिज़ाए इलाही की निय्यत से करने वाले को ताईदे ईज़्दी ह़ासिल होती है जिस से मख़्लूक़ को राज़ी करने की निय्यत वाला महरूम रहता है। ह़ज़रते फ़क़ीह अबुल्लैस समर क़न्दी علیہ رحمۃ اللہ الھادی इर्शाद फ़रमाते हैं : امر بالمعروف (या'नी नेकी की दा'वत) करने वाले को चाहिये कि इस अ़मल से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा और दीन की सर बुलन्दी का क़स्द करे, अपनी कोई ज़ाती ग़रज़ पेशे नज़र न हो क्यूं कि **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला की रिज़ा और दीन की सर बुलन्दी मक़्सूद होगी तो इस अ़मल की तौफ़ीक़ और नुस्रते ख़ुदा वन्दी ह़ासिल होगी, अगर कोई नफ़्सानी ग़रज़ आगे रखी तो **अल्लाह** तआ़ला उसे रुस्वा (और नाकामो ना मुराद) कर देगा।

(तम्बीहुल ग़ाफ़िलीन, باب الامر بالمعروف والنھی عن المنکر, स. 50)

मुबल्लिग़ को बरबाद करने वाले चन्द शैत़ानी वार

शैत़ान के चन्द काम्याब तरीन वार आश्कार किये जाते हैं। जिन्हें पढ़ कर या सुन कर किसी को ना गवार भी गुज़र सकता है। बल्कि ग़ुस्सा भी आ सकता है और जब कोई ऐसी कैफ़िय्यात अपने अन्दर महसूस करे तो उसफ़ौरन ''اَعُوْذُ بِاللّٰہِ शरीफ़'' पढ़ कर **अल्लाह** से शैत़ान के शर से पनाह मांगनी चाहिये।

(1) मुबल्लिग़ के दिल में बा'ज़ अवक़ात येह बात आती है कि मैं तो बहुत अच्छा बयान करता हूं। लोग मेरी ता'रीफ़ क्यूं नहीं करते ? मेरी वाह वाह क्यूं नहीं की जाती ? (2) उस के दिल में येह ख़्वाहिश पैदा होने लगती है कि चूंकि मैं मुबल्लिग़ हूं, लोगों को चाहिये कि जब मैं उन के पास पहुंचूं तो मेरे एह़तिराम के लिये खड़े हो जाया करें। (3) मुझे अच्छी और नुमायां जगह पर बिठाएं। (4) मो'लिन साहिब (या'नी ए'लान करने वाले) मेरा नाम बमअ़ अल्क़ाब अच्छी त़रह़ पुकारें। (5) मेरे इस्तिक़्बाल के लिये ना'रे लगने चाहिएं। (6) सामिईन سُبْحٰنَ اللّٰه سُبْحٰنَ اللّٰه कह कर मेरे बयान की दाद दें। (7) मेरे गले में फूलों का हार पहनाएं। (8) मेरी आव भगत हो। (9) मुझे खाना वग़ैरा पेश किया जाए। (10) अगर शीरीनी वग़ैरा तक़्सीम की जाती है तो फ़ौरन दिल में ख़याल आता है कि मुझे आ़म लोगों से ज़ियादा मिलनी चाहिये। (11) मुझे कम अज़ कम चाय तो मिलनी ही चाहिये। (12) मेरी ख़िदमत होनी चाहिये। वग़ैरा वग़ैरा।

दुखती रग पर हाथ पड़ गया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुखती रग पर हाथ पड़ गया है लेकिन आप इन्साफ़ कीजिये क्या येह सारी ख़्वाहिशात इस लिये पैदा नहीं होतीं कि आप को "**मुबल्लिग़**" बनने का शरफ़ ह़ासिल हुवा है। सामिईन के दिल में येह ख़्वाहिशात क्यूं पैदा नहीं होतीं ? आख़िर इस कारे अ़ज़ीम के सिले और अज्र की अ़वाम से क्यूं तवक़्क़ोअ़ की जा रही है ? जब आप के इस्तिक़्बाल को कोई नहीं उठता, सुवारी पेश नहीं की जाती, ता'ज़ीम की जगह पर नहीं बिठाया जाता। चाय, पानी, खाना वग़ैरा पेश नहीं किया

जाता तो रन्जीदा क्यूं हो जाते हैं ? और इस त़रह़ के शिक्वे से आप क्या चाहते हैं ? जैसा कि बा'ज़ मुबल्लिग़ीन कह डालते हैं कि मैं क्या करूं मुझे तो लिफ़्ट ही नहीं मिली या लोगों ने पानी तक को नहीं पूछा, मुझे तो आने जाने का किराया भी पल्ले से देना पड़ा वग़ैरा वग़ैरा।

दिल का चोर पकड़ा गया

इस्लामी भाइयो ! क्या येह शिक्वा आप के दिल में छुपे हुए चोर को ज़ाहिर नहीं कर रहा कि आप ने बयान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये नहीं अपनी वाह वाह के लिये, चाय पानी के लिये और आव भगत कराने के लिये किया था। ज़रा माज़ी में झांक कर **अस्लाफ़ का किरदार** देखिये कि नेकी की दा'वत की राह में कैसी कैसी सुऊ़बतें बरदाश्त करते थे और इस के बा वुजूद किस क़दर आ़जिज़ी का मुज़ा-हरा करते थे और त़-लबे जाह (या'नी इ़ज़्ज़त की ख़्वाहिश) से किस क़दर बचते थे।

अभी मुबल्लिग़ के दिल में पैदा होने वाली जिन ख़्वाहिशात का ज़िक्र हुवा, इन से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें मह़फ़ूज़ फ़रमाए। और इख़्लास अ़त़ा फ़रमाए अलबत्ता येह चीज़ें हमारी ख़्वाहिश के बिग़ैर हमें मिल जाएं तो फिर इस में हमारा कोई क़ुसूर नहीं। म-सलन हमारे मुत़ा-लबे के बिग़ैर कोई सुवारी अपनी मरज़ी से पेश करे तो क़बूल कर सकते हैं। इसी त़रह़ ता'ज़ीम वग़ैरा के दीगर मुआ़-मलात हैं। इन मुआ़-मलात में अपने दिल को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डराते रहें कि कहीं रियाकारी न पैदा हो जाए।

सरापा आ़जिज़ी का नुमूना बन जाएं

प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी सुन्नतों को आ़म करने का जज़्बा रखने वाले दीवानो ! ह़त्तल इम्कान अपनी रफ़्तार में गुफ़्तार में और पूरे किरदार में तवाज़ोअ़ पैदा करने की कोशिश कीजिये। आप **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये आ़जिज़ी पैदा करें اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ अ़-ज़मत व सर बुलन्दी ख़ुद आप के क़दम चूमेगी। जब भी कोई आप को बयान की दा'वत पेश करे तो बिग़ैर किसी त़मअ़ के क़बूल कर लिया करें। हां अगर कोई उ़ज़्र है तो फिर दूसरी बात है। इस ख़्वाहिश को अपने दिल में हरगिज़ हरगिज़ जगह न दें कि आप की सुवारी का इन्तिज़ाम कर दिया जाए और आप को इ़ज़्ज़त के साथ ले जाया जाए बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अह़काम उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतें सीखने सिखाने के लिये ख़ुद ही पहुंच जाया करें।

जिस का अ़मल हो बे ग़रज़ उस की जज़ा कुछ और है

कोई बुलाता तो बुज़ुर्गाने दीन बिला तकल्लुफ़ बयान के लिये पहुंच जाते

बुज़ुर्गाने दीन की ख़िदमत में जब बयान वग़ैरा की दर-ख़्वास्त की जाती तो येह ह़ज़रात बिला तकल्लुफ़ तशरीफ़ ले जाया करते। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه जब रम्ला में आए तो ह़ज़रते इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उन्हें पैग़ाम भेजा कि हमारे हां आओ और हमें दर्से ह़दीस सुनाओ ह़ज़रते इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से किसी ने कहा, आप ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه जैसे मुह़द्दिस और ज़बर दस्त आ़लिम और बुज़ुर्ग

को कहते हैं कि आप के पास चल कर आएं। आप ने फ़रमाया हां मैं तुम्हें ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की शिद्दते तवाज़ोअ़ दिखलाना चाहता हूं। फिर ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه आए और उन को ह़दीसे पाक सुनाई।

(तम्बीहुल मुग़्तर्रीन, الباب الرابع،ومن اخلاقیم زیادتهم......الخ, स. 228)

ऐ हमारे प्यारे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें हर अ़मल में इख़्लास अ़ता फ़रमा और रियाकारी की मज़्मूम बीमारी से हमारी ह़िफ़ाज़त फ़रमा कर हमें हर अ़मल सिर्फ़ अपनी रिज़ा की ख़ातिर करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा और हमें अपने मुख़्लिस बन्दों में शामिल फ़रमा।

(اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم)

मेरा हर अ़मल बस तेरे वासिते़ हो कर इख़्लास ऐसा अ़ता या इलाही عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(9) कपड़ा ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के लिये पहना है

ह़ज़रते दावूद त़ाई علیه رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने एक मर्तबा कपड़ा उलटा पहन लिया तो लोगों ने कहा कि आप इस को इस की ह़ालत से बदल क्यूं नहीं देते ? इस पर उन्हों ने फ़रमाया कि मैं ने इस को ख़ुदा के लिये पहना है इस लिये मैं न बदलूंगा।

(तम्बीहुल मुग़्तर्रीन, स. 26)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(10) नेकी का बदला

एक शख़्स ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी علیه رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی के पास कोई

तोह़फ़ा लाया। आप ने उसे लेने से इन्कार करते हुए फ़रमाया कि ''मैं तुझ से येह तोह़फ़ा नहीं ले सकता, क्यूं कि हो सकता है कि कभी तूने मुझ से इ़ल्म की कोई बात सीखी हो और येह तोह़फ़ा उस नेकी का बदला बन जाए, नतीजतन मैं सवाब से महरूम हो जाऊंगा।'' उस ने अ़र्ज़ की, ''हुज़ूर! मैं ने कभी भी आप से इ़ल्मे दीन नहीं सीखा।'' आप ने फ़रमाया, ''हां याद आया तेरे भाई ने मुझ से इ़ल्मे दीन सीखा था।'' येह कह कर उसे वापस लौटा दिया।

(कीमियाए सआ़दत, فصل نشاط عبادت همیشه ریا نبود, जि. 2, स. 700)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(11) सवाब ही काफ़ी है

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन उ़मर औज़ाई علیه رَحمَةُ اللهِ القَوی ने एक रोज़ ख़लीफ़ा अबू जा'फ़र मन्सूर को उस के मुत़ा-लबे पर कुछ नसीह़तें फ़रमाईं। जब ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम औज़ाई علیه رَحمَةُ اللهِ القَوی वहां से जाने लगे तो ख़लीफ़ा मन्सूर ने तह़ाइफ़ और रक़म वग़ैरा आप की ख़िदमत में पेश करना चाही मगर आप رَحمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیه ने तह़ाइफ़ो हदाया लेने से इन्कार कर दिया और फ़रमाया : ''मुझे इन चीज़ों की ज़रूरत नहीं क्यूं कि मैं अपनी दीनी नसीह़तों को दुन्यवी ह़क़ीर माल के बदले फ़रोख़्त नहीं करना चाहता, (या'नी मुझे मेरे रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से मिलने वाला अज्र ही काफ़ी है।)''

(उ़यूनुल ह़िकायात, الحكاية العشرون،نصائح الاوزاعی للمنصور, स. 45)

मेरा हर अ़मल बस तेरे वासित़े हो
कर इख़्लास ऐसा अ़त़ा या इलाही

प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن ता'लीमो तअ़ल्लुम और तब्लीग़ व इशाअ़ते दीन के ख़ालिसन लि वज्हिललाह होने के मु-तअ़ल्लिक़ किस क़दर ह़स्सास होते थे कि सिर्फ़ इस बिना पर किसी का तोह़फ़ा लेने से इन्कार कर देते थे कि कहीं येह उस का इ़वज़ न बन जाए।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(12) गुनाहों की नुहूसत

ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अ़म्मार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار इर्शाद फ़रमाते हैं : "मेरा एक इस्लामी भाई था जो कि मेरा बहुत मो'तक़िद था। वोह हर दुख सुख में मुझ से मुलाक़ात करता। मैं उस को इन्तिहाई इ़बादत गुज़ार, तहज्जुद गुज़ार, और गिर्या व ज़ारी करने वाला समझता था। मैं ने कुछ दिनों तक उसे न पाया और मुझे बताया गया कि वोह तो बेह़द कमज़ोर हो गया है। मैं ने उस के घर के मु-तअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त कर के उस के दरवाज़े पर दस्तक दी तो उस की बेटी आई और पूछा : "किस से मिलना चाहते हैं ?" मैं ने कहा : "फ़ुलां से।" वोह मेरे आने की इजाज़त त़लब करने अन्दर गई, फिर लौट कर आई और कहने लगी : "आप अन्दर आ जाएं।" मैं ने दाख़िल हो कर देखा कि वोह घर के वस्त में बिस्तर पर लैटा हुवा है। चेहरा सियाह, आंखें नीली और होंट मोटे हो चुके हैं। मैं ने उसे डरते डरते कहा : "ऐ मेरे भाई ! "لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه" की कसरत करो।" उस ने अपनी आंखें खोलीं और बड़ी मुश्किल से मेरी त़रफ़ देखा, फिर उस पर ग़शी त़ारी हो गई। मैं ने दूसरी मर्तबा येह तल्क़ीन की तो उस ने मुझे ब मुश्किल आंखें खोल कर देखा लेकिन दोबारा उस पर ग़शी त़ारी हो गई।

जब मैं ने तीसरी मर्तबा कलिमा पढ़ने की तल्क़ीन की तो उस ने अपनी आंखें खोलीं और कहने लगा : "ऐ मेरे भाई ! ऐ मन्सूर ! इस

कलिमे के और मेरे दरमियान रुकावट खड़ी कर दी गई है।'' मैं ने कहा : ''لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ'' कहां गई वोह नमाज़ें, वोह रोज़े, तहज्जुद और रातों का क़ियाम ?'' तो उस ने मुझे ह़सरत से बताया : **''ऐ मेर भाई ! येह सब अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की रिज़ा के लिये नहीं था, बल्कि मैं येह इबादतें इस लिये किया करता था ताकि लोग मुझे नमाज़ी, रोज़ेदार, और तहज्जुद गुज़ार कहें और मैं लोगों को दिखाने के लिये ज़िक्रे इलाही** عَزَّوَجَلَّ **किया करता था।** जब मैं तन्हाई में होता तो दरवाज़ा बन्द कर लेता, बरहना हो कर शराब पीता, और ना फ़रमानियों से अपने रब عَزَّوَجَلَّ का मुक़ाबला करता। एक अ़र्से तक मैं इस त़रह़ करता रहा फिर ऐसा बीमार हुवा कि बचने की उम्मीद न रही, मैं ने अपनी इसी बेटी से कहा कि क़ुरआने पाक ले कर आओ, उस ने ऐसा ही किया, मैं मुस्ह़फ़ शरीफ़ के एक एक ह़र्फ़ को पढ़ता रहा यहां तक कि जब सूरए यासीन तक पहुंचा तो मुस्ह़फ़ शरीफ़ को बुलन्द कर के बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की : ''ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस क़ुरआने अ़ज़ीम के सदक़े मुझे शिफ़ा अ़ता फ़रमा, मैं आइन्दा गुनाह नहीं करूंगा।'' **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझ से बीमारी को दूर कर दिया। जब मैं शिफ़ायाब हुवा, तो दोबारा लह्वो लइब और लज़्ज़ातो ख़्वाहिशात में पड़ गया। शैत़ाने लईन ने मुझे वोह अ़ह्द भुला दिया जो मेरे रब عَزَّوَجَلَّ के और मेरे दरमियान हुवा था, अ़र्सए दराज़ तक गुनाह करता रहा, फिर अचानक उसी बीमारी में मुब्तला हो गया जिस में मैं ने मौत के साए देखे तो घर वालों से कहा कि मुझे मेरी आ़दत के मुत़ाबिक़ वस्त़े मकान में निकाल दें। मैं ने मुस्ह़फ़ शरीफ़ मंगवा कर पढ़ा और बुलन्द कर के अ़र्ज़ की : ''या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस की अ़-ज़मत का वासित़ा जो इस मुस्ह़फ़ शरीफ़ में है, मुझे इस

मरज़ से नजात अ़ता फ़रमा।''

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरी दुआ क़बूल फ़रमाई और दोबारा उस बीमारी से मुझे शिफ़ा अ़ता फ़रमा दी। लेकिन मैं फिर उसी त़रह़ नफ़्सानी ख़्वाहिशात और ना फ़रमानियों में पड़ गया यहां तक कि अब इस मरज़ में मुब्तला पड़ा हूं, मैं ने अपने घर वालों को हुक्म दिया कि इस दफ़्आ भी मुझे वस्ते़ मकान में निकाल दो जैसा कि आप मुझे देख रहे हैं। फिर जब मैं मुस्ह़फ़ शरीफ़ मंगवा कर पढ़ने लगा तो एक ह़र्फ़ भी न पढ़ सका। मैं समझ गया कि **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला मुझ पर सख़्त नाराज़ है, मैं ने अपना सर आस्मान की त़रफ़ उठा कर अ़र्ज़ की : ''या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस मुस्ह़फ़ शरीफ़ की अ़-ज़मत का सदक़ा ! मुझ से इस मरज़ को ज़ाइल फ़रमा दे।'' तो मैं ने हातिफ़े ग़ैबी की आवाज़ सुनी मगर उसे देख न सका। येह आवाज़ अश्आ़र की सूरत में थी, जिन का मफ़्हूम येह है :

''जब तू बीमारी में मुब्तला होता है तो अपने गुनाहों से तौबा कर लेता है और जब तन्दुरुस्त होता है तो फिर गुनाह करने लग जाता है। तू जब तक तक्लीफ़ में मुब्तला रहता है तो रोता रहता है और जब क़ुव्वत ह़ासिल कर लेता है तो बुरे काम करने लगता है। कितनी ही मुसीबतों और आज़्माइशों में तू मुब्तला हुवा मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुझे उन सब से नजात अ़ता फ़रमाई। उस के मन्अ़ करने और रोकने के बा वुजूद तू गुनाहों में मुस्तग़रक़ रहा और अ़र्सए दराज़ तक उस से ग़ाफ़िल रहा। क्या तुझे मौत का ख़ौफ़ न था ? तू अ़क़्ल और समझ रखने के बा वुजूद गुनाहों पर डटा रहा। और तुझ पर जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़्लो करम था, तूने उसे भुला दिया और कभी भी तुझ पर न कपकपी त़ारी हुई, न ही ख़ौफ़ लाह़िक़ हुवा। कितनी मर्तबा तूने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ अ़ह्द किया लेकिन फिर

तोड़ दिया, बल्कि हर भली और अच्छी बात को तू भूल चुका है। इस जहाने फ़ानी से मुन्तक़िल होने से पहले पहले जान ले कि तुम्हारा ठिकाना क़ब्र है, जो हर लम्हा तुझे मौत की आमद की ख़बर सुना रही है।''

ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अ़म्मार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं उस से इस ह़ाल में जुदा हुवा कि मेरी आंखों से आंसू बह रहे थे और अभी घर के दरवाज़े तक भी न पहुंचा था कि मुझे बताया गया कि वोह शख़्स इन्तिक़ाल कर चुका है। हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से हुस्ने ख़ातिमा की दुआ करते हैं क्यूं कि बहुत से रोज़ेदार और रातों को क़ियाम करने वाले बुरे ख़ातिमे से दो चार हो गए।''

(रौज़ुल फ़ाइक़, अल मज्लिसुस्सानी, स. 17)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(13) अच्छी निय्यत का फल और बुरी निय्यत का वबाल

मन्क़ूल है कि दो भाई थे, उन में से एक आ़बिद और दूसरा फ़ासिक़ था। आ़बिद की आरज़ू थी कि वोह शैत़ान को अपनी मेह़राब में देखे, एक दिन उस के पास इन्सानी शक्ल में इब्लीस आया और कहने लगा : ''अफ़्सोस है तुझ पर ! तूने अपनी उ़म्र के चालीस साल नफ़्स को क़ैद और बदन को मशक़्क़त में डाल कर ज़ाएअ़ कर दिये। तुम्हारी जितनी उ़म्र गुज़र चुकी इतनी अभी बाक़ी है, अपने नफ़्स की ख़्वाहिशात पूरी कर के लज़्ज़त ह़ासिल कर ले, इस के बा'द दोबारा तौबा कर लेना और वापस इ़बादत की त़रफ़ लौट आना, बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बख़्शने वाला, मेहरबान है।'' येह सुन कर आ़बिद ने अपने दिल में कहा : ''मैं नीचे जा कर अपने

भाई के पास बीस साल लज़्ज़ात ह़ासिल करूंगा और ख़्वाहिशात पूरी करूंगा फिर तौबा कर लूंगा और अपनी उ़म्र के बक़िय्या बीस साल इ़बादत में सर्फ़ कर दूंगा।'' अब येह नीचे उतरने लगा। उधर उस के गुनहगार भाई ने अपने नफ़्स से कहा : ''तूने अपनी उ़म्र को ना फ़रमानी में ज़ाएअ़ कर दिया और तेरा भाई जन्नत में जब कि तू जहन्नम में जाएगा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ज़रूर तौबा करूंगा और अपने भाई के साथ ऊपर वाले कमरे में जा कर अपनी बक़िय्या उ़म्र इ़बादत में गुज़ारूंगा, शायद ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे बख़्श दे।'' इधर वोह **तौबा की निय्यत** ले कर ऊपर चढ़ने लगा और उस का आ़बिद भाई **ना फ़रमानी की निय्यत** ले कर उतरने लगा कि अचानक उस का पाउं फिसला और वोह अपने भाई पर गिर पड़ा और दोनों सीढ़ियों पर इकठ्ठे मर गए। अब आ़बिद का ह़श्र ना फ़रमानी की निय्यत पर होगा और गुनहगार का ह़श्र तौबा की निय्यत पर होगा।''

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! दिन रात होने वाले वाक़िआ़त से इ़ब्रत पकड़ने के लिये अपने दिलों को फ़ारिग़ कर लीजिये, कितने ही लोग जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दूर थे, क़रीब हो गए और बहुत से क़ुर्ब वाले दूर कर दिये गए। उन के घर वालों और पड़ोसियों ने उन से जफ़ा की। क़ुर्ब ह़ासिल करने वालों के लिये जन्नत और दूरी इख़्तियार करने वालों के लिये दोज़ख़ है तो ऐ अ़क़्ल वालो ! इ़ब्रत ह़ासिल करो। बिलाशुबा जब आ़बिद ठोकर खा कर फिसला तो अपनी निय्यत तब्दील करने और इ़बादत के बा'द ह़द से बढ़ने और गुनाह करने पर रोया, वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मह़ब्बत तो करता था लेकिन अगर उस की मह़ब्बत ख़ालिस होती तो वोह ज़रूर वफ़ा की त़रफ़ लौटता और अ़न्क़रीब जान लेगा कि उस ने गिरने वाले किनारे पर बुन्याद रखी। पस ऐ अ़क़्ल वालो ! नसीह़त ह़ासिल करो।

(रौज़ुल फ़ाइक़, स. 16)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(14) गुफ़्त-गू का जाएज़ा

''**मिन्हाजुल आ़बिदीन**'' में है, एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ और ह़ज़रते सय्यिदुना **सुफ़्यान सौरी** رَحِمَهُمَا اللّٰه की आपस में मुलाक़ात हुई। देर तक गुफ़्त-गू करने के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْبَارِى ने फ़रमाया : ''मैं आज की इस सोह़बत को बेहतरीन सोह़बत तसव्वुर करता हूं।'' ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ علیہ رحمۃ الرزّاق ने फ़रमाया : ''मैं तो इसे ख़त़रनाक सोह़बत ख़याल करता हूं।'' ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْبَارِى ने पूछा क्यूं ? ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ علیہ رحمۃ الرزّاق ने जवाब दिया : ''क्या हम दोनों अपनी गुफ़्त-गू को मुज़य्यन और आरास्ता नहीं कर रहे थे ? क्या हम तकल्लुफ़ और रिया में मुब्तला नहीं थे ?'' ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْبَارِى येह सुन कर रो पड़े।

(मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 53, मुअस्सि-सतुस्सीरवान बैरूत)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मक़ामे ग़ौर है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इन नेक बन्दों की मुलाक़ात मुख़्लिसाना और इन की बात चीत ख़ालिस इस्लामी थी मगर ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के सबब रो रहे थे कि कहीं हमारी गुफ़्त-गू में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी तो नहीं हो गई।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(15) मेरा क़र्ज़ किस ने अदा किया ?

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه रूमियों के मुक़ाबले में जिहाद के लिये त़-रसूस जाते हुए शहर रक़्क़ह के

एक मुसाफ़िर ख़ाने में क़ियाम फ़रमाते तो एक नौ जवान आता, आप की ज़रूरिय्यात पूरी करता और कुछ अहादीस पढ़ लेता था। एक मर्तबा जब आप वहां पहुंचे तो वोह नौ जवान मिलने नहीं आया। आप जल्दी में थे तो लश्कर के साथ चले गए जब जंग से फ़ारिग़ हो कर वापस रक़्क़ह पहुंचे तो लोगों से उस का हाल दरयाफ़्त किया तो मा'लूम हुवा कि किसी का उस पर क़र्ज़ चढ़ गया था, क़र्ज़ ख़्वाह ने नौ जवान को जेल में डलवा दिया है। पूछा : उस पर कितना क़र्ज़ है ? लोगों ने जवाब दिया : "दस हज़ार दिरहम।" आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने रात में क़र्ज़ ख़्वाह को अपने पास बुलवाया और उसे दस हज़ार दिरहम दे कर क़सम दी कि जब तक अ़ब्दुल्लाह ज़िन्दा है तुम इस के बारे में किसी को नहीं बताओगे और कहा कि सुब्ह़ तुम उस नौ जवान को क़ैद से आज़ाद करवा देना। आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ इस के बा'द वहां से रवाना हो गए। नौ जवान जेल से आज़ाद हो कर जब शहर आया तो आप की आमद की इत्तिलाअ़ मिली और मा'लूम हुवा कि कल यहां से रवाना हो गए हैं। येह नौ जवान उसी वक़्त रवाना हुवा और चन्द मन्ज़िल बा'द मुलाक़ात हो गई। फ़रमाया : कहां थे ? मैं ने तुम्हें मुसाफ़िर ख़ाने में नहीं देखा ? अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! क़र्ज़ के सबब क़ैदख़ाने में था।" फ़रमाया : फिर तुम्हें आज़ादी कैसे मिली ? अ़र्ज़ की : मुझे मा'लूम नहीं किस ने मेरा क़र्ज़ अदा कर दिया जिस की वजह से मुझे रिहाई मिल गई। फ़रमाया : ऐ नौ जवान ! ख़ुदा का शुक्र अदा करो, **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त ने किसी को तेरा क़र्ज़ अदा करने की तौफ़ीक़ दे दी होगी। उस नौ जवान को **इस हुस्ने सुलूक का पता उस वक़्त चला जब आप का विसाल हो चुका था।**

(तारीख़े बग़दाद, जि. 10, स. 158)

(16) मेरा नाम ज़ाहिर न फ़रमाएं

हज़रते सय्यिदुना अबू इस्माईल बिन नुजैद नैशापूरी عليه رَحمَةُ اللهِ القَوى ''**इल्मे ह़दीस**'' में ''**मुह़द्दिसे कबीर**'' और ''**तसव्वुफ़**'' व ''**इबादात**'' व ''**मुआ़-मलात**'' में अपने ज़माने के ''**शैख़े अक्बर**'', ''**ज़ोह्दो तक़्वा**'' में ''**यक्ताए ज़माना**'' और अपने दौर के ''**वलिय्ये कामिल**'' थे। चुनान्चे आप رَحمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيه के अह़वाल व करामात को देख कर आ़म तौ़र पर लोग कहा करते थे कि येह अपने वक़्त के ''**अब्दाल**'' हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने नुजैद رَحمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيه के वालिद बहुत मालदार शख़्स थे। मीरास में आप رَحمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيه को बे शुमार माल मिला। मगर दौलते इल्मो अ़मल के इस धनी ने दिरहमो दीनार की सारी दौलत को उ़-लमा व मशाइख़ व त़-लबा पर निसार कर दिया और चन्द ही दिनों में मीरास का सारा माल खु़दा عَزَّوَجَلَّ की राह में ख़र्च कर डाला। एक मर्तबा उन के शैख़ अबू उ़स्मान ह़ीरी عَلَيهِ رَحمَةُ القَوِى को मुजाहिदीन की ज़रूरत के लिये कुछ रक़म की ज़रूरत आन पड़ी। कहीं से कुछ इन्तिज़ाम न हो सका तो शैख़ ने सय्यिदुना इब्ने नुजैद رَحمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيه से इस ज़रूरत को बयान फ़रमाया। आप رَحمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيه ने फ़ौरन दो हज़ार दिरहमों की थेलियां ला कर शैख़ के क़दमों पर डाल दीं। शैख़ बेह़द खु़श हुए और भरी मजलिस में इस का ए'लान फ़रमा दिया और लोगों ने ख़ूब वाह वाह की। मगर इब्ने नुजैद رَحمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيه को इन्तिहाई सदमा हुवा कि अफ़्सोस ! मेरा येह अ़-मले ख़ैर लोगों पर ज़ाहिर हो गया। बे ताबाना मजलिस से उठे और थोड़ी देर में फिर वापस आए और भरी मजलिस में शैख़ से अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर ! मुझे मेरा माल वापस कर दीजिये मैं अभी इस को खु़दा عَزَّوَجَلَّ की राह में ख़र्च करना नहीं चाहता। शैख़ ने फ़ौरन दिरहमों की थेलियां इब्ने नुजैद رَحمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيه

के सामने डाल दीं और सय्यिदुना इब्ने नुजैद थेलियां उठा कर घर लाए। फिर ह़ाज़िरीने मजलिस में ख़ूब चे मी गोइयां हुईं। मगर जब रात हुई और शैख़ अकेले रह गए तो ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने नुजैद رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फिर दो हज़ार दिरहमों की थेलियां ले कर शैख़ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया कि मेरे शैख़ ! **आप इस माल को पोशीदा त़ौर पर ख़र्च फ़रमाएं और मेरा नाम हरगिज़ किसी पर ज़ाहिर न फ़रमाएं।** येह सुन कर शैख़ अबू उ़स्मान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الرَّحۡمٰن पर ह़ालते गिर्या त़ारी हो गई और फ़रमाने लगे कि इब्ने नुजैद رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ! तेरी हिम्मत पर सद आफ़रीन है ! (बुस्तानुल मुह़द्दिसीन, जुज़ : इब्ने नुजैद, अ़ल्लामा इब्ने नुजैद की ख़िदमात...., स. 252)

(17) बा'दे विसाल सख़ावत का पता चला

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने अपनी ज़िन्दगी में दो मर्तबा अपना सारा माल राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़ैरात किया और आप की सख़ावत का येह आ़लम था कि आप बहुत से ग़ु-रबाए अहले मदीना के घरों में ऐसे **पोशीदा** त़रीक़ों से रक़म भेजा करते थे कि उन ग़ु-रबा को ख़बर ही नहीं होती थी कि **येह कहां से आता है ?** मगर जब आप का विसाल हो गया तो उन ग़रीबों को पता चला कि येह ह़ज़रते इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की सख़ावत थी।

(सियरे आ'लामुन्नबुला, जि. 5, स. 336,337, दारुल फ़िक्र बैरूत)

(18) मैं किस के लिये दिखावा करूंगा ?

जलीलुल क़द्र मुह़द्दिस ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अ़ब्दुर्रह़मान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الرَّحۡمٰن एक मर्तबा किसी से मिलने गए। दरमियाने गुफ़्त-गू में उस ने आप से कह दिया : मेरा ख़याल है कि आप के आ'माल में कुछ **रियाकारी** और **दिखावे** की बू आती है। तो आप ने फ़ौरन ज़मीन से एक

तिन्का उठाया और फ़रमाया कि मैं किस को **दिखाने** के लिये आ'माल करूंगा ? ख़ुदा की क़सम ! तमाम रूए ज़मीन के **दुन्यादार** इन्सान मेरी नज़र में इस तिन्के से भी ज़ियादा ज़लील हैं।

(सियरे आ'लामुन्नुबुला, जि. 7, स. 110, दारुल फ़िक्र बैरूत)

(19) यहां ता'वीज़ नहीं बिकता

जनाब सय्यिद अय्यूब अ़ली साहि़ब का बयान है कि एक साहि़ब ने बदायूनी पेड़ों की एक कोरी (या'नी बिल्कुल नई) हांडी पेश की। हुज़ूर (या'नी आ'ला ह़ज़रत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ने फ़रमाया "कैसे तक्लीफ़ फ़रमाई ?" उन्हों ने कहा कि "हुज़ूर को सलाम करने ह़ाज़िर हुवा हूं।" हुज़ूर जवाबे सलाम फ़रमा कर कुछ देर ख़ामोश रहे और फिर दरयाफ़्त किया : "क्या कोई काम है ?" उन्हों ने अ़र्ज़ किया "कुछ नहीं हुज़ूर ! महूज़ मिज़ाज पुरसी के लिये आया था।" इर्शाद फ़रमाया, "इनायत, नवाज़िश" और क़दरे सुकूत के बा'द हुज़ूर ने फिर ब ई अल्फ़ाज़ मुख़ातब फ़रमाया : "कुछ फ़रमाइयेगा ?" उन्हों ने फिर नफ़ी में जवाब दिया। इस के बा'द हुज़ूर ने वोह शीरीनी मकान में भिजवा दी।

अब वोह साहि़ब थोड़ी देर के बा'द एक ता'वीज़ की दर-ख़्वास्त करते हैं, इर्शाद फ़रमाया कि "मैं ने तो आप से तीन बार दरयाफ़्त किया, मगर आप ने कुछ न बताया, अच्छा तशरीफ़ रखिये।" और अपने भान्जे अ़ली अह़मद ख़ां साहि़ब मर्ह़ूम के पास से ता'वीज़ मंगा कर (कि येह काम उन्हीं के मु-तअ़ल्लिक़ था) उन साहि़ब को अ़ता फ़रमाया और साथ ही ह़ाजी किफ़ायतुल्लाह साहि़ब ने हुज़ूर का इशारा पाते ही मकान से वोह मिठाई की हांडी मंगवा कर सामने रख दी, जिसे हुज़ूर ने ब ई अल्फ़ाज़ वापस फ़रमाया "इस हांडी को साथ लेते जाइये मेरे यहां ता'वीज़ बिकता नहीं है।" उन्हों ने बहुत कुछ मा'ज़िरत की, मगर

क़बूल न फ़रमाया। बिल आख़िर वोह बेचारे अपनी शीरीनी वापस लेते गए। (ह़यातेआ'ला ह़ज़रत, जि. 1, स. 171)

سُبْحٰنَ اللّٰہ ! आ'ला ह़ज़रत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की शाने तक़्वा पर क़ुरबान ! अगर्चे वोह नज़राना दर ह़क़ीक़त ता'वीज़ की उजरत न था और होता भी तो इस की उजरत जाइज़ है मगर आप के ख़ुलूस ने एक अम्रे दीनी से ज़ाती नफ़्अ़ का ह़ुसूल गवारा न किया और आप ने वोह नज़राना वापस लौटा दिया।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(20) मैं इल्म नहीं बेचता

जनाब सय्यिद अय्यूब अ़ली साहिब का बयान है कि एक मर्तबा ह़ुज़ूर ने जहांगीर ख़ान साहिब क़ादिरी र-ज़वी साकिन मह़ल्ला छेपीटोला क़ल्आ़ से फ़रमाया कि "मुझे एक पीपा मड़ी के तेल की ज़रूरत है।" क्यूं कि वोह तेल फ़रोख़्त किया करते थे। चुनान्चे वोह एक पीपा तेल ले कर ह़ाज़िर हुए। ह़ुज़ूर ने क़ीमत दरयाफ़्त फ़रमाई, उन्हों ने जो क़ीमत थी उस का इज़्हार ब ई अल्फ़ाज़ फ़रमाया "वैसे तो इस की क़ीमत येह है मगर ह़ुज़ूर कुछ कम कर के इतनी दे दें।" इस पर ह़ुज़ूर ने फ़रमाया "मुझ से वोही क़ीमत लीजिये जो सब से लेते हैं।" उन्हों ने अ़र्ज़ किया "नहीं ! ह़ुज़ूर आप मेरे बुज़ुर्ग हैं, आ़लिम हैं, आप से आ़म बिकरी (या'नी क़ीमत) के दाम कैसे ले सकता हूं ?" ह़ुज़ूर ने फ़रमाया "मैं इल्म नहीं बेचता हूं।" और वोही आ़म बिकरी के दाम ख़ान साहिब को दिये।

(ह़यातेआ'ला ह़ज़रत, मौज़ूअ़ : ख़ुद्दारी, जि. 1, स. 172)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(21) अ़क़ीदत नहीं बेच सकता

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه दा'वते इस्लामी के अवाइल में जहां सुन्नतों भरा बयान फ़रमाने तशरीफ़ ले जाते तो कोई इस्लामी भाई इत्रियात वग़ैरा का बस्ता लगा लेते जो **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मिल्किय्यत में था मगर हर एक को मा'लूम न था। इमामे मस्जिद को किसी त़रह़ येह मा'लूम हो गया येह कस्बे ह़लाल की कोशिश करते हैं किसी से मांग कर घर नहीं चलाते। जज़्बात में आ कर माईक पर ए'लान कर दिया कि जो बाहर इत्रियात वग़ैरा का बस्ता है वोह **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मिल्किय्यत है। आप कस्बे ह़लाल के लिये कोशिश फ़रमाते हैं किसी से सुवाल नहीं करते। आप के मिज़ाजे मुबारक पर येह बात इन्तिहाई गिरां गुज़री कि येह लोगों को क्यूं मा'लूम हुवा, अब लोग शायद मेरी अ़क़ीदत में सामान ख़रीदें। आप ने बस्ते पर होने वाली उस दिन की आ-मदनी ख़ुद अपने इस्ति'माल में न लाए बल्कि राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में दे दी और फ़रमाया कि **"मैं अपनी अ़क़ीदत नहीं बेच सकता।"**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दुआ़

या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का वासित़ा हमारी ख़ाली झोलियों को दौलते इख़्लास से भर दे।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

मआख़ज़ो मराजेअ़

(1) क़ुरआने मजीद	कलामे बारी तआ़ला	ज़ियाउल क़ुरआन पब्लीकेशन्ज़ लाहोर
(2) कन्ज़ुल ईमान फ़ी तर-ज-मतिल क़ुरआन	इमाम अहमद रज़ा ख़ान मु-तवफ़्फ़ा 1340 हि.	ज़ियाउल क़ुरआन पब्लीकेशन्ज़ लाहोर
(3) रूहुल बयान	अ़ल्लामा इस्माईल हक़्क़ी मु-तवफ़्फ़ा 1137 हि.	कोइटा
(4) ख़ज़ाइनुल इरफ़ान	मुफ़्ती मुहम्मद नईमुद्दीन मुराद आबादी	ज़ियाउल क़ुरआन पब्लीकेशन्ज़ लाहोर
(5) नूरुल इरफ़ान	मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी	नईमी कुतुब ख़ाना गुजरात
(6) सहीहुल बुख़ारी	इमाम मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी मु-तवफ़्फ़ा 256 हि.	दारुल कुतुबुल इल्मिय्या बैरूत
(7) सहीहुल मुस्लिम	इमाम मुस्लिम बिन हज्जाज नैशापूरी मु-तवफ़्फ़ा 261 हि.	दारो इब्ने हज़्म बैरूत
(8) जामिउ़त्तिरमिज़ी	इमाम मुहम्मद ईसा अत्तिरमिज़ी मु-तवफ़्फ़ा 279 हि.	दारुल फ़िक्र बैरूत
(9) सु-ननेे अबी दावूद	इमाम अबू दावूद सुलैमान इब्ने अश्अ़स मु-तवफ़्फ़ा 275 हि.	दारो एहयाइत्तुरासिल अ़-रबी
(10) सु-ननेे इब्ने माजह	इमाम मुहम्मद बिन यज़ीद अल क़ज़्वेनी इब्ने माजह मु-तवफ़्फ़ा 273 हि.	दारुल फ़िक्र बैरूत
(11) सु-ननुद्दारो क़ुत्नी	इमाम अ़ली बिन उ़मर दारे क़ुत्नी मु-तवफ़्फ़ा 358 हि.	मक्तबए नश्रुस्सुन्नह पाकिस्तान
(12) अल मो'जमुल कबीर	हाफ़िज़ सुलैमान बिन अहमद त़-बरानी मु-तवफ़्फ़ा 360 हि.	दारो एहयाइत्तुरासिल अ़-रबी
(13) अल मो'जमुल औसत़	हाफ़िज़ सुलैमान बिन अहमद त़-बरानी मु-तवफ़्फ़ा 360 हि.	दारो एहयाइत्तुरासिल अ़-रबी
(14) अल जामिउ़स्सग़ीर	इमाम जलालुद्दीन अस्सुयूत़ी मु-तवफ़्फ़ा 911 हि.	दारुल कुतुबुल इल्मिय्या बैरूत
(15) शु-अबुल ईमान	इमाम अहमद बिन अल हुसैन बैहक़ी मु-तवफ़्फ़ा 458 हि.	दारुल कुतुबुल इल्मिय्या बैरूत
(16) मिश्कातुल मसाबीह	शैख़ मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह ख़त़ीब अत्तबरेज़ी मु-तवफ़्फ़ा 741 हि.	दारुल कुतुबुल इल्मिय्या बैरूत
(17) कन्ज़ुल उ़म्माल	अ़लाउद्दीन अ़ली मुत्तक़ी अल हिन्दी मु-तवफ़्फ़ा 975 हि.	दारुल कुतुबुल इल्मिय्या बैरूत
(18) फ़िरदौसुल अख़्बार	हाफ़िज़ शैरूया बिन शहरदार दैलमी मु-तवफ़्फ़ा 509 हि.	दारुल फ़िक्र बैरूत
(19) अल मुस्नद लिल इमाम अह़मद बिन ह़म्बल	इमाम अहमद बिन हम्बल मु-तवफ़्फ़ा 241 हि.	दारुल फ़िक्र बैरूत
(20) मुस्नदे अबी या'ला अल मूसिली	अबू या'ला अहमद मूसिली मु-तवफ़्फ़ा 307 हि.	दारुल कुतुबुल इल्मिय्या बैरूत
(21) अल मुस्तदरक अ़लस्सह़ीह़ैन	इमाम मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह अल हाकिम मु-तवफ़्फ़ा 405 हि.	दारुल मा'रिफ़ह बैरूत
(22) मज्मउ़ज़्ज़वाइद	हाफ़िज़ नूरुद्दीन अ़ली बिन अबू बक्र अल हैसमी मु-तवफ़्फ़ा 807 हि.	दारुल फ़िक्र बैरूत
(23) अत्तरग़ीब वत्तरहीब	इमाम ज़कियुद्दीन अ़ब्दुल अ़ज़ीम अल मुन्ज़री मु-तवफ़्फ़ा 656 हि.	दारुल फ़िक्र बैरूत
(24) जामिउ़ल अहादीस	इमाम जलालुद्दीन अस्सुयूत़ी मु-तवफ़्फ़ा 911 हि.	दारुल फ़िक्र बैरूत
(25) फ़ैज़ुल क़दीर	अ़ल्लामा मुहम्मद अ़ब्दुर्रऊफ़ अल मुनादी मु-तवफ़्फ़ा 1031 हि.	दारुल कुतुबुल इल्मिय्या बैरूत
(26) शर्हुस्सुन्नह	मुहम्मद बिन हुसैन बिन मस्ऊ़द बग़वी मु-तवफ़्फ़ा 516 हि.	दारुल कुतुबुल इल्मिय्या बैरूत
(27) नुज़्हतुल क़ारी	मुफ़्ती मुहम्मद शरीफ़ुल हक़ अमजदी	फरीद बुक स्टोल, लाहोर
(28) अशिअ-अ़तुल-लम्आ़त	शैख़ अ़ब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी	कोएटा
(29) मिरआतुल मनाजीह़	हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी	ज़ियाउल क़ुरआन पब्लीकेशन्ज़ लाहोर
(30) दुर्रे मुख़्तार	अ़ल्लामा अ़लाउद्दीन हस्कफ़ी मु-तवफ़्फ़ा 1088 हि.	दारुल मा'रिफ़ह बैरूत